मानस भवन में आओ उतारें आरती ।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि हो नागरी ॥

रेशम भारती

दिसंबर 2021

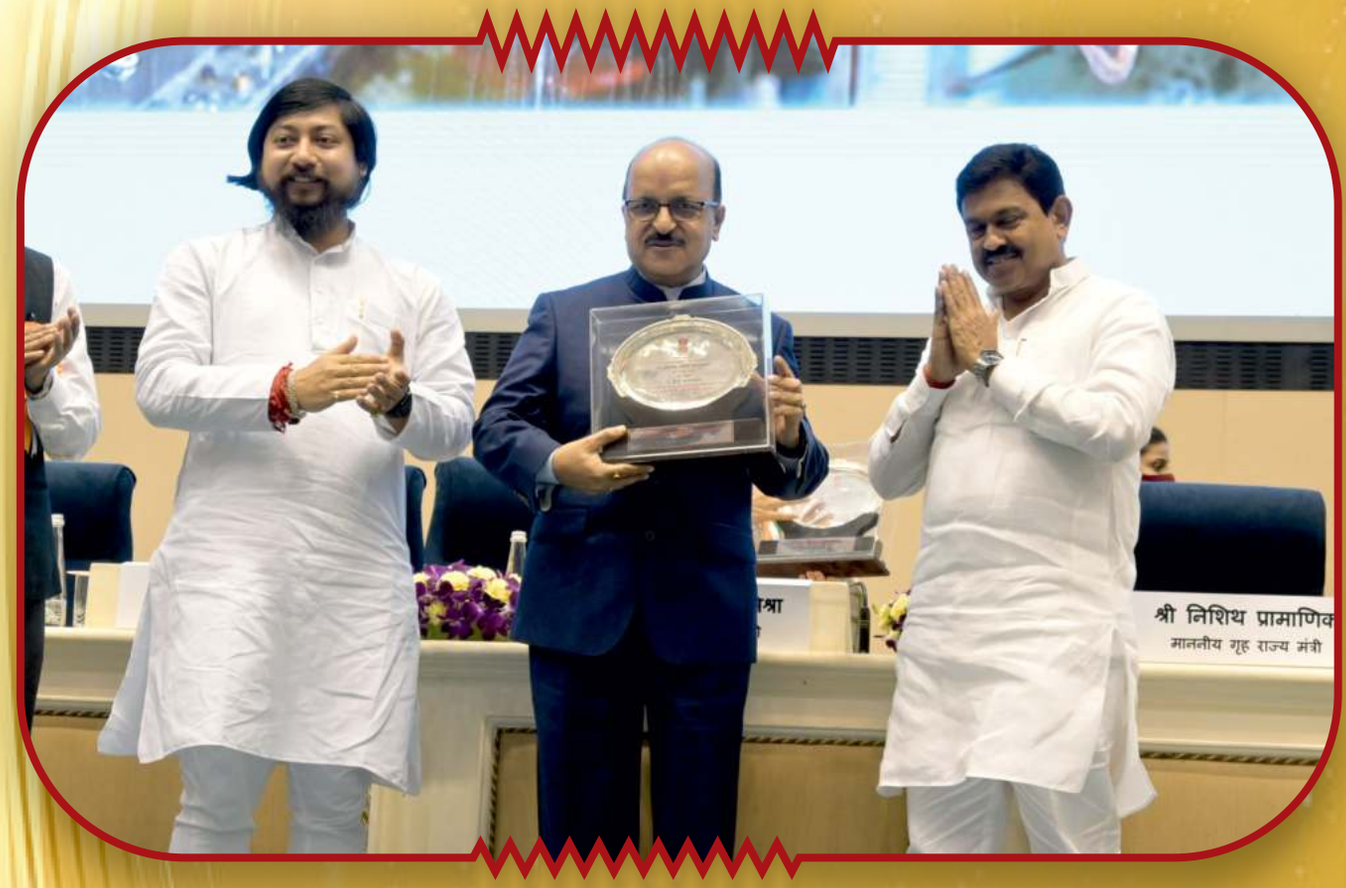

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह-पत्रिका

हिन्दी पखवाड़ा

.दीप प्रज्ज्वलित करते हुए केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव
श्री राजित रंजन ओखंडियार

.श्री आर डी शुक्ल, उप निदेशक (राभा) द्वारा स्वागत भाषण

सभागार में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए
सदस्य सचिव महोदय ।

समारोह में उदगार व्यक्त करते हुए श्री हर्लापुर, वैज्ञानिक-डी

पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती जसिन्ता सिन्हा, सहायक निदेशक

पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री शिवा कनकला, सहायक पुस्कालय व सूचना
अधिकारी

कार्यक्रम का आनंद लेते हुए अधिकारी/कर्मचारी

केरेबो राजभाषा शील्ड समारोह

केरेबो राजभाषा शील्ड डॉ. नरेन्द्र रेबेल्ली, निदेशक (वित्त) से प्राप्त करते हुए डॉ. शशिन्द्रन नायर, वैज्ञानिक-डी, रारेबीसं, बेंगलूरु

श्री दशरथी बेहरा, सहायक सचिव (तक) , क्षेका, नई दिल्ली हिन्दी कर्मचारी वाले कार्यालय में राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए

बुबीप्रवप्रके, बालाघाट के डॉ. बावस्कर दत्ता मदन, वैज्ञानिक-सी हिन्दी कर्मचारी रहित कार्यालयों में (क व ख क्षेत्र) केरेबो राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए

मूरेबीसं, गुवाहाटी के श्री प्रभात बरपुजारी और श्री बाषा राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए

डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़, वैज्ञानिक डी, बुबीप्रवप्रके, बिलासपुर के अधिकारी राजभाषा प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

डॉ. एन के भाटिया, वैज्ञानिक-डी, रेबीउके, देहरादून हिन्दी पद रहित कार्यालयों में (क व ख क्षेत्र) केरेबो राजभाषा प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

बुबीप्रवप्रके, सुंदरगढ़ के डॉ. एन.बी. चौधरी, वैज्ञानिक-डी राजभाषा प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

अनुभागों में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त कर रहे हैं श्री जूलियन तोबायस, संयुक्त निदेशक (प्रशा.), स्थापना-II व III

अनुभागों में द्वितीय स्थान पर रहे प्रचार अनुभाग के श्री आर के सिन्हा, उप निदेशक (प्रचार) प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

स्थापना-II व III अनुभाग के श्री अभिनव श्रीवास्तव प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

केन्द्रीय रेशम बोर्ड राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु को राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसाइटी आदि की श्रेणी में वर्ष 2019-20 की अवधि के लिए 'ग' क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार तथा वर्ष 2020-21 की अवधि के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । यह राजभाषा कीर्ति पुरस्कार वितरण समारोह 14 सितंबर 2021 को हिन्दी दिवस के अवसर पर प्लीनरी हॉल, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र के करकमलों से केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव, श्री राजित रंजन ओखंडियार द्वारा ग्रहण किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने की ।

संरक्षक
राजित रंजन ओखंडियार

संपादक
विजय कुमार

संपादन सहायता
मीना एस.कामत

प्रबंधन
जनार्दन तिवारी
सुलेखा कुमारी

मुख पृष्ठ
रविन्द्र एस.बडिगेर

पत्र व्यवहार
संपादक
रेशम भारती
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
प्रथम तल, केरेबो काम्प्लेक्स
मडिवाला, बी टी एम लेआउट
बेंगलूरु-560068

मुद्रक
सर्वश्री शरद इंटरप्राइजेज,
51, कार स्ट्रीट, हलासुरु,
बेंगलूरु- 560 008
फ़ोन: 080 25556015,
98459 44311

रेशम भारती

खंड 32 **अंक 64-65** **दिसंबर 2021**

इस अंक में	1
सदस्य सचिव की कलम से	2
संपादकीय	3
हाइड्रोपोनिक्स: मिट्टी रहित खेती की एक उन्नत तकनीक	4
केन्द्रीय रेशम बोर्ड में हिन्दी भाषण प्रतियोगिता आयोजित	8
वैज्ञानिक तरीके से रेशम की खेती का किसानों पर प्रभाव –एक अध्ययन	9
मेरा कार्यालय	12
पेड़	12
कवि रणधीरचन्द्र गोस्वामी की कृतियों पर एक नजर	13
कहाँ बदलावा ले आया	15
कैसे अपने को समझाउँ	15
कब पायेगा मानव मृत्यु पर विजय?	16
आपकी कल्पना में आने वाले 10 वर्षों में भारत कैसे बदलेगा	19
रेशम शब्दावली (परिवर्धित) (अंग्रेजी-हिन्दी) का विमोचन	20
"परिवर्तन ही संसार का नियम है ।	21
भारत का भविष्य	22
राजभाषा की स्वीकार्यता - हिन्दी की प्रतिष्ठा को व्यावहारिक रूप देना बाकी	23
कोविड-19 महामारी से मिली सीख"	24
कोरोना के दुष्प्रभाव	24
मैं	25
बालकनी वाली आजादी	25
वात्सल्य की उपादेयता	26
केन्द्रीय रेशम बोर्ड राजभाषा शील्ड वितरण समारोह	28
गांधी की प्रासंगिकता	29
पता ही नहीं चला	30
हृदय की विशालता	31
बचपन की यादें	32
कुत्ते से सावधान	33
हिन्दी पखवाड़ा	35
हिन्दी कार्यशाला	42
"आजादी का अमृत महोत्सव - साहित्य, संस्कृति, संसद एवं मीडिया"	49
चुटकुले	50
तेरी रूह से गुजरते हुए : सूफियाना इश्क की कविताएँ	51
आपके पत्र	52

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से केंद्रीय रेशम बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है । बिक्री के लिए नहीं, केवल आंतरिक परिचालन के लिए ।

सदस्य सचिव की कलम से

प्रकृति मानव कल्याण की सहचरी होती है । प्रकृति की ही देन है कि कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग निरंतर विकास की दिशा में अग्रसर होते रहते हैं । ऋतुओं की स्वाभाविक व्यवस्था से पादव एवं प्राणी जगत की पूरी श्रृंखला प्रभावित होती है । हमारे देश के कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जो पूरी तरह फसलों के लिए वर्षाश्रित हैं । ऐसे परिदृश्य में मानव का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपनी कार्यनीति एवं विवेक के ऐसी उपाय करें कि पूरे समाज की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ हो सके । रेशम उत्पादन के क्षेत्र में प्रकृति जन्य परिस्थितियों की अहम भूमिका होती है । केन्द्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिकों को इन परिस्थितियों के मध्य ऐसी प्रजातियों का विकास करना चाहिए जो उत्तरजीविता की दृष्टि से सशक्त हो तथा विषम परिस्थितियों से जूझने में सक्षम हो । क्षेत्र एवं मौसम विशेष (रीजन एवं सीजन स्पेसिफिक) की अवधारणा को कार्यरूप में परिणित करने की नितांत आवश्यकता है । इस दिशा में यद्यपि सफलता तो मिली है किंतु ठोस प्रयास से और भी उपलब्धि हासिल की जा सकती है । भारत की भौगोलिक व्यवस्था में रेशम की सभी किस्मों के उत्पादन को काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है । शहतूत उत्पादन के साथ-ही-साथ हमें तसर, एरी एवं मूगा का और प्रयास करते हुए इसे वृद्धिपर के आयाम देना होगा । केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सभी सहकर्मियों से हम भी अपेक्षा करते है कि रेशम के समग्र विकास के प्रति वे समर्पित भावना से कार्य करें तथा इसके चतुर्दिक प्रसार के प्रति अपना ध्यान केन्द्रित करें ।

हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली एवं समझी जाती है । भारतीय उद्योग में खास तौर से ग्रामीण उद्योग का विकास भारतीय भाषाओं के उपयोग से ही संभव हो सकता है की सर्वमान्य भाषा के रूप में हिंदी भारतीय भाषाओं को आपसी सामंजस्य से पनपी एवं बढ़ी है । सरकार की अपेक्षा भी है कि संघ सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के रूप में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाए । ऐसी स्थिति में हमें केवल हिंदी ही नहीं अपितु समस्त भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीन रहना है । हमें समस्त भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलना है । सबके साथ ही सबका विकास हो सकेगा । केन्द्रीय सरकार का कार्यालय होने के नाते केंद्रीय रेशम बोर्ड को भी अपनी जिम्मेदारी का संवहन निष्ठा से करना होगा । हमें हर्ष है कि हमारे सहकर्मी अपने मूलभूत कार्यों के साथ-ही-साथ राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति जागरूक हैं और अपने कर्तव्यों का पालन कर्मनिष्ठ भाव से कर रहे हैं, तभी राष्ट्रीय स्तर पर बोर्ड को लगातार दो वर्ष द्वितीय एवं तृतीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ । मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी हमारे सहकर्मी इसी मनोवृत्ति के साथ निष्ठापूर्वक कार्य करते रहेंगे ।

(राजित रंजन ओखंडियार)

संपादकीय

रेशम उद्योग एक ऐसा उद्योग है जो देश की आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करने के साथ-ही-साथ रोज़गार जैसा विकट समस्या का भी कुछ हद तक निदान कर सकेगा। केन्द्रीय रेशम बोर्ड अपने अधिदेशित कार्यों को पूरा करने के लिए देश के विभिन्न राज्यों में स्थित एककों द्वारा एक एकीकृत केन्द्र-क्षेत्र की योजना नामत: 'सिल्क समग्र' का कार्यान्वयन कर रहा है जो रेशम उद्योग के विकास के लिए योजना है ।केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा लागू की जा रही इस योजना से देश के विभिन्न राज्यों के लोग लाभान्वित हो रहे है ।

रेशम भारतवासियों के जीवन और संस्कृति से जुड़ा हुआ है भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार होते हुए भी केन्द्र सरकार के कार्यालयों में खास तौर से दक्षिण क्षेत्र में अंग्रेजी अभी भी चल रही है । हिन्दी का प्रयोग हो रहा है, लेकिन इसमें और गति लाना अपेक्षित है । अपनी-अपनी मातृभाषा के बाद ऐसी ही जुड़ी हुई भाषा है हिन्दी जिसने संपर्क भाषा के रूप में सशक्त भूमिका निभाई है । भारत की अधिकांश जनता हिन्दी समझती एवं बोलती है, इसलिए देश के कृषकों को उनकी भाषा में उद्योग संबंधी अत्याधुनिक जानकारी का संप्रेषण सुगमता से किया जा सकता है । यह हर्ष की बात है कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड में रेशम उत्पादन कार्यकलापों के साथ-साथ संघ की राजभाषा नीतियों का अनुपालन प्रभावी ढंग से करने के सभी प्रयास किए जाते है ।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने हमारे प्रयासों और उपलब्धियों को देखते हुए विगत 2 वर्षों में क्रमश: द्वितीय एवं तृतीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान कर केन्द्रीय रेशम बोर्ड को गौरान्वित किया है । यह पुरस्कार दिनांक 14.09.2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में संपन्न भव्य समारोह में हमारे सदस्य सचिव महोदय, श्री राजित रंजन ओखंडियार ने वस्त्र राज्य मंत्री श्री अजीत कुमार मिश्रा के करकमलों से प्राप्त किया। बोर्ड के कई संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों को भी क्षेत्रीय स्तर पर तथा नगर राजभाषा कायान्वयन समिति के स्तर पर कई बार राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्राप्त हुए है । हमारे सहकर्मी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपना योगदान देना इसी प्रकार जारी रखें ताकि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बोर्ड एवं इसके अधीनस्थ कार्यालयों के उपलब्धियों को पहचाना जाए और राष्ट्रीय गौरव की उपलब्धि में बोर्ड का स्थान सतत् बना रहे तथा पूरे राष्ट्र को हिन्दी की ज्योति से ज्योतिर्मय कर दें ।

हाइड्रोपोनिक्स: मिट्टी रहित खेती की एक उन्नत तकनीक

डॉ. दिव्या सिंह*, डॉ. बाबूलाल**

सभ्यता के आगमन के साथ ही मिट्टी आधारित कृषि को कुछ प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिनमें भूमि उपलब्धता में कमी सबसे महत्वपूर्ण हैं । इसके अलावा, घटते प्राकृतिक जल स्रोत, जलवायु परिवर्तन, कीटों का प्रकोप उस पर तेजी से बढ़ती जनसंख्या ने खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर दिया है। इन सब मुश्किलों को हल करने आयी है हाइड्रोपोनिक्स तकनीक।न खेतों की आवश्यकता, न मौसम का डर, क्या छत, छज्जें, दुकान, कार्यालय कही भी बिन माटी के साग – सब्जी, गेहूँ, धान, चारा की फसलें लहलहायेंगी। तो चलते है सफलताओं की अनगिनत कहानियाँ लिए आज और आने वाले समय की उन्नत खेती की तकनीक की जानकारी लेने ।

एक समय था जब घर में खाली पड़े बर्तन में पानी भरकर मनी प्लांट उगाना प्रचलन में था । कुछ लोग पौधे उगाने के लिए सुन्दर फूलदान, कांच के जार आदि का भी उपयोग करते थे । समय के साथ लोगों के इस शौक में भले ही कमी आयी है लेकिन ये चलन अब भी जारी है । अब जरा सोच के देखिये आपके बैठक में, घर की छत, मुंडेर पर दुकान और कार्यालयों में भी जगह – जगह बिना माटी के हरी – भरी बगिया महक रही हो, साग – सब्जियां उग रही हो तो कितना सुन्दर होगा । जब मन किया ताजी सब्जियों एवं सलाद का लुफ्त ले लिया । ताजा सब्जियां, उसपर अपनी मेहनत का रंग अलग ही आनंद देता है । जी हाँ, विज्ञान की एक तकनीक की सहायता से यह सब संभव हो गया है । इजराइल, कोरिया, हॉलैंड, जापान, अमेरिका समेत यूरोपीय देशों में यह तकनीक काफी लोकप्रिय है । भारत में यह प्रौद्योगिकी अभी शुरूआती दौर में है ।

क्या है यह हाइड्रोपोनिक्स

हाइड्रोपोनिक शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों हाइड्रो और पोनस से मिलकर बना है; हाइड्रो का अर्थ जल एवं पोनस का अर्थ कार्य होता है । इस प्रकार हाइड्रोपोनिक्स में पोषक तत्वों को जल में मिलाकर पौधों की खेती का कार्य किया जाता है । आम धारणा के अनुसार, खेती के लिए अच्छी मिट्टी के साथ – साथ अच्छे जल और बहुत सारे सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है । शोध बताते हैं कि, मिट्टी का पौधों के विकास में अपने – आप में कोई कार्य नहीं होता है । वह तो जल और पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों को संजोने का साधन मात्र है । पौधे अपनी जड़ों द्वारा जल में घुले पोषक तत्वों को सोख कर वृद्धि करते है । इसीप्रकार ढेर सारे सूर्य के प्रकाश की भी आवश्यकता नहीं होती है, छन कर आती रोशनी में भी प्रकाश संश्लेषण होता है । एक तरह से देखा जाये तो गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की खेती के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है - उत्तम बीज, उचित जल और श्रेष्ठ पोषक-तत्व । बाकी इनको संजोने का माध्यम कुछ भी हो सकता है, चाहे वो मिट्टी हो या रेत, नारियल का बुरादा, कंकड़, लकड़ी की छीलन कुछ भी । चुकिं पौधें अपनी जड़ों द्वारा पोषक तत्वों को अवशोषित करके पत्तियों तक पहुचातें है, इसलिए वे किसी भी माध्यम में पनप सकतें है। यही कारण है कि हाइड्रोपोनिक्स का उपयोग मैदानी क्षेत्रों के साथ – साथ गहरे समुद्र में, पर्वत की चोटी पर, पनडुब्बी में, रेगिस्तान में, सुखा – ग्रस्त इलाकों में, यहाँ तक कि अन्तरिक्ष में भी ताजा सूखा - सब्जियों, फलों एवं खाद्यान्न फसलों को उगाने में किया जा सकता है। इस तकनीक में पौधों को नियंत्रित वातावरण में 15 – 32 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान पर 80 – 85 प्रतिशत आर्द्रता में बिना मिट्टी के सिर्फ पानी के विशेष घोल का उपयोग कर उगाया जाता है। इस घोल में पौधों के लिए

आवश्यक सभी प्रकार के खनिज और पोषक तत्व होते हैं। इस घोल के निर्माण में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, मैग्नीशियम, कैल्शियम, बोरॉन, कॉपर, जिंक, मोलिब्डेनम, सल्फर, आयरन तत्वों का प्रयोग पौधे की आवश्यकतानुसार किया जाता है। हाइड्रोपोनिक तकनीक के अंतर्गत अधिकतर फसलों का उत्पादन नियंत्रित तापमान पर अलमारिनुमा स्टैंड में कृत्रिम प्रकाश का उपयोग कर किया जाता है।

हाइड्रोपोनिक तकनीक के अंतर्गत प्रयोग में आनेवाले अलमारिनुमा स्टैंड

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में पशु चारे पर हुए अनुसंधान बताते हैं कि हाइड्रोपोनिक तकनीक से प्रतिदिन 240 से 480 किलो चारे को 20 से 40 ट्रे में आसानी से उगाया जा सकता है। वहाँ इस तकनीक से मक्का, जई, जौ और उच्च गुणवत्ता वाले हरे चारे का उत्पादन किया जा' रहा है। इस तकनीक से सिर्फ सात दिनों में ही 1 किलो बीज से 6 – 8 किलो हरे चारे का उत्पादन हो सकता है। पारंपरिक तरीके से हरे चारे के उत्पादन में 80 – 90 लीटर पानी का उपयोग होता है जबकि हाइड्रोपोनिक्स में 1 किलो हरे चारे को सिर्फ 2 – 3 लीटर पानी में तैयार किया जा सकता है। गोवा में यह तकनीक पशुओं के चारा उत्पादन में काफी प्रचलित है। वहाँ पशुओं के चारागाह की कमी ने इस तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा दिया है। भारत सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत गोवा डेयरी की तरफ से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के परिसर में हरे चारे के उत्पादन के लिए हाइड्रोपोनिक्स इकाई की स्थापना की गयी है।

इस तकनीक से कम स्थान में कम मेहनत से हानिकारक रसायन रहित चारे का उत्पादन होता है। यह चारा अत्यंत पौष्टिक होता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा सामान्य चारे से तीन गुना अधिक होती है। पौष्टिक चारे के उपयोग से पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार के साथ – साथ दूध उत्पादन में वृद्धि देखी गयी है।

हाइड्रोपोनिक तकनीक से उगाया गया पशु चारा

जहाँ खेत नीचे से ऊपर फैलते है

परंपरागत खेती में खेत लम्बाई में फैलते है जिससे अधिक भूमि की आवश्यकता पड़ती है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स में खेत नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते है जिससे सीमित भूमि में ही

अधिक फसलों को उगाया जा सकता है । वास्तव में, यह खेती पानी भरे ट्रे या पाइप में होती है जिसकी सजावट अलमारी की रैक की तरह की जाती है जिसे कितनी भी उचांई तक बढ़ाया जा सकता है । इसप्रकार सीमित जगह में ही अधिक खेत तैयार हो जाते हैं । भारत में भी पेट्रोल पंप, हाइवे, मेट्रो स्टेशन, हवाई अड्डे, होटल की दीवार आदि पर वर्टिकल गार्डन सहज ही देखने को मिलते हैं । इसमें बिना भूमि के ही अलंकृत पौधों, पुष्पों, पत्तियों आदि का प्रयोग बहुत ही प्रभावी तरीके से किया जा रहा है ।

परंपरागत खेत हाइड्रोपोनिक खेत

हाइड्रोपोनिक्स का इतिहास

हाइड्रोपोनिक्स कोई नयी तकनीक नहीं, इसका इतिहास बड़ा ही पुराना है । आदिकाल में पोखरों, ताल, नदी आदि जल स्रोतों में कुछ पौधों विशेष की खेती की जाती थी, उसी तकनीक का वैज्ञानिक स्वरुप है हाइड्रोपोनिक्स । लगभग 4000 वर्ष पहले मिस्रवासियों द्वारा राजा के महल में विशेष पेड़ों को उगाने और उनको स्थानांतरित करने के लिए बड़े पात्रों के उपयोग का वर्णन मिलता है । इतिहास में वर्णित बेबीलान के हैंगिंग गार्डन, एज़्टेक (मेक्सिको) और चीनियों के तैरते बगीचे हाइड्रोपोनिक्स के प्रमुख उदाहरण हैं । भारत में भी नदी किनारे विकसित सभ्यता में जलीय खेती का वर्णन मिलता है ।

प्रारंभिक मिट्टी रहित प्रणालियों के विकास के बावजूद,19 वीं शताब्दी के मध्य तक वैज्ञानिकों ने हाइड्रोपोनिक प्रयोग करना आरम्भ नहीं किया था और यह भी ज्ञात नहीं था कि किन रासायनिक पोषक तत्वों के घोल के प्रयोग से हाइड्रोपोनिक्स में पौधों की वृद्धि होती है। वर्ष 1699 में, जॉन वुडवर्ड ने यह सुनिश्चित किया था कि पृथ्वी नहीं बल्कि पानी वह पदार्थ है जो सब्जियों का विकास करता है । वर्ष 1842 तक, पौधों के विकास के लिए नौ आवश्यक पोषक तत्वों को सूचीबद्ध किया गया था । बाद में जर्मन वनस्पति शास्त्रियों जूलियस वॉन सैक्स और विल्हेम नोप ने पानी में अकार्बनिक रासानिक पोषक तत्वों का प्रयोग कर एक मानक पोषक घोल तैयार किया । कई वैज्ञानिकों द्वारा इन विधियों का और विस्तार किया गया और तेजी से पौधों की वृद्धि और पोषक तत्वों के अध्ययन के लिए एक मानक अनुसंधान और शिक्षण तकनीक बन गई । वर्ष1865 से 1920 तक पौधों की मिट्टी रहित खेती के लिए कई पोषक तत्वों के फार्मूले का परीक्षण किया गया ।

वर्ष 1928 में, सर्वप्रथम मिट्टी रहित खेती का व्यावसायिक प्रयोग कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक विलियम फ्रेडरिक गेरिक ने किया था और इसे नाम दिया "हाइड्रोपोनिक्स" ।1938 तक हाइड्रोपोनिक्स फसल उत्पादन की एक व्यावसायिक विधि के रूप में उभर रहा था, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका में उत्पादकों ने मिट्टी रहित क्यारियां स्थापित की । हालांकि, इन शुरुआती प्रयासों में उत्पादकों को तकनीकी जानकारी की कमी और सही सामग्री की सीमित उपलब्धता का सामना करना पड़ा और उनमें से कई असफल भी हुए । अगले कुछ दशकों में, संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और फ्रांस के शोधकर्ताओं ने हाइड्रोपोनिक को विश्वस्तरीय व्यावसायिक रूप देने के लिए इस तकनीक की सफलता एवं आवश्यक जानकारियों को अभिलेखित किया । वर्ष 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के होने से, मिट्टी रहित खेती में नए सिरे से रुचि

पैदा हुई, जोकि संकटग्रस्त देशों को घरेलू उपज की अतिरिक्त आपूर्ति प्रदान करने का साधन थी । वर्ष 1944 में, अमेरिकी वायु सेना हाइड्रोपोनिक तकनीक का उपयोग अलग-अलग दुर्गम ठिकानों पर सब्जियां उगाने के लिए कर रही थी । 1960 के दशक में, इंग्लैंड के डॉ एलन कूपर मिट्टी रहित "एनएफटी (पोषक तत्व फिल्म तकनीक)" प्रणाली विकसित कर रहे थे, जो कई फसलों के उत्पादन के लिए आज व्यापक स्तर पर उपयोग में है । आजकल मिट्टी रहित खेती की प्रणाली को शहर में खाद्य, सजावटी और औषधीय फसलों की विविध किस्मों को उगाने के साथ – साथ नासा के अनुसंधानों में भी किया जा रहा है ।

हाइड्रोपोनिक तकनीक से तैयार वर्टिकल गार्डन

हाइड्रोपोनिक तकनीक में पौधों को दी जाने वाली खुराक

हाइड्रोपोनिक्स में पनपते पौधें चूकिं जल-आधारित होते है इसलिए उनके सम्पूर्ण विकास के लिए पोषक तत्वों को जल में ही मिलाया जाता है । आमतौर पर पौधों के वृद्धि के लिए 16 तत्वों की आवश्यकता होती है – ऑक्सीजन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, पोटैशियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, कैल्शियम, सल्फर, आयरन, जिंक, बोरान, कॉपर, मॉलिब्डेनम, मैंगनीज एवं क्लोरीन । भूमि में उगते पौधे इनको मिट्टी एवं वायुमंडल से प्राप्त करते हैं । भूमि में इन पोषक तत्वों की अपर्याप्त मात्रा में उपलब्धता के लक्षण पौधों में स्पष्ट दिखाई देते हैं जिसका सीधा प्रभाव उनकी बढ़वार पर पड़ता है । परन्तु हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से की जा रही खेती में ये पोषक तत्व उचित मात्रा में पौधों की आवश्यकतानुसार उपलब्ध होते हैं जिससे उनका विकास तेजी से होता है । पहली बार, डॉ. एलन कूपर ने हाइड्रोपोनिक्स में प्रयोग होने वाले पोषक तत्वों के घोल (न्यूट्रीएन्ट साल्यूशन) को बनाया था । इस घोल को तैयार करने में उन्होंने पोटैशियम हाइड्रोजन फॉस्फेट, पोटैशियम डाइहाइड्रोजन नाइट्रेट, कैल्शियम नाइट्रेट, मैग्नीशियम सल्फेट, आयरन, मैगनस सल्फेट, बोरिक एसिड, कॉपर सल्फेट और जिंक सल्फेट का उपयोग किया था । वर्ष 1920 में, डी.आर. होगलैंड द्वारा बनाया न्यूट्रीएन्ट सॉल्यूशन आज भी आधुनिक कृषि में उपयोग में हैं । उन्होंने इस घोल को बनाने में अमोनियम डाई हाइड्रोजन फॉस्फेट, पोटैशियम नाइट्रेट, कैल्शियम नाइट्रेट, मैग्नीशियम सल्फेट, बोरिक अम्ल, मैंगनीज क्लोराइड, जिंक सल्फेट, कॉपर सल्फेट, मॉलिब्डिक अम्ल का प्रयोग किया था । आज इन सामग्रियों की मात्रा में कुछ परिवर्तन करके इस न्यूट्रीएन्ट सॉल्यूशन का प्रयोग (हाइड्रोपोनिक तकनीक से) विभिन्न फसलों को उगाने में किया जा रहा है । भारत में भी इस प्रकार का घोल कुछ निजी कंपनियों द्वारा तैयार किया जा रहा है जोकि बाजार में उपलब्ध है । इसके अलावा हाइड्रोपोनिक तकनीक पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा विस्तृत शोध किये जा रहे है, जिसमें वैज्ञानिक न्यूट्रीएन्ट सॉल्यूशन अपने अनुसार तैयार कर रहें है ।

हाइड्रोपोनिक तकनीक से क्या उगा सकते है?

इस तकनीक द्वारा आज बड़े पैमाने पर सब्जियों, फलों एवं खाद्यान्न फसलों का उत्पादन करना संभव हो गया है । इस तकनीक से टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च, मिर्च, बीन्स, फूलगोभी, पत्तागोभी, हरी प्याज, काबुली चने, सीताफल, सरसों का साग, भिन्डी, अजवाइन, स्ट्रॉबेरी, लैट्यूस, हरी पत्तीदार सब्जियों के साथ – साथ गन्ना, गेहूँ आदि खाद्यान्न फसलें उगायी जा रही हैं । इतना ही नहीं, इस तकनीक का प्रयोग करके पशुओं के लिए वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जा रही है । इसी अनुक्रम में ज्वार, जई, गेहूँ यहाँ तक कि गन्ने की नर्सरी भी इस तकनीक से तैयार की जा रही है जोकि स्वस्थ, बेहतर गुणवत्तायुक्त होने के साथ – साथ परंपरागत तरीके की तुलना में कम समय में प्राप्त हो जाती है । यह तकनीक फसलों की परिपक्वता समय में भी कमी लाती है जिससे फसलें उत्पादन समय से पूर्व ही बाजारों में पहुँच जाती है ।

(चित्र www.shutterstock.com से लिए गए हैं)

*वैज्ञानिक - बी, केरेअवप्रसं, मैसूरू

**निदेशक, केरेअवप्रसं, मैसूरू

*****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु के तत्वावधान में केंद्रीय रेशम बोर्ड में हिन्दी भाषण प्रतियोगिता आयोजित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु के तत्वावधान में बेंगलुरु स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में प्रति वर्ष राजभाषा से संबंधित अंतर कार्यालयीन प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है । इसी दौर में केंद्रीय रेशम बोर्ड में दिनांक 18.11.2021 को गूगल मीट के माध्यम से हिन्दी भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विषय दिया गया "भ्रष्टाचार", जिसके विजेताओं की सूची नीचे प्रस्तुत है :-

क्रम सं	नाम, पदनाम व कार्यालय का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
1	प्रकाश येडु, डीआरडीओ (एडीई), बेंगलूरु
2	अय्यर रेवती राजराम, केंद्रीय विद्यालय, एमईजी बेंगलूरु
3	विनोद हर्लापूर, राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूरु
4	प्रमोद कुमार झा, डीआरडीओ (एडीई), बेंगलूरु
5	सुप्रिया भारती, पासपोर्ट कार्यालय, बेंगलूरु
6	सुरेश छिप्पा, केंद्रीय आर्युवेद अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु

वैज्ञानिक तरीके से रेशम की खेती का किसानों पर प्रभाव - एक अध्ययन

-डॉ. विनोद सिंह एवं डॉ. संतोषकुमार मगदुम

आजादी के समय जहाँ हमें अपने देश के खाद्यान्न की जरूरतों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था वहीं हम आज खेती में नये वैज्ञानिक तरीकों के प्रयोग से लगभग पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो गए है, जिसमें रेशम की खेती भी शामिल है। अगर हम पिछले 8 से 9 सालों के आँकड़ों पर नजर डालें तो हम पाते है कि जहाँ सन 2012-13 में भारत में सभी तरह के रेशम का कुल उत्पादन 23679 मी.टन था, वहीं 2019-20 में 35468 मी.टन हो गया है,जिससे यह पता चलता है कि नये वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर रेशम की खेती में भारत आज आत्मनिर्भर बनने की ओर बढ़ चला है। अगर हम एक नजर भारत में रेशम के आयात पर डालें तो हम पाते है कि वर्ष 2019-20 में 1535.72 करोड़ मूल्य का रेशम आयात किया गया है। इसकी तुलना में 2019-20 में ही हमने कुल 1745.65 करोड़ मूल्य का रेशम बाहरी देशों को निर्यात किया है। इससे यह पता चलता है कि भारत देश रेशम की खेती में पूरी तरह से आत्मनिर्भर बन गया है और वह विदेशों को अच्छी गुणवत्ता का रेशम अब निर्यात भी कर रहा है। भारत दुनिया में एकमात्र ऐसा देश है जहां सभी चारों तरह के रेशम का उत्पादन होता है यानी शहतूत, तसर, एरी और मूगा। भारत पूरी दुनिया में रेशम उत्पादन में चीन के बाद दूसरे स्थान पर आता है । हमारे देश में रेशम उत्पादन को बढ़ाने की अपार संभावनाएं है । मुख्य रूप से उत्तर भारत में जहाँ पर मुख्यत:अच्छी गुणवत्तापूर्ण द्विप्रज रेशम का उत्पादन होता है । उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये जम्मू एवं कश्मीर के लंबेरी क्लस्टर में किसानों पर वैज्ञानिक तरीके से रेशम कीटपालन करने पर होने वाले प्रभाव से संबंधित अध्ययन किया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक तरीके अपनाकर रेशम के उत्पादन में होने वाले प्रभाव का अध्ययन है।

सामग्री और विधियाँ-यह अध्ययन मुख्यत:राजौरी जिले के मेगा क्लस्टर लंबेरी में किया गया है, जिसे केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा क्लस्टर योजना के तहत बनाया गया है,जिसमें 500 से 1000 तक रेशमकीट पालक होते हैं और सरकार की तरफ से उस क्लस्टर में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण और प्रसार गतिविधियों का संचालन किया जाता है। किसानों को रेशम कीट पालन गृह बनाने और शहतूत के पौधे लगाने के लिए आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है। यह कार्य केंद्रीय रेशम बोर्ड और राज्य रेशम कीटपालन विभाग के द्वारा मिल कर किया जाता है। इस अध्ययन के लिए कुल 50 किसान चुने गए और उन सभी किसानों ने 100 रोग मुक्त चकत्तों का पालन किया और उनसे आँकडों का संग्रह सन 2014-15 और 2019-20 के आधार पर तुलनात्मक रूप से किया गया है। इन सभी किसानों को पाँच सालों के दौरान विभिन्न तरह की वैज्ञानिक पद्धतियों के बारे में कौशल प्रशिक्षण और प्रसार गतिविधियों के माध्यम से बताया गया और उन्नत रेशम प्रौधोगिकी का उन्हीं के सामने प्रदर्शन भी किया गया, जिससे किसानों को भी प्रौधोगिकी अपनाने में आसानी हो । किसानों के पास कोसा उत्पादन से सम्बंधित आँकड़ों का संग्रह राज्य रेशम कीटपालन विभाग, राजौरी से प्राप्त किया गया ।

परिणाम और चर्चा -लंबेरी क्लस्टर के 500 किसान रेशम की खेती करने का कार्य पिछले कई सालों से कर रहे हैं और उसमें ज्यादातर किसानों ने रेशम की खेती का कार्य अपने पूर्वजों से सीखा है । किसानों को रेशम की खेती की नई तकनीकियों को सिखाने के लिए केंद्रीय रेशम बोर्ड और राज्य रेशम कीटपालन विभाग के कर्मचारी लगातार कार्य कर रहे हैं। लेकिन किसानों की संख्या ज्यादा और कर्मचारियों की संख्या कम होने के कारण सभी किसानों तक पंहुच पाना आसान नहीं होता है। इसलिए विभाग द्वारा चुने हुए किसानों को समय समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है और सभी किसानों को विस्तार गतिविधियों और जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से रेशम कीटपालन के वैज्ञानिक तरीकों के बारे में बताया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 50 किसानों पर एक अध्ययन किया गया है कि वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने से रेशम उत्पादन में कितना प्रभाव पड़ता है।

विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियां और किसानों पर उनका प्रभाव:

1. विशुद्धीकरण का प्रभाव-विशुद्धीकरण कीटपालन के दौरान किया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण और जरूरी कार्य है,जिसे किसानों को कीटपालन के पहले और बाद में कीटपालन गृह और कीटपालन के दौरान उपयोग में आने वाले सभी सामानों को करना होता है। वैज्ञानिक तरीके से

विशुद्धीकरण करने से रेशमकीटों के मृत्युदर में कमी आ जाती है,जिससे किसानों के पास कुल कोकून उत्पादन बढ़ जाता है। क्षेत्र के किसानों को सेरीक्लोर से विशुद्धीकरण घोल तैयार करने के बारे में बताया गया।

विधि-20 लीटर घोल बनाने के लिए 50 ग्राम सक्रिय पदार्थ (एक्टिवेटर) को 500 मी.ली. सेरीक्लोर में घोलें। मिश्रण को 5 मिनट तक रखें जब तक उसका रंग हल्का पीला न हो जाए। इस हल्के पीले घोल को 19 लीटर पानी में मिलाया जाता है। 100 ग्राम बुझे हुये चूने को अलग से 500 मी.ली. पानी में घोला जाता है, अब इस घोल को पहले से तैयार 19.5 लीटर घोल में मिलाया जाता है। इस प्रकार 20 लीटर क्लोरीन डाई आक्साइड का घोल बन कर तैयार होता है।

क्र	औसत मृत्यूदर (प्रति किसान) (2014-15) (N=50)	औसत मृत्यूदर (प्रति किसान) (2019-20) (N=50)	प्रतिशत परिवर्तन
1	22 प्रतिशत	16 प्रतिशत	37.5 प्रतिशत

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विशुद्धीकरण की प्रक्रिया का पूरी तरह से पालन करने से 37.5 प्रतिशत तक रेशमकीटों की मृत्युदर में कमी आ सकती है।

2. रेशम के कीटों को वैज्ञानिक पद्धति से शहतूत की पत्ती खिलाने का प्रभाव- वैज्ञानिक तरीके से खेती में किसानों ने रेशम के कीटों को सभी अवस्थाओं में चार बार पत्तियां खिलायीं जिसमें सुबह 6 बजे,पूर्वान्ह 10 बजे, अपरान्ह 4 बजे एवं रात को 10 बजे का समय शामिल था। पहली से तीसरी अवस्था तक रेशम के कीटों को मुलायम व अधिक नमी वाली पत्तियां काटकर दी गयी जबकी चौथी और पांचवीं अवस्था के कीटों को कम नमी व खुरदुरी पत्ती आहार में दी गयी। किसानों ने हर अवस्था में दी जाने वाली पत्तियों की मात्रा का भी ध्यान रखा।जैसे पहली अवस्था में 5 किलो ग्राम, दूसरी अवस्था में 18 किलो ग्राम,तीसरी अवस्था में 50 किलो ग्राम, चौथी अवस्था में 200 किलो ग्राम एवं पांचवी अवस्था में लगभग 1200 किलो ग्राम।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि रेशम के कीटों को वैज्ञानिक पद्धति से शहतूत की पत्तियां खिलाने से कुल उत्पादन में 20 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है।

क्र	कुल कोकून उत्पादन (हरा) (2014-15) (N=50)	कुल कोकून उत्पादन (हरा) (2019-20) (N=50)	प्रतिशत परिवर्तन
1	1750 कि ग्राम (35 किलो ग्राम प्रति 100 रो. मु. च.)	2100 कि ग्राम (42 किलो ग्राम प्रति 100 रो. मु. च.)	20 प्रतिशत

3. रेशमकीट पालन गृह की बनावट और अंदर की व्यवस्थाओं का प्रभाव- वैज्ञानिक तरीके से किसानों को यह बताया गया कि रेशमकीटपालन गृह हवादार व रोशनी वाला होना चाहिए,जिसमें पर्याप्त दरवाजे व खिड़कियां हों और कमरे में उपलब्ध जगह के हिसाब से ही कमरे में कीटों को पालना चाहिए जैसे –

क्र	कीटों की अवस्था	कीट पालन के लिए जगह (100 रो. मु. च. के लिए)	
		प्रारंभ में (वर्गफुट)	अंत में (वर्गफुट)
1	पहली	4	15
2	दूसरी	15	45
3	तीसरी	60	115
4	चौथी	115	225
5	पांचवीं	225	550

क्र	आँकड़े (2014-15)	आँकड़े (2019-20)	प्रतिशत परिवर्तन
1	कोसा उत्पादन (हरा) (1750 की ग्रा.)	कोसा उत्पादन (हरा) (2100 की ग्रा.)	20 प्रतिशत की वृद्धि

उपरोक्त टेबल से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक तरीके अपनाने से कुल कोकून उत्पादन में 20 प्रतिशत तक की वृद्धि की जा सकती है।

4. रेशम के कीटों को बीमारी से बचाने के उपायों का प्रभाव - वैज्ञानिक तरीके से रेशम कीटपालन के लिए किसानों को निम्नलिखित बातें मुख्य तौर पर बताई गई जैसे-

- कीट पालन के लिए उपयोग में लिए गए अखबार को गंदा होने पर बदल दें या पुराने अखबार को जला दें।
- अनियमित आकार के छोटे कीटों को अलग कर लें।

- मिट्टी लगी हुई, धूल युक्त और रोग युक्त पत्तियां आहार के रूप में न दी जाएं।
- पत्तियों के भंडारण के लिए जूट या खद्दर के बने कपडों का प्रयोग किया जाए।
- कीटों को पर्याप्त जगह में रखा जाए।

क्र	आँकड़े (2014-15)	आँकड़े (2019-20)	प्रतिशत परिवर्तन
1	कीटों की मृत्युदर (22 प्रतिशत)	कीटों की मृत्युदर (16 प्रतिशत)	37.5 प्रतिशत की कमी

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक तरीके अपनाने से कीटों में आने वाली बीमारी को 37.5 प्रतिशततक कम किया जा सकता है ।

5. रेशम कीटपालन के दौरान चूने और विजेता के प्रयोग का प्रभाव - वैज्ञानिक पद्धति से रेशम कीटपालन के तरीकों में किसानों को चूने और विजेता के सही प्रयोग के बारे में बताया गया। चूने का प्रयोग हम उस समय करते हैं जब की ड़ेनिर्मोचन में चले गए हों।चूना बेड में नमीं को कम करता है और बेड में हरी पत्ती को सुखाता है। चूने के प्रयोग से कीड़ों के छोटे–बड़े होने की संभावना कम हो जाती है और कीटों को चमड़ी उतारने में आसानी होती है।

विजेता का प्रयोग सभी कीटों के निर्मोचन से निकलने के बाद और पत्ता देने के आधा घंटा पहले दिया जाता है और कीटों के बेड को अखबार से ढक दिया जाता है ताकि विजेता का असर सभी कीटों पर हो जाए। उपरोक्त अध्यन के लिए चुने गए सभी किसानों ने इसका पालन किया और उनके कोसा उत्पादन में बढ़ोत्तरी के साथ–साथ कीटों के मृत्युदर में भी कमी पाई गई।

6.कोसा को सुखाने के तरीकों का प्रभाव- वैज्ञानिक पद्धति से कीटपालन के तरीकों में सभी किसानों को यह बताया गया कि कोसा को हमेशा काले कपडे के अंदर ही सुखाना चहिए, जिसका सभी किसानों ने पालन किया और उन किसानों की कोकून A ग्रेड में बिकी और कीमत भी अच्छी मिली ।

क्र	आँकड़े (2014-15)	आँकड़े (2019-20)	प्रतिशत परिवर्तन
1	कोकून की कीमत रु 240प्रति किलो	कोकून की कीमत रु 310प्रति किलो	29 प्रतिशत की वृद्धि

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक तरीके अपनाने से कोसों की कीमत में 29 प्रतिशत तक की वृध्दि हो सकती है ।

निष्कर्ष - उपरोक्त अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि यदि किसान रेशम कीटपालन का कार्य वैज्ञानिक तरीके से करे तो कोसों के उत्पादन में 20-30 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हो सकती है। इसी के साथ कोसोंकी गुणवत्ता में भी बढ़ोत्तरी होती है, जिससे किसानों को कोसों की अच्छी कीमत मिलती है और किसानों की आय में भी बढ़ोत्तरी होती है। इस लिए सभी किसानों को रेशम कीटपालन का कार्य वैज्ञानिक तरीके से ही करना चाहिए ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र,केंद्रीय रेशम बोर्ड,मीरांसाहिब, जम्मू

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है , परंतु एक नया वातावरण देना भी है ।

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

मेरा कार्यालय

-सुनील कुमार

रेशम फार्मों में शहतूत के हरे-हरे पेड़ों पर
लहलहाते पत्तों का नजारा
बसंत के मौसम में हर कोई चखता
शहतूत के फलों के स्वाद का नजारा
कीटपालन केन्द्रों में चंद्रिकाओं के ऊपर रेशम कोकून बनाते
रेशम के कीड़ों का दुर्लभ नजारा, हर किसी को भाता है ।
वैज्ञानिकों के द्वारा अथक प्रयास से विकसित की गई
नई-नई तकनीकों का नजारा
देश की उन्नति के लिए जी-जान से लगे
कार्मिकों की मेहनत से मिले फल का नजारा
दुनिया में रेशम उत्पादन में अपनी अलग पहचान बनाता
केन्द्रीय रेशम बोर्ड हमारा,
देश की उन्नति के लिए राज्य सरकारों को
उच्च गुणवत्ता का बीज प्रदाता
केन्द्रीय रेशम बोर्ड हमारा,
किसानों के लिए आय के साधन विकसित करता
केन्द्रीय रेशम बोर्ड हमारा,
मैं खुश किस्मत हूँ जो कार्य कर रहा हूँ ऐसे महकमें में
जिसका गुणगान करता है सारा ज़माना,
अंत में यही कहूँगा,
सभी महकमों में प्यारा, केन्द्रीय रेशम बोर्ड हमारा

अधीक्षक
राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन,
बेंगलूरु

पेड़

-रजनी खड़का साहनी

घने पेड़ की छाया में
बैठकर धूप का एहसास
कहाँ होगा तुम्हें।
तुम तो केवल
पेड़ की शाखाओं पर ही नजरें जमाए रहते हो।
तुमने उस अजन्में
बीज को कहाँ महसूस किया
जबकि धरती सहती
प्रसव पीड़ा, प्रत्येक बीज
के पौधा बनने पर ।
तुम चाहते हो- पौधों को पेड़ के रूप में देखना,
तुम्हारी नजरें पेड़ के अन्दर पल रही
भावनाओं और जीवन को
कब देखती है,
तुम्हें तो दिखती है
उसकी मांसलता, कठोरता
परिपक्वता तुम्हें भाती है।
शायद कभी समझ पाओ
उन गतिमय क्षणों को,
जिस पल एक बीज
लेता है, आकार पेड़ का ।
क्या तुम्हें याद नहीं आता
वो बचपन, पेड़ों की डालों पर झूलें,
अमियां चुराती मुनिया,
घोंसला बनाती चिड़ियां
जंगल जाकर छुपना, पहाड़ों में घूमने का सपना,
कक्षा में पढाते मास्टरजी।
पेड़ हमारा जीवन है, तुम सब भूल गये ।

वरिष्ठ तकनीकी सहायक,
पी3 मूल बीज फार्म, माजरा, देहरादून

कवि रणधीरचन्द्र गोस्वामी की कृतियाँ - एक नजर

- डॉ० दयानाथलाल

कवि रणधीरचन्द्र गोस्वामी को बहुत कम लोग जानते हैं, लेकिन, हम तो इस कवि को, आज से नहीं, बल्कि, लगभग तीस-पैंतीस वर्षों से, जानते हैं।

सबसे पहले देखिए, गोस्वामी जी की एक छोटी-सी-रचना क्या?

आपकी
तस्वीर को
एकटक देख रहा था-मैं
उस तस्वीर में
शायद खुद को ही
तलाश रहा था
मैं।

अभी-अभी देखा आपने गोस्वामी जी की एक-दूरमारक- कविता को और अब देखिए जरा, इससे भी अधिक दूरमारक, इनकी एक अन्य कविता को और वह भी, आजकल के नेताओं के प्रति-"नेताजी थोड़ा-थोड़ा करके हर दिन बढ़ाते चले जा रहे हैं-माप, अपने कुर्ते की ताकि, रोज-रोज की बढ़ती उनकी तोंद को ढीले-ढाले-कुर्ते के अन्दर जनता की नज़रों से छिपाकर रखा जा सके। इधर कुछ दिनों से तो तोंद का फुटबाल बन जाने का डर, दीमक की तरह खाए जा रहा है उन्हें अन्दर ही अन्दर।" हम यहाँ, कहना चाहेंगे कि कोई कुछ भी कह ले, कोई कुछ भी लिख दे, लेकिन, नेता लोग अपनी आदत को छोड़ने वाले नहीं है।

खैर गोस्वामी जी, एक ऐसे रचनाकार है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से, माँ के महत्त्व को बहुत ही गहराई से, दर्शाने का प्रयास किया है। यथा- "घर के कोने-कोने में आठों पहर छाई रहती है- माँ। माँ के चलने से ही, चल पड़ता हे सारा घर। शायद नहीं जानती माँ क्या होता है विश्राम? सबको खिलाकर खाती है-माँ। सोती है-माँ सबको सुलाकर। नीद में भी खुली सी रहती है-माँ की आँखें। ...माँ को नहीं आती राजनीति। नहीं जानती माँ, वेदमंत्र। माँ को नहीं है-दर्शन का ज्ञान। सुबह-शाम लेती है माँ, राम का नाम। राम-कृष्ण को करती है- माँ प्रणाम। मानती है-माँ देवी-देवताओं को। उन्हें मनाती रहती है-माँ, अपने घर की खुशहाली के लिए। कुछ आगे चलकर तो और कई महत्वपूर्ण बातें कह डाली है-रणधीरचन्द्र गोस्वामी जी ने माँ के संबंध में बड़े ही कोमलशब्दों में।

क्या?
जीती है,
माँ घर के लिए
घर के लिए मरती है-माँ।
भड़क उठती है, अगर घर में,
कहीं कोई चिंगारी
तो बनकर पानी,
अपने घर-आँगन में
बरस पड़ती है
माँ।

इसी प्रकरण में, लताहया जी भी, हमारी आँखों के सामने मौजूद हो चुकी हैं। इसलिए कि माँ को एक बोझ समझने वालों के ऊपर नारी अस्मिता के प्रति काफी बढ़ती हुई अपराधिवृत्ति को लेकर बहुत कारार प्रहार किया है-लताहया जी ने। जैसे- "वो कुता पाल सकता है, मगर माँ बोझ लगती है उसे। कुत्ते ने क्या उसे कोई वफादारी नहीं सिखलाई? जिंदगी की धूप में, अगर पैरों में छाले पड़ जाये, तो छाले, यही कहेंगे कि माँ अगर होती, तो इस धूप में माथे पर वह आँचल, रख देती।"

खैर अब हम लौटते हैं पुन: गोस्वामी जी की ओर। गोस्वामी जी, स्वयं को एक-साधारण-आदमी मानते हैं। अपने बारे में इस कवि ने लिखा है-क्या लिखा है?

थोड़ा-सा ध्यान दें- "जो कुछ भी कहना था- मुझे, अपनी कविताओं में कह दिया है-मैंने। अब आगे, मेरी कविताएँ संवाद करती रहेगी-आपसे। अपने बारे में, क्या बताऊँ मैं ? हाँ, इतना जरूर मैं कहूंगा कि आज के

भागदौड़ वाले, जटिल जीवन की कठिन परिस्थितियों में, भीड़ से अलग, एकान्त में रहने वाला एक साधारण-सा-आदमी हूँ मैं।" गोस्वामी जी अपने को एक साधारण आदमी जो मानते हैं, वह तो इनकी महानता है। कवि, व्यक्ति-समाज और राष्ट्र को रोशनी प्रदान करता है। ऐसी परिस्थिति में, कवि अथवा लेखक को, एक साधारण आदमी नहीं माना जा सकता। गोस्वामी जी वस्तुतः एक बड़े-इन्सान या एक बड़े-मनुष्य हैं। किसी का कष्ट, जब ये देखते हैं या सुनते हैं, तो इनके नेत्रों में गम के बादल छा जाते हैं। मानवता के महत्त्व को, तो खूब समझने-समझाने की कोशिश की है-इस कवि ने अपनी कृतियों में ।'वही, मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए, मरे।"-महाकवि, मैथिली शरण गुप्त के इस कथन का भी प्रभाव, इस कवि के ऊपर कुछ अवश्य पड़ा है-ऐसा हमें लगता है। काव्य लिखना, तो प्रारंभ किया था इस कवि ने, सन् 1969 में तथा 'ताश के महल', इस कवि का पहला काव्य है। प्रस्तुत है विचारार्थ, इस काव्य की केवल एक पंक्ति "सारे के सारे, महल ताश के, मेरी आखों के सामने, देखते-देखते ही बिखर गए।"

खैर, व्याकरण-दोष की दृष्टि से, तो कमजोरियों की कड़ियों में फंसे हुए, गोस्वामी जी कहीं-कहीं, कुछ अवश्य दिखाई देते हैं, लेकिन इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जिस चीज को अपनी कलम का निशाना, ये बनाना चाहते हैं, बना लेते हैं। अर्थ-विस्तार की दृष्टि से भी इनकी कृतियों को देखना होगा, अन्यथा, अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसी विषयानुक्रम में, यह भी हम कहना चाहेंगे कि गरीबों के दर्द का भी एक बहुत बड़ा भंडार है-इनके पास । 'भूख के खिलाफ नामक इनके एक लम्बे काव्य में, तो दर्द का उमड़ता हुआ, एक दरिया ही देखने को मिल जाता है। कई दिनों से भूखे-प्यासे रहकर अपने बच्चों के लिए, पत्थरों के पेट में प्रतिदिन, रोटी तलाशने वाली अनेक औरतों के कुछ विचित्र चित्र, अगर देखना हो, तो गोस्वामी जी की कविता- 'भूख के खिलाफ' को देखा जा सकता है।

प्रस्तुत है अब इस कविता की

कुछ प्रमुख पंक्तियाँ -

दुखियारी
भूख की मारी
कुछ औरतें बेचारी
लिए हथौड़ी हाथ
तोड़ रही
पत्थर ।.....
हाथ के
हथौड़े से
किये जा रहीं
प्रहार पर प्रहार
चट्टानों के सीने पर
कभी न कभी.
पिघलेगा ही पत्थरों का सीना
पहाड़ी ही केवल
भयभीत नहीं इनसे
सामने का पहाड़ भी डर से
काँप रहा
थर-थर-थर।

कवि, रणधीरचन्द्र गोस्वामी जी की कविता-'भूख के खिलाफ' में एक वाक्य आया है-"कभी न कभी पिघलेगा ही, पत्थरों का सीना इस वाक्य का अर्थ क्या है? इस वाक्य के द्वारा यह कवि कहना क्या चाहता है? इस वाक्य के द्वारा यह कवि यही कहना चाहता है कि लाचारी की घड़ी में मुसीबत की घड़ी में दुख की घड़ी में आस्था अथवा विश्वास को क्षणभर भी हमें खोना नहीं चाहिए। इसलिए कि सोया हुआ, भाग्य भी कभी-कभी जाग उठता है, जगमगा उठता है और अपने गांव की सोंधीमिट्टी की सुगंध को तो तनिक भी अभी तक गोस्वामी जी भूले नहीं है । वापस अपने गाँव जाने की इनकी पूरी इच्छा है। लिखा भी है, इन्होंने कि-

जाना
चाहता हूँ मैं
वापस अपना गाँव
जहाँ धूल और मिट्टी के साथ
छोड़ आया हूँ मैं
कैसे भुलाया जा सकता है
गाँव अपना?
अपना बचपन

अब अन्त में इतना ही हम कहना चाहेंगे कि इस कवि के ऊपर केवल निबंध ही नहीं, एक पुस्तक भी लिखी जा सकती है।

-तीसरी गली,
जी० टी० रोड, सासाराम-821115,जिला रोहतास,
बिहार

*****

कहाँ बदलाव ले आया

-विष्णु वर्मा

प्रगति की दौड़ ही तो है,
किया जिसने बेघर है।
नहीं अपनत्व है कोई
न रहना गाँव में भाता,
लगता है शहर अच्छा
गाँव में पिता माता ।
अभावों में जुड़ा था घर
समय ने किया बेघर है ।
न लगती भी कमी कोई
हम थे गाँव में रहते,
मस्त थी जिंदगी अपनी
विवशता में भले रहते।
दिखाने की खुशी अब है
न पीछा छोड़ता डर है।
गाँव की जिंदगी जैसे
हमारी कार्यशाला भी,
जहाँ हम सीखते करते
कि ऐसी पाठशाला थी।
शहर में लिख के पढ़ के भी
लगा बेकारी का डर है ।
मोड़ा मुँह जवानी ने
कितना होने लगा जर्जर,
कोई ना पूछने वाला
शहर में, जो सुने आकर
कहा बदलाव ले आया
शहर में हमको ढ़ो कर ।

ग्रा.पो.- ककोली- 224195 जिला अयोध्या, उ.प्र.

कैसे अपने को समझाऊँ ।

-विष्णु वर्मा

कैसे अपने को समझाऊँ ।
मन जो कहता कर ना पाऊँ।।

मुझ से तो नाराज सभी हैं,
किसको अपनी बात बताऊँ ।

नहीं सोच पाता हूँ कुछ भी,
कैसे आगे कदम बढ़ाऊँ ।

व्यंग्य किए लोगों ने कितने,
रहूँ किस तरह समझ न पाऊँ ।

आँखों से जो देख रहा हूँ,
उसको वैसा कह ना पाऊँ ।

ग्रा.पो.- ककोली- 224195 जिला अयोध्या, उ.प्र.

कब पायेगा मानव मृत्यु पर विजय ?

-डॉ विजय कुमार उपाध्याय

भारत की पौराणिक कहानियों में बताया गया है कि स्वर्ग के निवासी देवताओं ने अमृत पान किया था जिसके फल स्वरुप वे अजर अमर हो गये थे। अर्थात् न तो कभी उन पर बुढ़ापा आता था और न उनकी मृत्यु होती थी। बुढ़ापे और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का प्रयास आधुनिक काल के वैज्ञानिक भी काफी लम्बे अरसे से करते आये हैं। हाल में किये गये कुछ अनुसन्धानों से उन्हें इस दिशा में आंशिक सफलता की कुछ किरण दिखायी भी पड़ने लगी हैं।

हालाँकि जिस धरती पर हम लोग रहते हैं उसे 'मृत्युलोक' कहा जाता है तथा यहाँ के सभी प्राणियों को कभी न कभी काल कवलित अवश्य होना पड़ता है। परन्तु इसके बावजूद मानव को अमरता प्राप्त करने की लालसा सदा से रहती आयी है। आधुनिक वैज्ञानिक नये-नये आविष्कारों की बदौलत अभी तक अमरता तो नहीं प्राप्त कर सके हैं, परन्तु मानव को सौ-डेढ़ सौ वर्षों की आय दिलाने में अवश्य सक्षम होते दिखायी पड़ रहे हैं। स्वास्थ्य विज्ञान से संबंधित संसार की प्रमुख पत्रिका 'लैंसेट' में कुछ समय पूर्व एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ था जिसमें बताया गया था कि सन 1990 में विश्व स्तर पर मानव की औसत आयु जहाँ सिर्फ 65.5 वर्ष थी, वहीं अब स्वास्थ्य सुविधाओं में विकास के कारण औसत आयु 71.5 वर्ष हो गयी है । भारत में स्वास्थ्य विभाग के आंकडे बताते हैं कि दस वर्ष पहले की तुलना में आज पुरूषों की औसत आयु पांच वर्ष बढ़कर 67.3 वर्ष हो गयी है । महिलाओं की औसत आयु छ साल में बढ़कर 69.6 वर्ष हो गयी है । आशा की जाती है कि चिकित्सा विज्ञान में तीव्र गति से हो रहे विकास के फलस्वरूप लोगों की औसत आयु में लगातार वृद्धि होती रहेगी ।

सन् 2013 के सितम्बर में गूगल द्वारा 'कैलिफोर्निया लाइफ कम्पनी (कैलिको)' की स्थापना की गयी थी। इस कम्पनी का मुख्य उद्देश्य है ऐसे वैज्ञानिक तरीकों की खोज जिनके द्वारा मानव की औसत आयु की वृद्धि की जा सके। संयुक्त राज्य अमेरिका की एक कम्पनी का नाम है 'सिंथिया केन्यन'। इस कम्पनी के वैज्ञानिकों द्वारा कुछ समय पूर्व चन्द प्रकार के कीटों के जीवन काल को छ: गुना बढ़ाने में सफलता प्राप्त की गयी थी। यह कम्पनी भी कौलिको कम्पनी से जुड़ गयी है। अमेरिका के एक प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक हैं क्रेग वेंटर जिनके द्वारा 'ह्युमन लौंगेविटी इनकोरेपोरेशन' नामक कम्पनी की स्थापना की गयी है। इस कम्पनी की योजना दस लाख ह्युमन जीनोम सीक्वेंस का डाटाबेस तैयार करने की है। इस डाटाबेस में उन लोगों के आँकड़े भी शामिल होंगे जिनकी उम्र सौ वर्ष से अधिक हो चुकी है। क्रेग वेंटर का विश्वास है कि उनकी कम्पनी द्वारा तैयार किया गया डाटाबेस उन वैज्ञानिकों के लिये बहुत ही उपयोगी साबित होगा जो मानव के औसत जीवन काल को बढ़ाने की दिशा में शोध करने में लगे हुए हैं। इस दिशा में उपयोगी शोध करनेवालों को प्रोत्साहित करने के लिये पुरस्कार देने की भी योजना बनायी गयी है। अमेरिका में एक अन्य ऐसे ही पुरस्कार की घोषणा की गयी है जिसका नाम रखा गया है 'पालो आल्टो लौंगेविटी पुरस्कार'। इसमें प्रत्येक वर्ष दस लाख डॉलर का पुरस्कार वैसे व्यक्ति को दिया जायेगा जिसने मानव के औसत जीवन काल को बढ़ाने की दिशा में काफी महत्वपूर्ण खोज की हो। इस पुरस्कार का मुख्य उद्देश्य ऐसी विधि की खोज करना है जिसकी सहायता से मानव के जीवन काल की अधिकतम सीमा 120 वर्ष से ऊपर ले जाना सम्भव हो सके। 'इस पुरस्कार की स्थापना अमेरिका के एक बड़े उद्योगपति द्वारा की गयी है जिसका नाम है 'जून यून' ।

सन् 2013 में हार्वर्ड विश्व विद्यालय में कार्यरत कुछ वैज्ञानिकों द्वारा किया गया अनुसंधान भी काफी अधिक चर्चा में आया था । इस शोध से जुड़े लोगों ने पता लगाया था कि बूढ़े चूहों में एक विशिष्ट प्रकार के प्रोटीन की कमी

हो जाती है। दो वर्ष की अवस्था वाले एक चूहे के शरीर में जब इस प्रोटीन को प्रविष्ट कराया गया तो पाया गया कि उसके शरीर के ऊतक (टिस्सू) छ महीने की अवस्थावाले चूहे के ऊतक के समान हो गये। इसके अलावा कुछ ऐसी औषधियाँ भी हैं, जिनका उपयोग कुछ हद तक बुढ़ापे को रोकने में काफी सक्षम पाया गया है। उदाहरणार्थ ऐसी ही एक दवा का नाम है 'मेटफौर्मिन' जो सामान्य तौर पर मधुमेह (डायबिटीज) के रोगियों की चिकित्सा हेतु उपयोग में लायी जाती है। ऐसी ही एक अन्य दवा का नाम है 'रेपामा इसीन' जो अंग प्रत्यारोपण तथा एक विशेष प्रकार के कैंसर की चिकित्सा हेतु काम में लायी जाती है। जब चूहों पर इसका उपयोग किया गया तो उनके जीवन काल में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी।

आयु वृद्धि के दृष्टिकोण से दवाओं के अलावा कुछ विशेष प्रकार की अन्य विधियों को भी काफी कारगर पाया गया है । उदाहरण के लिए कुछ शोध कर्ताओं द्वारा कई पशुओं पर किए गए प्रयोगों से निष्कर्ष निकाला गया है कि आवश्यकता से कम आहार का सेवन भी जीवल काल को बढ़ाने में काफी सक्षम होता है । वैज्ञानिकों ने शोधों के दौरान पाया कि जब जानवरों की सीमित परिमाण में आहार उपलब्ध कराया गया तो वे अधिक समय तक जीवित रहे। एक अन्य शोध में कुछ वैज्ञानिकों ने पाया कि यदि छोटे चूहे का खून बूढ़े चूहे के खून में प्रविष्ट करा दिया जाय तो उसकी मानसिक क्षमता पुन: बहाल हो जाती है।

अब वैज्ञानिक लोग यह जानने का प्रयास कर रहे है कि समय के साथ शरीर को चलाने वाली अलग-अलग प्रणालियाँ सुस्त क्यों पड़ जाती है और फिर एक दिन पूरी तरह क्यों रुक जाती हैं। इस प्रश्न के उत्तर में जीव की अमरता का राज छिपा है। वैज्ञानिक लोग इस प्रश्न का उत्तरः ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे है। संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया स्थित 'सेंस फाउंडेशन' के संस्थापक तथा प्रसिद्ध मौलिक्युलर बायोलौजिस्ट आउब्रे दे ग्रे ने विचार व्यक्त किया है कि हमारा शरीर एक प्रकार की जैविक मशीन है। इस मशीन में समय के साथ होनेवाली खराबियों (अर्थात बीमारियों) का इलाज कर इस शरीर रूपी मशीन को चालू रखा जा सकता है ।

अब वैज्ञानिक लोग यह पता लगाने का भरपूर प्रयास कर रहे है कि क्या मानव अजर हो सकता है? अर्थात क्या वह सदैव यौवनावस्था में रह सकता है? पिछले कुछ समय के दौरान वैज्ञानिक अनुसंधान काफी तेजी के साथ इस दिशा में बढ़ा है। सन् 2014 के अन्त में संयुक्त राज्य अमेरिका के "साक इंस्टिट्यूट फॉर बायोलोजिकल स्टडीज' में काम करने वाले कुछ वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उनके द्वारा वह जैविक स्विच ढूंढ लिया गया है जिसका बुढ़ापा शुरु करने से सीधा संबंध रहता है। वस्तुतः हमारे शरीर के अन्दर 'टेलोमेरेस' नामक एक ऐसा एंजाइम मौजूद रहता है जो हमारी कोशिकाओं को बढ़ने का निर्देश देती है। जब इस एंजाइम की कमी होने लगती है तो नयी कोशिकाओं का निर्माण बन्द होने लगता है जिसके कारण बुढ़ापे की शुरुआत हो जाती है। इस दिशा में शोध से जुड़े वैज्ञानिकों का मानना है कि जब शरीर में टेलोमेरेस बनाने वाला स्विच निष्क्रिय हो जाता है तो बुढ़ापे का आगमन होने लगता है। इन वैज्ञानिकों को पूरी आशा है कि यदि इस स्विच को नियंत्रित कर लिया जाय तो बुढ़ापे के आगमन को रोकने में सफलता मिल सकती है। यदि वैज्ञानिकों का यह प्रयास सफल हो जाता है तो बुढ़ापे को रोकने की युक्ति हाथ लग जायेगी।

जीव वैज्ञानिक लोग इस बात का पता लगा चुके हैं कि वस्तुत: यौवन का राज शरीर के बाहर नहीं, बल्कि शरीर के अन्दर डी एन ए में छिपा हुआ है । वैज्ञानिकों ने इसे समझने के लिये डी एन ए से जुड़ी 'हयुमन बॉडी क्लॉक (जैविक घड़ी)' को खोज लिया है। युनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में एपिडेमियोलौजी ऐंड कम्युनिटी हेल्थ डिपार्टमेंट

में कार्यरत प्राध्यापिका श्रीमती वौनी केली ने विचार व्यक्त किया है कि यह घड़ी शरीर में मौजूद कोशिकाओं, ऊतकों (टिस्यूज) और अंगों की उम्र की गणना करती है। केली का मानना है कि यदि इस घड़ी में बढ़ती उम्र की प्रक्रिया को उलट कर दिया जाय तो व्यक्ति आजीवन जवान बना रह सकता है।

वैज्ञानिक लोग शरीर के अन्दर स्थित जैविक घड़ी का अध्ययन काफी गहराई से कर रहे हैं। वे यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि क्या यह जैविक घड़ी जवान बने रहने की गुत्थी सुलझा पायेगी? क्या यह घड़ी बुढ़ापा लाने वाले कारकों को नियंत्रित कर पायेगी । यदि हम यह समझने में कामयाब हो जायें कि हमारी उम्र कैसे बढ़ती है तो हम इस प्रक्रिया को उलट सकते हैं। यही कारण है कि वैज्ञानिक लोग इस जैविक घड़ी की क्रिया प्रणाली को समझने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रणाली की जानकारी उपलब्ध होने पर जवान बने रहने और बुढ़ापे को दूर रखने का रहस्य समझा जा सकता है।

वैज्ञानिक लोग इस दिशा में भी काम कर रहे है कि यदि बुढ़ापे का कारण और इससे पैदा होने वाली समस्याओं की जड़ तक पहुँचा जाय तो बुढ़ापे को आने से रोका जा सकता है। मानव जीवन के अनुक्रम (सीक्वेंस) को पता लगाकर सबसे पहले कृत्रिम कोशिका का निर्माण करने वाले अमरीकी वैज्ञानिक क्रेग वेंटर के साथ स्टेम सेल की प्रथम खोज करने वाले डॉ. रोबर्ट हरीरी भी शामिल हो गये हैं। इन दोनों वैज्ञानिकों ने मिल कर 'ह्युमन लौंगेविटी' नाम की एक कम्पनी को स्थापित किया है। इस कम्पनी द्वारा जिनोमिक्स और स्टेम सेल संबंधी जानकारी को मिलाकर बुढ़ापे से लड़ने और जवान बने रहने के तरीके ढूँढ़े जायेंगे।

बी67, राजेन्द्र नगर, हाउसिंग कोलोनी
के के सिंह कोलोनी, पो०- जमगोड़िया, वाया जोधाडीह,
जिला-बोकारो, झारखंड, पिन कोड: 827013

*****

श्री आर डी शुक्ल, उप निदेशक (रा भा)के मार्गदर्शन में केंद्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर उन्मुख रहा । उनके संपादन काल में पत्रिका की विषय-वस्तु में विविधता व नवीन कलेवर से हिन्दीतर भाषियों व अन्य संस्थानों में भी रेशम भारती की लोकप्रियता और बढ़ी । उनकी विशिष्ट साहित्यिक शैली से पत्रिका में नया निखार आया । हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में उत्तरोत्तर विकास के विभिन्न पहलुओं पर संपादकीय में अभिव्यक्त उनकी सोच ने पत्रिका को मार्गदर्शन दिया । अपनी लगभग 36 वर्षों की सेवा काल के उपरांत अधिवर्षिता की आयु प्राप्त कर आप दिनांक 31 दिसम्बर 2021 को बोर्ड की सेवा से सेवानिवृत हुए । केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं रेशम भारती परिवार की ओर से उनके सुखद एवं स्वस्थ जीवन के लिए

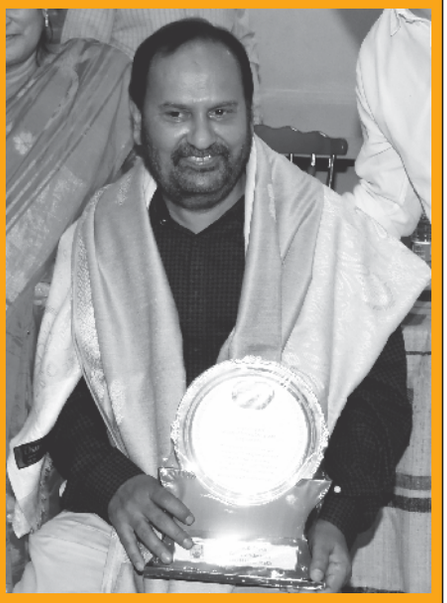

आपकी कल्पना में आने वाले 10 वर्षों में भारत कैसे बदलेगा

-गजेन्द्र नन्द खन्ना

नराकास के तत्वावधान में रारेबीसं, बेंगलूरु द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध

प्रथम पुरस्कार

भारत मेरी जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों रही है । मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि मेरे पिताजी की तबादले वाली नौकरी के कारण मुझे देश के कई शहरों व राज्यों में रहने का मौका मिला । मेरी स्वयं की नौकरी ने मुझे भारत के और भी राज्यों के दर्शन कराए । केन्द्रीय सरकार में सेवारत होने के कारण हमारा कार्यालय भी एक छोटा भारत ही होता है । मुझे याद है कि नौकरी में भर्ती के बाद जो प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ था उसमें तेईस (23) राज्यों के प्रतिभागी थे जिनमें से कई आज भी मुझसे संपर्क बनाए हुए है । इस तरह मैंने भारत के विभिन्न रूपों को स्वयं देखा है और उसकी विविधता को स्वयं अनुभव कर उसे सराहा भी है । मुझे कोई पूछता है तो मैं खुद को इंडिया से ही बताता हूँ । मुझे नहीं लगता मैं सिर्फ एक स्थान से नहीं, अपितु पूर्ण भारत से हूँ ।

जहाँ मैंने एक ओर भारत का विकास देखा है, वहीं मेरा मानना है कि यह एक महज एक शुरूआत है और जो भी हुआ वह आने वाले समय की ओर संकेत भी देता है । हमने कई क्षेत्रों में काफी तरक्की कर ली है किन्तु विकसित देश बनने के लिए हमें अभी और परिश्रम करना होगा ।

आने वाले दस सालों में हमें सबसे पहले अपनी शैक्षणिक व्यवस्था में सुधार लाना होगा क्योंकि हमारे देश में प्रतिभा की कमी नहीं है । यदि थोड़ी कमी है तो प्रशिक्षण में । हमारे विद्यार्थीयों की मानसिकता हमें रटने को छोड़ ज्ञान अर्जित करने व अपनी स्किल बढ़ाने पर करनी होगी । मोबाईल से बाहर की दुनिया से उन्हें अवगत कराना होगा । हाल ही में घोषित शिक्षा नीति इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिसके कार्यान्वयन से छात्रों के शैक्षिणिक स्तर में सुधार होगा । इसमें शुरूआती वर्षों की पढ़ाई मातृभाषा में कराने की बात की गई है । खेल-कूद, योग, कला को भी महत्व मिलेगा जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होगा । विद्यार्थी अपनी पसंद के विभिन्न विषय चुन पाएँगे जिससे उन्हें सिर्फ साइंस या कॉमर्स धारा से ही मजबूरन विषय नहीं लेने होंगे । रोजगार संबंधी विषय में भी पढ़ाई हो सकेगी और कई भाषाओं को सीखने के अवसर से वे हमारे इस देश की विविधता को समझ सकेंगे । हमारे पाठ्यक्रम काफी सुधार भी देखेगा जिससे बच्चों को आवश्यक व नवीनतम जानकारियाँ दोनो मिलेंगी । सॉफ्ट स्किल पर भी जोर रहेगा । शिक्षा के महत्व को आम आदमी आज भली-भांति पहचान रहा है । नई मल्टीमीडिया तकनीकें व ऑनलाइन शिक्षा का अधिक विस्तार होगा जिससे हमारे विशाल देश के हर कोने में उच्च स्तर की शिक्षा पहुँच सकेगी । ऐसा माहौल बनाना होगा कि शिक्षकों को अच्छी आय मिले और सबसे अच्छे विद्यार्थी डॉक्टर-इंजीनियर नहीं, शिक्षक बनना चाहें ।

हमारी सरकार की यह कोशिश है कि रोज़गार के अवसर बढ़े और हर क्षेत्र में उपयोगी उद्योग आएँ । आने वाले समय में सरकार विभिन्न नियमों व पैकेज द्वारा 'ईज ऑफ बिज़नेस यानि व्यापार में आसानी' संभव बनाएगी । स्टार्टअप, उद्योग व कारखाने गाँवों तक पहुँचेंगे ताकि शहरों की आरे पलायन की आवश्यकता न रहे । स्वदेशीकरण की दिशा में भी कई कदम उठाए जा रहे हैं जिससे अन्य देशों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा । यही नहीं आयात घटाने के अलावा निर्यात गतिविधियों में भी बढ़ोत्तरी होगी । इससे राजस्व में बढ़त मिलेगी जिसका उपयोग कल्याणकारी योजनाओं में किया जा सकेगा ।

पर्यावरण संबंधी जागरूकता अब बढ़ रही है । आने वाले वर्षों में प्रदूषण घटाने पर ज़ोर रहेगा । सी ए एन जी, इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग बढ़ेगा । सौर ऊर्जा, बायो ऊर्जा, वायु ऊर्जा जैसे सशक्त माध्यमों द्वारा हमारी पेट्रोल, डीजल व कोयला इत्यादि पर निर्भरता कम हो जाएगी । जैविक खेती के प्रचार में सुधार होगा जिससे हमारी कीटनाशकों व कृत्रिम उर्वरकों से होने वाला नुकसान कम होगा परिणामस्वरूप कैंसर जैसी बीमारियाँ कम होंगी ।

स्वास्थ्य सुविधाओं में भी बहुत सुधार होगा । कोविड के कारण अच्छे स्वास्थ्य का महत्व लोगों ने जाना है और समझा है कि स्वास्थ्य ही सच्ची धन-दौलत है । जहाँ एक ओर कई नए अस्पताल खोले जायेंगे वही देश में उच्च कोटि की दवाएँ भी

सस्ते दामों पर, नई फैक्ट्रियाँ उपलब्ध करावाएँगी । टेलीमेडिसिन व उड़ान जैसे सुविधाओं से दूर-दराज क्षेत्रों में भी हर सुविधाएँ बढेंगी।

सामाजिक दूरियाँ भी शिक्षा के साथ घटेंगी । लोग स्वयं आत्मनिर्भर होंगे और अपनी मेहनत के उचित मोल पाएंगे । इससे सब परस्पर संघर्ष चुनौतियों का सामना करेंगे और सफल होंगे । इस कार्य में महिलाएँ पुरूषों से पीछे नहीं बल्कि कदम से कदम मिलाकर चलेगीं, विज्ञान के क्षेत्र में उनका प्रभाव अभी ही दिख रहा है । अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें उनका यथोचित स्थान मिलेगा । शिक्षा से सबके ज्ञान चक्षु खुलेंगे जिससे अल्पसंख्यकों व पिछड़े वर्ग के भारतीयों को भी समान अवसर मिलने का मार्ग प्रशस्त होगा । जीवन स्तर में सुधार से 'रोटी, कपड़ा और मकान' सबको सुलभ होंगे ।

इन्टरनेट के सर्वत्र उपलब्ध होने से हर वर्ग को अपनी एक आवाज मिलेगी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ेगा। लोग एक दूसरे की प्रथाओं, संस्कृति, भाषा इत्यादि आसानी से अपने मोबाइल में पा सकेंगे व एक दूसरे के विचार समझेंगे। मीडिया की भूमिका में नित परिवर्तन हो रहा है जो सबको शोरगुल के पास ले जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह बदलेगा और एक सकरात्मक बदलाव इस स्थिति में होगा। साथ ही चर्चा से नियम आसान होंगे और न्यायपालिकाएँ जल्द न्याय की ओर अग्रसर होगी।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि हमारा देश इतिहास के एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर खड़ा है। कई चुनौतियाँ ज़रूर सामने हैं लेकिन हमारी युवा पीढ़ी एकजूट हो कुछ भी कर सकती है। आईए हम सब उनको सहयोग दें और भारत वर्ष को पुनः सोने की चिड़िया बना दे।

एडीई,

सी. वी. रमन नगर, बेंगलूरु

*****

''रेशम शब्दावली'' (परिवर्धित) (अंग्रेजी-हिन्दी) का विमोचन

केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा प्रकाशित ''रेशम शब्दावली'' का परिवर्धित रूप (अंग्रेजी-हिन्दी) का विमोचन बोर्ड के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियर के करकमलों से दिनांक 02.02.2022 को किया गया । इसमें रेशम क्षेत्र से संबंधित अनेक शब्दों को जोड़कर इसे समृद्ध करने का प्रयास किया गया है । 'रेशम शब्दावली' का प्रथम संस्करण 1998 में निकला था । यह प्रकाशन इसका द्वितीय तथा परिवर्धित संस्करण है । इसके लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सभी प्रमुख संस्थानों एवं संगठनों से शब्द आमंत्रित किए गए तथा प्रत्येक शब्दों पर चिंतन किया गया । इस सामूहिक प्रयास में राजभाषा कर्मचारियों की भूमिका भी सराहनीय रही है । मूल 'रेशम शब्दावली' में लगभग 2682 शब्द संकलित किए गए थे । परिवर्धित 'रेशम शब्दावली' में लगभग 995 नए शब्द तथा परिशिष्ट के रूप में वैज्ञानिक नाम तथा रोग एवं पीड़क आदि के लगभग 230 शब्दों को संकलित किया गया है । इसमें संदेह नहीं कि यह प्रकाशन संदर्भ-ग्राहियों, अनुवादकों, वैज्ञानिकों को हिन्दी रूपांतरण में सहायक सिद्ध होगा । शब्द माला तैयार करने में जिन शब्दों से इसे पिरोया गया है, उसमें सरलता, सहजता एवं सटीकता का विशेष ध्यान रखा गया है । यह परिवर्धित 'रेशम शब्दावली' वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित है ।

'परिवर्तन ही संसार का नियम है।'

-शिवम त्रिवेदी

द्वितीय पुरस्कार

भारत एक प्रगतिशील देश है तथा स्वतंत्रता के बाद से ही निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है । प्रत्येक क्षेत्र में भारत ने सकारात्मक बदलाव हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाए है, चाहे सामाजिक आर्थिक, वैज्ञानिक, पर्यावरण, शिक्षा व्यवस्था हो, या नागरिकों के जीवन स्तर के विकास संबंधी क्षेत्र हों । आगे आने वाले दस वर्षों में भी भारत उन्नति की ओर उन्मुख होकर, अपने सर्वांगीण विकास का विश्व में साक्षी बनेगा ।

आज का भारत प्राचीन समय के भारत देश से बहुत ही भिन्न है तथा समय के साथ-साथ हर क्षेत्र में विकसित हो रहा है। भारत एक विविधताओं से भरा देश है जिसमें पारंपरिक रूप से विभिन्न प्रकार की जलवायु, प्राकृतिक संपदाएँ, विपुल संस्कृति एवं जन संसाधन मौजूद है। आने वाले दशक में विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में काफी हद तक आत्मनिर्भर समुदाय, पूर्ण आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा | देश के विकास हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जिस तरह आपदा प्रबंधन, उपग्रह संचार, जलवायु परिर्वतन, जैव संसाधनों की निगरानी हेतु अपना योगदान दे रही है, उसमें और अधिक वृद्धि सुनिश्चित है। ऊर्जा के गैर-परंपरागत एवं स्वच्छ स्रोतों का विकास किया जा रहा है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, भू-तापीय ऊर्जा आदि से पर्यावरण में सुधार होगा तथा प्रदूषण में कमी आएगी । आधुनिक शिक्षा व्यवस्था डिजीटल माध्यम की ओर बढ़ रही है। साथ ही आवश्यक-तानुसार पाठ्यक्रम में सुधार एवं परिवर्तन भी किए जाएंगे। इससे भावी पीढ़ी को समकालीन एवं रोजगार-संबंधी प्रशिक्षण भी प्राप्त कराया जाएगा तथा देश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सकारात्मक बदलाव अपेक्षित है। समय-समय पर पारित कानूनों द्वारा जनजागरुकता को आधार बनाकर महिलाओं की सुरक्षा एवं जीवन स्तर में प्रगति वांछनीय है। आज महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे-से- कंधा मिलाकर चल रही हैं और इनकी संख्या तेजी से बढ़ रही है ।

नीति आयोग के अधीन देश के रुपांतरण हेतु त्रि (3) वर्षीय एक्शन प्लान के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र में छोटे-बड़े बदलाव होते जाएंगे जिनसे आने वाले दशक में विश्व में भारत की स्थिति और मजबूत हो जाएगी। साथ ही अल्प संख्यकों के कल्याण हेतु केंद्र सरकार का 15 सूत्री कार्यक्रम, गरीबों के लिए स्वरोजगार, ऋण-सहायता एवं सांप्रदायिक घटनाओं की रोकथाम हेतु किए गए प्रयास अवश्य ही फलीभूत होंगे। कुल मिलाकर, भारत सभी क्षेत्रों में और अपनी कला व संस्कृति, अपनी प्राचीन सभ्यता एवं आधुनिक विचारधारा के समावेश के साथ, प्रगतिवादी समुदाय के साथ विश्व की महाशक्तियों में शामिल होने की दौड़ में अधिक अग्रणी हो जाएगा।

किसी भी देश की संस्कृति समुदाय की आत्मा होती है। संतुलित रूप में आधुनिकत के मेल, वैज्ञानिक सोच का समावेश, योजनाओं का समुचित कार्यान्वयन तथा विभागों एवं सेवाओं के विकेन्द्रीकरण द्वारा भारत एक सशक्त राष्ट्र के रूप में परिवर्तित होगा।

परिवर्तन के नियमानुसार मेरी कल्पना में आने वाले दशक में भारत एक और अधिक शक्तिशाली देश के रूप में उभरेगा । स्वतंत्रता पश्चात प्राप्त उपलब्धियों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाते हुए, नागरिकों में असमानता को कम कर, एक स्वच्छ-आत्मनिर्भर तथा जागरूक देश की भूमिका में भारत सामने आएगा ।

आर-आर एस-सी दक्षिण, बेंगलूरु

*****

तृतीय पुरस्कार

भारत का भविष्य

-प्रमोद कुमार झा

स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले और पश्चात भारत की जन संख्या के लिहाज से कृषि पर निर्भरता 80% थी, परन्तु परंपरागत खेती के कारण हमें अनाज के मामले में आमनिर्भरता नहीं मिली, ऊपर से मानसून की मार कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि । कपास की खेती भारत में और कपड़ा मिल मैनचेस्टर में । बना बनाया कपड़ा वहाँ से आयातित होकर हमारे देश के बाजारों में बिकता था। ऊंचे दामों में हम अंग्रेजी शासन में कपड़ा खरीदते थे और देश की अर्थव्यवस्था का विकास नहीं होता था। शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास नहीं होता था, क्योंकि लॉर्ड मेकाले की अंग्रेजी शिक्षा नीति भारतीयों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में असक्षम भी, चिकित्सा व्यवस्था गरीबों की पहुँच से बाहर था। सड़क बदहाल थी, तो बिजली का कहीं पता नहीं था, सिवाय औद्योगिक क्षेत्रों में ही विद्युत आपूर्ति होती थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार हरित क्रांति, श्वेत क्रांति इत्यादी के माध्यम से जहाँ कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिक और तकनीकी से देश को अन्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया, वही प्राकृतिक विपदाओं जैसे अकाल, सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी दशाओं में अन्न को समुचित भण्डारण करके विदेश से अनाज उत्पादन को रोका। राष्ट्रीय नदियों का आपस में मिलन करने अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी मानसून जनित समस्याओं का हल निकाला गया है। प्रदूषण की रोकथाम हेतु वृक्षारोपण किया गया है तो वर्तमान में वन प्रतिशत में कमी न हो, इस हेतु अंधाधुंध वृक्षों की कटाई को रोका गया है। हमारे देश में पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए राष्ट्रीय हरित ट्रिब्युनल का गठन किया गया है। वृक्षारोपण से जहाँ भूमि प्रदूषण की रोकथाम की जा रही है, तो आवागमन के साधनों में बिजली संचालित सड़क परिवहन, CNG गैस संचालित वाहन पथ पर दिखते हैं, कारखानों, उद्योगों से होनेवाली वायु प्रदूषण को अत्यल्प किया जा रहा है। नदियों की सफाई करके जल प्रदूषण रोका जा रहा है तो ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाकर ध्वनि प्रदूषण रोका जा रहा है। कपड़ा उद्योग के विस्तार होने से देशी कुटीर उद्योग (हथकरघा) और रेशम, मखमल उद्योग का विकास हुआ है और हम रेशमी-मखमली-खादी कपड़ों को निर्यात करने लगे हैं। देशी शिक्षा का विकास हमें आयुर्वेद की ओर ले जाता है जहाँ आयुर्वेदिक तरीके से शल्य चिकित्सा की जाती थी। हर प्रकार की बिमारियों का निदान आयुर्वेद में है। अगले 10 वर्षों में हमारे देश में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत हर गॉव रौशन होगा, स्वर्णिम चतुर्भज योजना देश की हर गलियों को पक्की सड़कों से जोड़ देगा । प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना जहाँ स्वस्थ भारत का निर्माण करेगा वहीं प्रधानमंत्री सामाजिक सुरक्षा प्रदान करेगा। बेटी बचाओ, बेटी पढाओ योजना कन्याओं को शिक्षित करेगा, कन्या समृद्धि योजना के तहत बालिकाओं के उच्च शिक्षा संबंधी समस्या का हल होगा | प्रधान मंत्री जन धन योजना से बैंकिंग का विकास होगा और DBT पद्धति के कारण भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा। प्रधानमंत्री उज्जवला योजना से महिलाओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखा गया है, तो शौचालय निर्माण कर बीमारियों और सामाजिक अपराधों को नियंत्रित किया गया है । हमारा राष्ट्र विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में काफी तेजी से विकास कर रहा है जिसके कारण हम लोग अगले 10 वर्षों में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ स्मार्ट गाँवो का भी निर्माण करेंगे, दूसरे ग्रहों पर जीवन की संभावना को खोजने में सफल तो होंगे ही, आदित्य यान, गगनयान के द्वारा अदभुत सफलता पा लेंगें। 1947 से अल्पसंख्यकों और महिलाओं के विकास का प्रयास अगले 10 वर्षों में शत प्रतिशत पूर्ण होने की उम्मीद है। सामाजिक कुरीतियाँ, रूढ़िवादिता, बुराइयों का नाश होगा, अपराध नियंत्रित होंगे। चहुँ ओर वैज्ञानिकीय तकनीकी विकास से देश खुशहाल होगा। सांस्कृतिक पुर्नुत्थान होने से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा होने से भावी पीढ़ियाँ शिक्षा प्राप्त कर लेगी। कौशल विकास योजना के तहत जहाँ देश का कौशल निखरेगा, वहीं आत्मनिर्भर भारत योजना देश को स्वावलंबी बनाएगा । जहाँ भारत के हर घर में स्वच्छ जल नल योजना के द्वारा पहुँचेगा, वही गैस पाइप लाइन हर घर में गैस की पूर्ति करेगा। बायो ईंधन से वायुयान चालित होगा तो वायु प्रदूषण कम होगा, बुलेट ट्रेन के आने से दो स्थानों की लम्बी दूरी कम समय में सुरक्षित तय की जा सकेगी। ठोस व द्रवीय अवशिष्ट का प्रबंधन भी स्वच्छ भारत बनाएगा | स्वच्छ, सभ्य, शिक्षित व विकसित समाज का दर्शन होगा जहाँ अपराध, भ्रष्टाचार व कुरीतियाँ मुक्त होगा।

-वैमानिकीय विकास संस्थान, बेंगलूरु

राजभाषा की स्वीकार्यता - हिन्दी की प्रतिष्ठा को व्यावहारिक रूप देना बाकी

-सुयश कांति घोष

हिंदी को राजभाषा की संवैधानिक प्रतिष्ठा और मान्यता तो 1949 में ही मिल गई थी, किन्तु इसे व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाना अभी शेष है। इस संदर्भ में वाराणसी में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व है। यह अनुभवों से सिद्ध हो चुका है कि राजकाज में हिंदी के प्रयोग की धीमी गति को त्वरा प्रदान करने में केवल संवैधानिक प्रावधान या कानून ही सार्थक-सफल नहीं हो सकते ।

कानूनी प्रावधानों के अन्तर्गत पूरे देश को क, ख, एवं ग क्षेत्रों में बांटकर राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग और विभिन्न व्यावहारिक प्रतिबंधों जैसे राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत निर्धारित 14 प्रपत्रों को मूल या अनूदित रूप में हिन्दी में जारी करने के प्रावधान धीरे-धीरे अमल में लाए जा रहे हैं, परन्तु इस प्रावधान को पूर्ण रूप से व्यवहार में लाने के लिए समर्पित प्रयासों की आवश्यकता लंबे अर्से से अनुभव की जा रही है। कानूनी प्रावधानों के तहत ऐसे सभी प्रपत्रों- सूचना, निविदा, विज्ञप्ति, कार्यवृत्त, आदेश, नामपट, ज्ञापन, संकल्प, अधिसूचना आदि को राजभाषा में न जारी करना दण्डनीय है, किन्तु व्यवहार के स्तर पर यह मान्यता महत्व रखती है कि दंड के माध्यम से राजभाषा को शत-प्रतिशत लागू करना उचित और संभव नहीं है।

प्रयोजनमूलक भाषा प्रयोग के स्तर पर कर्मियों/ अधिकारियों में एक लगाव या समर्पण की भावना उत्पन्न करना दंड से कहीं अधिक प्रोत्साहन से संभव है। भारत संघ गणराज्य की भाषा हिंदी धारा 348 में उच्च और उच्चतम न्यायालयों में कामकाज, दावे, बहस और निर्णयों की भाषा के रूप में अंग्रेजी को मान्यता दी गई। इसके अपवाद सामने आ रहे हैं। कुछ समय पूर्व जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त ने हिंदी में चर्चित फैसला सुनाया तो न्याय-पालिका में एक नई भाषाई चेतना का संचार हुआ था। हाल में चेन्नई में राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने भारतीय भाषाओं में न्याय और निर्णय उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

भारत जैसे भाषा-संस्कृति की विविधता वाले देश में व्यवहार के धरातल पर एक राजभाषा की स्वीकार्यता अपेक्षाकृत अत्यंत कठिन कार्य रहा है। महात्मा गांधी ने "राजभाषा, बिना राष्ट्र गूंगा है," कहकर जिस चुनौती का उल्लेख किया था, उसका हल ढूंढने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव राजभाषा को लागू किया जाना है। बिहार, हरियाणा, हिमाचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, अंडमान निकोबार द्वीप समूह को 'क' और गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दमन-दीव, दादर नगर हवेली को 'ख' तथा इसके अतिरिक्त शेष भाग को 'ग' क्षेत्र में विभाजित कर राजभाषा संबंधी व्यावहारिक नियम कानून बनाए गए हैं, पर अभी 'क' क्षेत्र वाले राज्यों में ही राजभाषा नियमों को लागू करने की शत-प्रतिशत उपलब्धि की स्थिति व्यावहारिक रूप नहीं ले सकी है ।

भाषा की अपार शक्ति को ध्यान में रखकर हमारे संविधान के उपबंध 351 में केन्द्र सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह हिंदी भाषा के विकास के लिए सतत कार्य करेगी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की सहायता से अभिप्रेरित केन्द्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय वाराणसी सम्मेलन को संकल्प सम्मेलन कहना उचित होगा। राजभाषा और राष्ट्रभाषा का प्रश्न जटिल अवश्य है परन्तु इसका हल असंभव नहीं। दुनिया के केवल एक चौथाई देशों की ही अपनी संविधान घोषित राष्ट्रभाषा है। बीते सात दशकों में देश में हिंदी के लिए एक सकारात्मक परिवेश बना है। इसे और मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। भाषा, मानवीय व्यवहार और संस्कृति निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है। यह परिवर्तन समय साध्य है। आज भारत में हिंदी और राजभाषा हिंदी की जो स्थिति है, उससे कहीं अधिक कमजोर और नगण्य स्थिति अंग्रेजी की इंग्लैंड में फ्रांस के आधिपत्य के बाद भाषाई परिवर्तन और संक्रमण का दौर प्रभावी हो गया और राजकाज की भाषा फ्रेंच हो गई। सभी सरकारी नौकरियों में फ्रेंच की अनिवार्यता ने अंग्रेजी को पीछे धकेल दिया था। एक दौर था जब अंग्रेजों के लिए फ्रेंच भाषा का प्रयोग सम्मान का विषय बन गया था। खुद अंग्रेज सिर्फ नीचे तबके के अशिक्षितों, श्रमिकों, नौकरों और बन्धुआ मजदूरों से अंग्रेजी में बातें करते । अंग्रेजी एक तरह से गंवारों की भाषा समझी जाती थी।

सहा. निदेशक (प्र.व.ले.) (सेवानिवृत्त)
सिविल लाईन, बंगालीपारा रायगढ़ (छ.ग.)
496001 मो.नं. 9993786929

"कोविड-19 महामारी से मिली सीख"

-शबाना मोहम्मद ज़हीर

जैसे जिंदगी का हर लम्हा हमें कुछ सिखाता है,
इस कोरोना काल ने भी हमें कुछ शिखाया है।

कैद में रहने की तकलीफ जानकर की,
शायद अब इंसान समझ पाया है।

कहीं एक के लिए पूरे मोहल्ले ने हाथ उठाया है।
तो कुछ ने अपनों की लाशो को भी ठुकराया है।

कहीं कोई सैकड़ों मील पैदल ही घर लौट आया है,
तो कहीं गाडियां भर भूखों को खाना बंटवाया है।

कहीं घंटी, कहीं थाली, कहीं शंख का नाद सुनाया है,
ऐसे ही हमने घरों से कोरोना वीरों का हौसला बढ़ाया है।

अंधकार में प्रकाश के लिए हमने दीप जलाया है।

इस काल में लोगों ने भारतीय संस्कृति को अपनाया है।

रिश्तों में दूरी नहीं बल्कि, रिश्तो को दूर से निभाया है,
ऐसा कर हमने खुद को कोविड से बचाया है।

लॉकडाउन में एहतियात बरती,
गिलोय तुलसी का काढ़ा पीकर,
योग को अपनाया है इस संकट काल में,

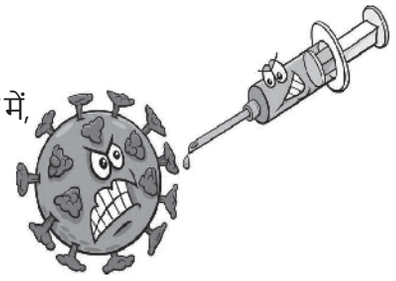

एक ख्याल आया है,
इंसानियत रहे जिंदा,
यही हमारी संस्कृति ने सिखाया है।

अधीक्षक (प्रशा.)
केन्द्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

कोरोना के दुष्प्रभाव

-सुलेखा कुमारी

लॉकडाउन करवाया कोरोना ।
तो अन्न के लिए तरसाया कोरोना ॥
नंगे पैर कोसों दूर पैदल चलवाया कोरोना ।
तो किसी को भूखे तड़पाया कोरोना ॥
हर रोज कमाकर खाने वाले को ।
खून के आंसू रूलाया कोरोना ॥
अपनी जान जोखिम में रखकर बचाया मरीजों को,
ऐसे ईश्वर जैसे डॉक्टरों से मिलवाया कोरोना ॥
बंद रखना पड़ खुद को, ऐसी नौबत लाया कोरोना ।
ना हो सके इसका इलाज, ऐसा रूप दिखाया कोरोना ॥
किसी को घर से बेघर किया कोरोना
रिश्तेदारों को घर में आने से रोका कोरोना ॥
अपने-अपनों को दूर करवाया कोरोना ।
गैरों ने परायों को खाना खिलाया कोरोना ॥
किसी का काम छुड़ाया कोरोना ।
तो किसी को 'वर्क फ्रम होम' करवाया कोरोना ॥
मास्क पहनना सिखाया कोरोना ।
लगाना सेनिटाइजर सिखाया कोरोना ॥
बैठक से दूर करवाया कोरोना ।
ऑन लाइन वेब से जुड़वाया कोरोना ॥
स्कूल से बच्चे को दूर करवाया कोरोना
पढ़ना ऑन लाइन सिखाया कोरोना ॥

फास्ट फूड खाने से बचाया कोरोना ।
काढ़ा पीना सिखाया कोरोना ॥
भुला दिया टहलना कोरोना ।
सिखा दिया, योगा कोरोना ॥
बाजार जाने से रोका कोरोना
ऑन लाइन शॉपिंग करना सिखाया कोरोना ॥
लेन-देन नकदी छुड़ाया कोरोना ।
ऑन लाईन पेमेंट सिखाया कोरोना ॥
मरते थे तो हर रोज, किसी न किसी कारण ।
उस पे ठप्पा लगाया कोरोना ॥
ऐसी महामारी फैलाया कोरोना ।
बहुतों को न मिल सका शमसान में ठिकाना ॥
किसी को विधवा बना दिया कोरोना ।
तो किसी को आबाद किया कोरोना ॥
इंसान को घर में कैद किया कोरोना
तो जानवरों को आजाद किया कोरोना ॥
बच्चों को सुनते थे, लगवाते टीका ।
अब बुजुर्गों को भी, लगवाया टीका कोरोना ॥

आशुलिपिक ग्रेड-II
हिन्दी अनुभाग,
केन्द्रीय कार्यालय, बेंगलूरु

मैं

-उमा पी. के.

कई दिनों तक मैं एक कीड़ा बनकर,
मूंगे के जंगल में सोया,
उन दिनों बिना अँधेरे और उजाले के,
फिर धीरे-धीरे घसीटते हुए
कनेर के एक पौधे की पत्ती के नीचे,
एक बहु प्यारी छोटी घंटी की तरह,
उमड़ती हवाओं में कूदते और नाचते,
मैं तब बिना गिरे रह गया।
एक दिन जब सूरज निकला,
नए निकले पंखों को फड़फड़ाते हुए।
मैं बाहर आया और बन गया,
एक सुंदर धड़कती हुई मक्खी।
मैं फिर जाकर गुलाब के फूल पर बैठ गया,
जो खिला था और चमक रहा था,
और खुद को जोड़ते हुए वहीं बैठ गया,
और भंवरे जैसा मंडराते हुए
मैं अपना समय फूल से शहद पीने में बिताता हूं।

-अधीक्षक (प्रशासन)
केरेप्रौअसं, बेंगलूरु

बालकनी वाली आजादी

मोनिका मुरली

घर आलीशान
और उससे भी आलीशान
घर का लोन, घर की बालकनी
बालकनी से दिखता बगीचा

कई दिनों से
मन में उमड़ उमड़ कर
अनेक ख्याल दौड़ रहे हैं
इनको पन्नों में उतारने ही वाली थी.. दिल्ली में पधारे
हुए भी ना चार महीना
जीवन का पृष्ठ
बदल दिया कोरोना

सोशल मीडिया ने
करा है माथा खराब
लेखन ख़तम भी न हुआ
बोला - यह तो वैराल है मेमसाब
आज तो हम भी ठान लिए
चाई पे चाई की चुस्की भी मार लिए

याद आती है गुज़रे हुए
शनिवार और रविवार
अब बचा है सिर्फ
शनि काल और कड़कती धूप में
रवि का वार
6 सप्ताह हो गए
सड़क की सूरत देखे
बालकनी वाली आजादी
मकबूल है अब हमें। बालकनी वाली आजादी? आसमान में उड़ते पंछी
पता नहीं चहक रहे है
या मेरी इस "आज़ादी" पर
खिलखिला रहे है

खैर
घर तो है आलीशान
उससे भी आलीशान
घर की लोन
घर की बालकनी
इस सुविधा में
अब ना कोई रुकावट है
न खेद

इसका कीजिए भरपूर उपयोग
क्या पता समय
सूद स्वरूप
हम सब को रिहा कराने आया हो निरोग ।

-कुतुब ग्रीन अपार्टमेंट्स
मेहरौली, नई दिल्ली

वात्सल्य की उपादेयता

-डॉ मणिकान्त मिश्र

लघु-वय बालकों के प्रति उत्पन्न नैसर्गिक प्रेम-भाव का नाम वात्सल्य है। वात्सल्य भाव से प्रेरित एवं पुष्ट होने के कारण काव्यशास्त्र में 'वात्सल्य' को पृथक रस माना जाने लगा है। संस्कृत के प्राय: आचार्यों ने इसे पृथक रस के रूप में मान्यता न देकर श्रृंगार रस में ही परिगणित किया है, तथापि आ0 भोज एवं आ0 विश्वनाथ आदि कतिपय आचार्यों ने स्वतंत्र रस के रूप में मान्यता दी है। लघु-वय बालकों को देखने से उद्‌बुद्ध वात्सल्य अथवा वत्सलता रूपी स्थायी भाव ही विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से वात्सल्य रस के रूप में अभिव्यक्त होता है। इसमें छोटे बच्चे आलम्बन, उनकी चेष्टाएँ उद्दीपन, आलिंगन, अंग स्पर्श, सिर का चूमना, आनन्दाश्रु आदि अनुभाव, शंका, हर्ष, गर्व, औत्सुक्य, चिन्ता आदि संचारी भाव हैं। माधुर्य एवं प्रसाद गुण ,वैदर्भी एवं पांचाली रीति के साथ उपनागरिका एवं कोमलता वृति इस रस के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। संयोग और वियोग के भेद से इसके दो भेद माने जा सकते हैं। विशेष संवेदनशील होने के कारण सहानुभूति वश हमारे आचार्यों ने 'एको रस: करुण एव निमित भेदात्' कहा होगा या विशेष प्रभावकारी होने के कारण श्रृंगार को रस-राज की संज्ञा दे डाली ,किन्तु वस्तुत: सद्य: रस संचरण करने वाला ब्रह्मानन्दसहोदर रस तो वात्सल्य ही है।

वात्सल्य-वृति की अनुभूति विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों के हिस्से में पड़ी है-ऐसा मानने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। जिस प्रकार साहित्य का कोई भी रस सहृदय के हृदय को ही द्रवित करता है, उसी प्रकार वात्सल्य रस की निष्पत्ति उसी के हृदय में होगी जिसके पास समय होगा। कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति सेवा मुक्त हुआ या अवकाश प्राप्त किया। अब जिसके पास अवकाश है, भला उसके हृदय में वात्सल्य का संचार न होगा, तो क्या मशीन की तरह सतत् क्रिया शील अथवा घड़ी की सूई के निर्देश पर दौड़ने वाले के हृदय में ? सत्य बात तो यह है कि पोता-पोती और नाती-नतनी को खेलाने, खिलाने और बहलाने की युक्ति जितना दादा-दादी और नाना-नानी के पास है, उससे ज्यादा किसके पास होगी ? अरे भाई, इनके जीवन का शेष समय अब उनके लिए ही तो होना चाहिए। 'वह दन्तुरित मुस्कान' को देखकर बाबा नागार्जुन ने जो अनुभव किया, वह अनुभव तो बाबा के लिए ही सम्भव है। वैसे भला बाल सुलभ चेष्टा से कौन सहृदय होगा जो रसानुभूति का अनुभव न करेगा ? कृष्ण की बाल लीला, राम का बाल वर्णन और वसन्त का बाल रूप भक्त कवियों को जितना रमाया है, उतना श्रृंगार वर्णन शायद नहीं ; क्योंकि श्रृंगार वर्णन में मर्यादा का ख्याल अपेक्षित है। दूसरी तरफ बाल वर्णन तो वह क्रीड़ा-क्षेत्र है, जहाँ खूब चौकड़ी भरी जा सकती है।

छोटे बच्चे तो वह काम कर देते हैं जो बड़े-बड़े समर्पित भक्त और माँ लक्ष्मी के लिए भी असंभव था। हिरण्य कशिपु के उद्धार के लिए श्री हरि ने नृसिंह का रूप धारण कर जिस भयंकर क्रोध को धारण किया, उसे देखकर त्रिलोक काँप उठा। उनके इस रूप को देखने के लिए दर्शनार्थियों की भीड़ लग गयी। लेकिन किसी में हिम्मत नहीं थी कि उनके निकट जा सके। देवगण दूर से ही ढोल - नगारे बजाते हुए पुष्प-वृष्टि करते रहे ; अप्सराएँ नृत्य करने लगीं। इसी बीच ब्रह्मा, इन्द्र, शंकर आदि देवगण, ऋषि, पितर, सिद्ध, विद्याधर, महानाग, मनु, प्रजापति, गन्धर्व, चारण, यक्ष, किम्पुरुष, वेताल, किन्नर एवं सुनन्द, कुमुद जैसे पार्षद सभी दूर से ही सिर पर अंजलि बाँधे स्तुति करते रहे, फिर भी जब उनका क्रोध शान्त न हुआ तो देवताओं ने माँ लक्ष्मी को उनके पास जाने और क्रोध शान्त कराने का निवेदन किया। हिम्मत बाँध आगे बढ़ने पर भी भयवश वे उनके पास न जा सकीं। उन्होंने भी कभी उनका ऐसा रूप न तो देखा था और न सुना था।

अन्त में ब्रह्माजी ने पास खड़े बालक प्रह्लाद से कहा-" बेटा! प्रभु के पास जाकर उन्हें शान्त करो।" आज्ञा को शिरोधार्य कर नन्हा-सा बालक प्रह्लाद भगवान के चरणों के पास पृथ्वी पर लोटने लगा। फिर क्या था - भयंकर रूप धरी श्री हरि का हृदय दया से भर गया।

उन्होंने सस्नेह प्रह्लाद के मस्तक पर हाथ फेरकर अभयदान दिया। फलत: प्रह्लाद के शेष बचे कुसंस्कार भी तत्काल तिरोहित हो गये –

ब्रह्मादय: सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धा:
सत्त्वैकतान मतयो वचसां प्रवाहै:
नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रु:
किं तोष्टुमर्हति स में हरिरुग्रजाते: ।।

(ब्रह्मा आदि देवता, ऋषि-मुनि और सिद्ध पुरुषों की बुद्धि निरन्तर सत्त्वगुण में ही स्थित रहती है । फिर भी वे अपनी धारा–प्रवाह स्तुति और अपने विविध गुणों से आपको अब तक भी सन्तुष्ट नहीं कर सके । फिर मैं तो घोर असुर-जाति में उत्पन्न हुआ हूँ । क्या आप मुझसे सन्तुष्ट हो सकते हैं ? श्री मद्भागवत महापुराण 7-9-8) चमत्कार-पूर्ण ऐसा प्रभाव बालक से ही सम्भव है जो बहुविध शुभ और अशुभ ; सुखात्मक और दुखात्मक भावों से ऊपर उठकर समदर्शी है । वहाँ न भय है, न राग, न द्वेष ।

बाल हठ भी लोक-विदित है । उसे बिना झुंझलाये सुनना और उनके अनुरूप आचरण करना वृद्ध जनों से ही सम्भव है । उनके प्रश्न और हठ होते भी तो ऐसे ही हैं । जब मेरी पौत्री ने पूछा कि कौआ काला क्यों होता है ? तो मैं निरुत्तर ही नहीं हुआ, माथा चक्कर खा गया । सोचने लगा इसका निदान कैसे करूँ ? टाल गया – अगले दिन बताऊँगा । दो-चार दिनों तक प्रश्न की पुनरावृति वह करती रही , तब एक कहानी याद आयी – '' ब्रह्मा जी सभी पक्षियों को रंग विभाजन कर रहे थे । काक बहुत देर से पहुँचा, उनके पास केवल काला रंग बचा था, सो उन्होंने कौए को दे दिया । इसलिए वह काला है ।'' प्रश्न का पटाक्षेप तो हो गया । अब कोई जन्तु-विज्ञानी ही शायद इसका सही निदान करें । वास्तविक उत्तर तो आज भी मेरे पास नहीं है ।

इस प्रकार बच्चों के साथ मनुहार करते हुए संयोग वात्सल्य का जो अनुभव होता है, उसे कोई अनुभवी ही समझ सकता है । शब्दों में व्यक्त करना शायद सम्भव नहीं । दूसरी तरफ वृद्धाश्रम में बैठे वृद्ध-जन कल्पना द्वारा जो अनुभव करते हैं या कहे ऐसी अनुभूतियाँ उन्हें विकल करती है—वह है विरह जन्य वात्सल्य । कोई समर्थ साहित्यशास्त्री या मनोवैज्ञानिक इसके भेदोपभेद या विविध दशाओं का चित्रण कर सकते हैं । मैं तो आज के कर्ता-धर्ता, समर्थ शक्तिमान दम्पतियों से यही कहना चाहता हूँ कि अपने घर के वृद्ध पुरुष को वृद्धाश्रम न भेजकर अपने घर के एक कोने को वृद्धाश्रम का रूप दें और उन्हें वात्सल्य का अनुभव करने दें, साथ ही स्वयं भी वात्सल्य का आनन्द प्राप्त करें । यह सुख सभी सांसारिक सुखों से पृथक, अद्भुत एवं श्रेष्ठ है । इसलिए हमारे वैयाकरणों ने लिखा है –'' अर्द्ध मात्रा लाघ्वत्वेन पुत्रोत्सव: मन्यते वैयाकरणा: ।'' सच है पुत्रोत्सव से बढ़कर बड़ा सुख संसार में नहीं है । सन्तानोत्पति के अवसर पर गाये जाने वाले गीत 'सोहर' को सुनानेवाली के लिए मगही (मागधी) में बड़ी उदारता के साथ आशीर्वाद दिया जाता है --

'' जे यही सोहर गाबही, गाई सुनाबही हेऽ ।
ललना जनम-जनम अहिवात, पुतर फल पावही हे ।।''

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी बेटी के साथ वात्सल्य का अनुभव करते हुए स्वयं बच्ची बन जाती हैं । मानो उनका बचपन ही बेटी के रूप में उन्हें प्राप्त हो गया । जब वे लिखती हैं ---''बचपन बेटी बन आया।'' और तो और माँ कौशल्या को हरि का चतुर्भुज रूप से ज्यादा प्रभावकारी उनका बाल- रूप ही लगा, तभी तो उन्होंने प्रभु से उस रूप को त्यागकर बाल रूप धारण करने का निवेदन किया हैं ---

''माता पुनी बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।''

यह सुख मात्र सुखद और अनुपम ही नहीं परम अनुपम है । भला इसकी तुलना किससे की जा सकती है ?

बच्चो के प्रति जो दया का भाव है, उसकी शिक्षा कहीं अलग से नहीं दी जाती । फिर भी क्रूर से क्रूर व्यक्ति के मन में भी वात्सल्य दया का रूप लेता है । महियसी महादेवी की सोना की माँ को मारने वाला व्याधा कोमल-सुनहली सोना को उठाकर घर ले आता है । दुर्योधन अपने परम वैरी पाण्डवों की संतानों की हत्या करने वाले अश्वत्थामा के कुकृत्य से अप्रसन्न होता है । वह सोचता है कि यदि ये बच्चे रहते तो कम से कम मेरा भी तो तर्पण करते । बाल हत्या सबसे बड़ा पाप माना जाता है और उसके लिए न तो कोई प्रायश्चित है और न समाज पापी को क्षमा ही करता है । ऐसा होना स्वाभाविक है क्योंकि पितृ- ऋण से उऋण करने वाली ये संताने ही तो हैं ।

पुनश्च कहानी का उत्स खोजते हुए हमलोग जिस लोक-कथा के पास जाते हैं; उसका स्रोत दादी-नानी के पास ही मिलता है । इस तथ्य को कदापि विस्मृत नहीं किया जा

सकता । इसका कारण यही है कि जब तक वृद्ध जन बच्चों के पास होते हैं तब तक उन्हें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं सताती, आनन्द के साथ समय व्यतीत होता है । इसके साथ ही बात-बात में मनोरंजन करते हुए बच्चों को संस्कारगत शिक्षा देना सहज संभव हो जाता है । इस प्रकार वात्सल्य की उपादेयता को सहज स्वीकारा जा सकता है । अन्तत: उत्तर-भाद्र नक्षत्र से गुजरनेवाले वयस्कों से मैं कहना चाहता हूँ कि इस रस का प्रयोग कीजिए किसी रसायन की आवश्यकता नहीं होगी । वस्तुत: वृद्धावस्था में उत्पन्न होनेवाले अनेक रोगों की औषधि है –वात्सल्य ।।

फ्लैट न. 46017, सोभा ड्रीम एकड़,
ट्रॉपिकल ग्रीन्स-विंग 46, बालगेरे,
पनाथुर रोड, बेंगलूरु-560087, कर्नाटक

*****

केन्द्रीय रेशम बोर्ड राजभाषा शील्ड वितरण समारोह

दिनांक 01.09.2021 को केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में केरेबो के कार्यालयों एवं केरेबो मुख्यालय के अनुभागों के लिए वर्ष 2019-20 के केरेबो राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र का वितरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें डॉ. नरेन्द्र रेबेल्ली, निदेशक (वित्त) एवं डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक (तक) के करकमलों से शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र का वितरण किया गया।

केरेबो राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र प्राप्तकर्ता कार्यालयों की सूची निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	कार्यालय का नाम
1	**उपनिदेशक/सहायक निदेशक (रा.भा.) वाले कार्यालय** राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूरु (ग)- प्रथम स्थान मूगा रेशमकीट बीज संगठन, गुवाहाटी (ग)- द्वितीय स्थान
2	**वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) वाले कार्यालय** क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली (क)-प्रथम स्थान बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर (क)-द्वितीय स्थान
3	**क एवं ख क्षेत्र में स्थित हिन्दी पद रहित कार्यालय** बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, बालाघाट, मध्यप्रदेश (क)-प्रथम स्थान रेशमकीट बीज उत्पादन केन्द्र, प्रेमनगर, देहरादून, उत्तराखण्ड (क)- द्वितीय स्थान
4	**ग क्षेत्र में स्थित हिन्दी पद रहित कार्यालय** क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी - प्रथम स्थान बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, सुंदरगढ़, ओडिशा- द्वितीय स्थान
5	**बोर्ड मुख्यालय के अनुभाग** स्थापना अनुभाग - II व III, केरेबो, बेंगलूरु- प्रथम स्थान प्रचार अनुभाग, केरेबो, बेंगलूरु- द्वितीय स्थान

शील्ड वितरण के पश्चात निदेशक (वित्त) ने सभी पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता कार्यालयों को बधाई दी और सभी से आग्रह किया कि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के पूरे प्रयास किए जाएं । निदेशक (तक.) डॉ. शिवप्रसाद ने समारोह में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा व्यक्त की कि वे राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में अपना सतत सहयोग जारी रखें ।

गांधी की प्रासंगिकता

- कामेश्वर पाण्डेय

आज के परिप्रेक्ष्य में बार बार गांधी की याद क्यों आती है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। महात्मा गांधी एक साधारण व्यक्ति नहीं थे। अपने आप में एक विचार थे और विचार चाहे जैसा भी क्यों न हो, कभी मरता नहीं है। गांधी की हत्या एक सम्पूर्ण विचारधारा की हत्या है। गांधी का भौतिक नश्वर शरीर तो गोली खाकर खाक में मिल गया लेकिन उनका सपना एवं आदर्श तथा दूरदर्शिता आज भी अमर है। इसकी पुष्टि उनकी अमर कृति "हिन्द स्वराज" से हो जाती है। दक्षिण अफ्रीका से समुद्र के रास्ते वे जब लौट रहे थे तो उनके मनो मष्तिष्क में भारत का स्वरूप उभर कर आया और उसी को वे सपने में संजोकर रखे, उसको साकार रूप देने का प्रयास करते रहे। वास्तव में अंग्रेजों के चंगुल से भारत को आजाद करने का जो संकल्प गांधी ने लिया था उसका स्वरूप उनके आचार-विचार एवं जीवन शैली से काफी मिलता जुलता है। विद्यार्थी जीवन में सत्य बोलने के संकल्प से अहिंसा की उत्पति हुई और उसे अपना हथियार बनाकर फिरंगियों से लड़े और अंत में विजयी हुए। जब अकेला गांधी इस संकल्प को लेकर चले थे तो कई गरम दल के नेताओं का कोप भाजन बनना पड़ा था। यहां तक कि टूटने की स्थिति तक आ गयी थी लेकिन फिर लोगों ने उन्हें समझा एवं समवेत भाव से लड़कर भारत को आजादी मिली। आजादी के छः महीने तक भी हम उनको सह न सके और एक मूर्तिमान सत्यव्रती की हत्या हो गई। हत्या क्यों हुई उसकी सत्यता की तरफ मैं नहीं जाना चाहता हूँ क्योंकि उसको स्पर्श करने पर मैं जो कहना चाहता हूँ उससे विपन हो जाऊँगा। अतः मैं उनके आदर्शों में, सपनों में ही गांधी को समझने परखने एवं स्पर्श करने की चेष्टा करूँगा।

उदारमना गांधी का विचार समष्टिगत भावना से ओत प्रोत था। वे व्यक्तिवादी विचारधारा से ऊपर उठकर समस्त मानव कल्याण की बात सोचते थे। उनके मन में धर्म एवं जाति के आधार पर समाज को बांटने की बात नहीं थी। सभी धर्मों का सम्मान, समादर करते हुए समाज और राष्ट्र के विकास की कल्पना ही उनका मूल मंत्र था। कुछ यही कारण है कि अछूतों को उन्होंने 'हरिजन' कहा और जीवन भर उनकी यह कोशिश रही कि उस समाज को भी उच्च वर्ग में समान हिस्सेदारी मिले तभी संतुलित समाज एवं संतुलित हिन्दुस्तान की रूपरेखा तैयार होगी। उनका प्रसिद्ध भजन इसी बात का परिचायक है। हम तो क्रोध में आकर एक पक्षीय निर्णय लेकर संत स्वरूप महापुरुष को मार दिये लेकिन वह मरा नहीं आज भी हमारे जेहन में अमर है। तभी तो हर जगह हम उन्हें याद करते हैं। उन्हीं के आदर्शों का उदाहरण देते रहते हैं। हम उन्हें चाहकर भी भूल नहीं रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के महान निबंधकार साहित्यकार डा, हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'शिरीष के फूल' में 'अवधूत' की जो कल्पना की है उसमें गांधी का ही मूर्तिमान व्यक्तित्व है। तभी तो उन्होंने कहा है कि दिन दस फूला फूल के खंखड़ भया पलास। उनको चुनौती देने वाले नेताओं की तुलना उन्होंने पलास के फूल से की है। गांधी की यह मंशा कभी भी नहीं थी कि उन्हें लोग डर से पूजें या उनके व्यक्तित्व की पूजा हो। उनका मन सर्वथा जन कल्याण में लगा रहता था। एक बात जरूर है कि गुलामी उन्हें भी सालती थी वे भी खुले आसमान में सांस लेना चाहते थे। मैकाले की शिक्षा नीति का उन्होंने खुलकर विरोध किया एवं भारतीय संस्कृति को हमेशा ऊपर माना। विंसटन चर्चिल ने पत्र लिखकर गांधी से पूछा था कि "Can you suggest the name of a book which is selection of human duties?" गांधी का जवाब था "you go through the book (Ram Charit Manas) written by Goswami Tulsi Das which is selection and collection of human duties". ऐसे विचार थे महात्मा गांधी के। वे भारतीय संस्कृति को सर्वोत्तम मानते थे और अपने दृष्टीकोण एवं दर्शन से भारतीयता की गरिमा को बनाये रखना चाहते थे। एक बार आजादी के बाद किसी ने गांधी जी से पूछा था कि अगर फिर से अंग्रेज हिन्दुस्तान में बसना चाहें तो क्या वे स्वीकार्य है। गांधी जी का उत्तर था 'अंग्रेजियत छोड़कर अगर वे रहना चाहते हैं तो स्वीकार्य है।' ऐसे स्वतंत्र एवं उदार चित्त वाले गांधी जी थे जिनका सम्पूर्ण विश्व ने लोहा माना। हरिजन को वैष्णव जन मानकर जिस महानता का परिचय गांधी जी ने दिया वह आज भी अनमोल है। धर्म, संस्कृति, आचार विचार एवं शिक्षा में समदर्शी विचार रखने वाले गांधी जी कुछ इन्हीं कारणों से आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। संपूर्ण मानव संस्कृति के युग पुरोधा राम कृष्ण की धरती पर जन्मे मर्यादा पुरुषोत्तम

राम ने जिस आदर्श और मर्यादा का सम्यक निर्वहन किया वह हमारे पूर्वी दर्शन (Eastern Philosophy) का अमर धरोहर है।

इन सभी बातों का गांधी जी के व्यक्तित्व पर पूरा असर रहा और उसी लीक पर चलकर गांधी ने अपना चरित्र निर्माण किया और उसी के परिप्रेक्ष्य में समस्त भारत भूमि को बढ़ते देखना चाहा।

आज विज्ञान की प्रगति ने हमारा जीवन सहज, सुलभ और आनंददायक बना दिया है। सुख सुविधाओं का अम्बर लगा दिया है लेकिन इसके बावजूद भी उस बूढ़े अवधूत की याद हमें हमेशा आती है एवं आती रहेगी, यही उनकी अमरता है। इसी कारण गांधी हमारे हृदय में सत्य की प्रतिमूर्ति के रूप में विराजमान हैं और चिरकाल तक हमें विपुल उन्मेष प्रदान करते रहेंगे। इन्हीं कारणों से गांधी की प्रासंगिकता सार्थक है।

पूर्व राजभाषा अधिकारी -- हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

"पता ही नहीं चला"

- युगल कुमार श्रीवास

बीता बचपन, गई जवानी,
क्या पाया, क्या खोया । पता ही नहीं चला ।

कल बेटे थे, कब ससुर हो गये,
कब पापा से, नानु बन गये । पता ही नहीं चला ।

कोई कहता सठिया गये,
कोई कहता छा गये, क्या सच है । पता ही नहीं चला ।

पहले मां बाप की चली, फिर बीबी की चली,
फिर चली बच्चों की, अपनी कब चली । पता ही नहीं चला ।

बीबी कहती, अब तो समझ जाओ
क्या समझूं, क्या न समझूं न जाने क्यों । पता ही नहीं चला ।

दिल कहता जवान हूँ मैं, उम्र कहती है नादान हूँ मैं,
इस चक्कर मे कब घुटने घिस गये। पता ही नहीं चला।

झड़ गये बाल, लटक गये गाल,
लग गया चश्मा बदल गया चेहरा | पता ही नही चला ।

समय बदला, मैं बदला, दुनिया बदली
बदल गई मित्र मंडली कितने रह गये मित्र। पता ही नहीं चला।

कल तक अठखेलियों करते थे बचपन के मित्रों के संग,
कब सीनियर सिटिजन के संघ में आ गये। पता ही नहीं पता |

बहु जमाई, नाती, पोते, खुशियां आई.
कब मुस्कुराई उदास जिंदगी। पता ही नहीं चला ।

21 से 60 तक का सफर है,
जी भर के जी ले प्यारे, पता ही नहीं चला।

फिर न कहना कि प्यारे.....कि पता ही नही चला।

सहायक अधीक्षक (प्रशा.)
बुनियादी तसर रेशम कीट बीज संगठन, बिलासपुर, छ.ग.

हृदय की विशालता

- कामेश्वर पाण्डेय

मनुष्य ज्ञान, स्मृद्धि, तेज, बल आदि को जन्म के साथ लेकर पैदा नहीं होता है। परिस्थिति, अवसर और परिवेश के कारण वह ऊँची से ऊँची चोटी को प्राप्त करता है। उसके बड़प्पन का अंकन उसके धन और ऐश्वर्य से नहीं होनी चाहिए बल्कि उसका अंकन उसके हृदय की विशालता से होनी चाहिए। एक आदमी धनवान हो सकता है लेकिन इन्सान नहीं। ठीक उसी प्रकार एक आदमी इन्सान हो सकता है लेकिन धनवान नहीं। इन्सान होने में इन्सानियत की अहम भूमिका रहती है जबकि धनवान होने में सुअवसर एवं परिस्थिति की अहम् भूमिका रहती है। दोनों का मापांक पृथक-पृथक है। एक मेजरिंग रॉड से दोनों को नहीं मापा जा सकता है।

दुनिया के सबसे धनवान व्यक्ति बिल गेट्स (माइक्रोसॉफ्ट) से एक बार न्यूयार्क हवाई अड्डे पर पत्रकारों ने पूछा- "क्या आप से भी कोई धनी व्यक्ति इस दुनिया में है?" बिल गेट्स ने उत्तर दिया "हां! न्यूयार्क एयरपोर्ट पर एक पेपर भेंडर मुझसे धनी है।" पत्रकार अवाक् रह गये और पूछे - "वो कैसे सर!" बिल गेट्स ने कहा "एक दिन मैं न्यूयार्क हवाई अड्डे पर कहीं जाने के लिए आया। मेरी इच्छा हुई कि अखबार पढ़ूँ। मैंने भेंडर से अखबार ले ली लेकिन देखा कि मेरे पास पैसे (चेंज) नहीं हैं। मैं लगे हाथ अखबार लौटाते हुए कहा सौरी, मेरे पास पैसे नहीं हैं।" उस भेंडर ने मुस्कुराकर कहा "कोई बात नहीं, पेपर पढ़ लीजिए।" मैं उसके इस आग्रह को नकार न सका। काम की व्यस्तता में मैं वह घटना भूल गया। फिर तीन महीने के बाद मैं उसी एयरपोर्ट पर आया और उसी पेपर भेंडर से पेपर मांगा दुर्भाग्य से उस दिन भी मेरे पास चेंज पैसे नहीं थे। लज्जावश मैं पेपर लौटाना चाहा। उस भेंडर ने कहा "रख लीजिए सर, यह पेपर मैं अपने लाभ की राशि से दे रहा हूँ। बिल गेट्स पेपर रख लिए। दोनों घटनाओं के उन्नीस वर्ष बाद मैं न्यूयार्क एयरपोर्ट पर उस पेपर भेंडर को खोजने लगा। काफी मशक्कत के बाद करीब एक डेढ़ महीने बाद उस भेंडर से मेरी मुलाकात हुई। मैंने उससे उन घटनाओं की याद दिलाते हुए पूछा- "तुम्हें जो इच्छा हो मुझसे मांग सकते हो, मांगो।" उसने जवाब दिया कि क्या आपको लगता है कि आप सहायता की बराबरी कर पायेंगे? मैंने आपको उस वक्त सहायता की जिस समय मेरे पास कुछ नहीं था और आप आज दुनिया में सबसे अमीर आदमी हैं और तब मेरी सहायता करना चाहते हैं। उस दिन बिल गेट्स को महसूस हुआ कि दुनिया में हमसे भी एक अमीर आदमी है।" बिलगेट्स की महानता पर सभी पत्रकार अवाक रह गये। ऐसे विशाल हृदय वाले हैं महान लक्ष्मीपति बिलगेट्स। और उससे भी महान विशाल हृदय वाला वह पेपर भेंडर था। इन्सानियत का तकाजा ऐसा ही होता है। किसी ने ठीक ही कहा है :

'उठो तो ऐसे उठो कि फ़क्र हो बुलन्दी को।

और झुको तो ऐसे झुको कि बन्दगी भी नाज करे।

वास्तव में सहानुभूति और हृदय की विशालता मनुष्य के भारी गुण हैं जिससे मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर सकता है। इतिहास में ऐसे महान आत्माओं की कहानी भरे पड़े हैं जो हमारे जीवन के लिए सीख और प्रकाशपुंज हैं जिसके आलोक में हम अपना जीवन प्रकाशित करते रहेंगे। हृदय की विशालता असीमित है। ऐसा नहीं है कि वह किसी अमीर आदमी के मन में ही समाहित है। हृदय का विशाल कोई निर्धन भी हो सकता है।

आज समाज का स्वरूप बिगड़ चुका है। आदमी इतना आत्म केन्द्रित (Self Centred) हो गया है कि हृदय की विशालता कौन कहे उसकी संकीर्णता वही है। आज देने की प्रवृत्ति घटी है और छीनने की प्रवृत्ति बढ़ी है। धोखा और फरेब का जमाना आ गया है। लोग धोखा देना अपना धर्म समझने लगे हैं। जो जितना बड़ा धोखेबाज है समाज में उसकी ही गिनती हो रही है। एक-एक का नाम गिनाना आवश्यक नहीं है क्योंकि आप भी इसी समाज में रहते हैं। आप भी उन नामों से अवश्य परिचित होंगे। एक-दूसरे को टोपी पहनाने में ही आदमी अपनी बहादुरी समझता है। ये बातें आम हो गयी है।

वो बिलगेट्स थे जो उन्नीस वर्षों बाद उस पेपर भेंडर को खोज पाये और अपनी इन्सानियत और महानता का परिचय दिये। अभी तो आज का किया हुआ आदमी कल भूल जाता है। इसीलिए आज वो पेपर भेंडर भी नहीं है जो फ्री में या उधार में पेपर दे दे। वह है कि सभी बिलगेट्स नहीं है। ऐसा परिचलन समाज में क्यों बढ़ रहा है? क्योंकि अब विश्वास का जमाना ही नहीं रहा। यह तो आदमी की बात है। आज घरों में इसका चलन बढ़ गया है। बाप बेटे को धोखा दे रहा है, बेटा बाप को धोखा दे रहा है। स्वार्थपरता इतनी बढ़ी है कि आदमी अंधा हो गया है। इहलोक और परलोक की बातें उसे फालतू लगने लगी है। ऐसी प्रवृत्ति से समाज का करीब तबका काफी प्रभावित हुआ है।

अगर देने वाले का मन सहायता के लिए आगे बढ़ना भी चाहता है तो उसे उस जरूरतमन्द के चेहरे पर भी धोखा दिखाई पड़ता है। इससे वास्तविक जरूरतमन्द व्यक्ति प्रभावित हुआ है। जरूरत है समाज में विश्वास पुनर्स्थापन की ताकि समाज में फिर से अमन-चैन और शांति का साम्राज्य स्थापित हो और धनवान गरीबों की सहायता का मन बनाये रखे।

पूर्व राजभाषा अधिकारी

हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

*****

बचपन की यादें

-रीना एस कामत

जैसे ही मेरी नज़र अपने मामाजी के घर के बैठक के कमरे की दीवार पर लगी अपने दादा-दादी की तस्वीर पर पड़ी तो मैं वहीं रुकी और बचपन में उनके साथ बिताये हुआ कुछ पलों की यादों में खो गई। मेरी दादी के सुन्दर चेहरे पर वह लाल बिंदी और नाक पर चमकते दो छोटे-छोटे हीरे के टुकड़े मानो के उस सुन्दर चेहरे को चार चाँद लगा रहे हो। उससे भी सुन्दर उनके प्यार और ममता की गहराई जो मैंने पायी थी जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर पाऊँगी ।

मैं ने अपना बचपन दादा-दादी के साथ कोची में अपनी माँ के घर में बिताया था। मेरे दिन का शुरुआत अपनी दादी को चूल्हे में फूंकने की आवाज से होता था। वह चूल्हे में पड़े लाल कोयले से आग निकालने केलिए एक नाली के सहारे जोर से फूँकती थी। मुझे भी फूँकने का बड़ा शौक था पर दादी मुझे हटाती थी, कहीं मेरी छोटी उँगलियाँ जल न जाए। मैं सिमेंट के फर्श पर बैठा करती थी और दादी को बड़े रफ्तार से रोटियाँ बनाते हुए और दूध उबालते हुए देखती थी और मेरे लिए चीनी और इलायची मिलाया हुआ दूध का बेचैनी से इंतजार किया करती थी।

मेरी दादी सचमुच एक प्यार की मीठी-मिश्री थी। मेरे सारे नटखट हरकतों को झेलती थी। मेरे बालों पर तेल लगाती और अपने बदन पर हल्दी लगाती थी और गर्म पानी में नहाती थी जोकि एक दैनिक चर्या था। मेरा बाल बनाती और उसपे मोगरे का गजरा लगाती जिसे वह खुद बनाती थी। मुझे खूब सजाती थी।

उन्होंने मुझमें भगवान के प्रति विश्वास और प्रार्थना करने का बीज बोया था। दादी माँ द्वारा सिखाए गए श्लोक और भजन तो आजतक भूली नहीं हूँ। रात को कहानियाँ सुनाना उनकी खूबी थी। रामायण, महाभारत, पंचतंत्र कथाएँ, विक्रम बेताल जैसे ऐतिहासिक, एवं लोक-कथा सुनाती थी जो आज भी मुझे मेरे मन में ताजी है।

मैं उनकी लाडली थी। उनकी दुनिया मेरे दर्द-गिर्द घूमा करती थी। मेरा दादाजी (मेरा आबू) अपने नन्हें हाथ पकड़कर पालतु गायों को खिलाते थे क्योंकि मैं डर के मारे चिल्लाती थी जब पत्ते खिलाते-खिलाते गाय अपनी जीभ से मेरे हाथ को भी चाटती थी। दादाजी मुझे रोज़ शाम को पैदल बालाजी के मंदिर ले जाते थे। हम वहाँ लंबे समय कबूतरों को खिलाते, मंदिर के गाय-बछड़ों के साथ समय बिताते और मंदिर के बड़े मैदान में ताजी हवा खाने को बैठते थे और मंदिर के मोटे खंभों पर स्थित स्पीकर से मधुर भक्तिगान सुनते थे। वापस लौट आते समय रोज़ एक दुकान से मुझे मिठाई और चिकलेट (chewing gum) खरीदकर देते थे और खुद एक लोटा गुलाबी दूध (Rose milk) पिया करते थे ।

एक और किस्सा जो मैं भूल नहीं पाई हूँ-वह है दोनों का मेरे पीछे भागना और प्यार से पकड़कर मुझे आरंडीतेल (Castor oil) पिलाने में उनकी कामयाबी । मैं जोर से चिल्लाकर रोती थी। मेरे पेट की धुलाई के लिए और पेट में पड़े कीड़ों को निकालने केलिए यह हंगामा होता था। रोने-धोने के बाद बहुत लाड़-प्यार करते थे। कितनी सारी यादें । जब मैं मामाजी के घर की रसोई में गई तो देखा कि अब वहाँ सारा नवीकरण किया हुआ था और पहले जैसे नहीं रहा। पर पुरानी यादें लाख रोकने पर भी मेरी आँखें नम कर गई। वह सूना गोशाला, वह जामून का पेड़ जिसके पीछे मैं पड़ोसी बच्चों के साथ आँख मिचौली खेलती थी, अब नहीं रहा । सारे जगह पर इतना बदलाव आया है कि पहचानना मुश्किल हो गया। मैं अपने बचपन की यादों को वहीं दफनाकर आँखों से निकली आँसू की एक बूँद को पोंछकर वहाँ से निकली। वे भी क्या दिन थे- दादाजी और दादीमाँ के प्यारे में पले वे बचपन के दिन मैं फिर से जीना चाहती हूँ । काश वह दिन लौट आता ।

-दि फट्रिलाइज़र्स एण्ड केमिकल्स

ट्रेवनकोर लिमिटेड, कोच्चि

व्यंग्य

कुत्ते से सावधान

ललन चतुर्वेदी

कुत्ते मेरे पीछे पड़ गए हैं। जिनके पीछे कुत्ते पड़ जाएं,उनका हाल तो आप समझ ही सकते हैं। मैंने बहुत कोशिश की कि कुत्तों के संदर्भ में रहीम की रणनीति का अनुपालन करूँ पर बार-बार मुंह के बल गिरा। आप जितनी बार रणनीति बदल लें,कुत्ते को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।कुत्ते के पास एक स्थायी रणनीति होती है। अपनी इसी रणनीति के बल पर सभ्य समाज में उसकी जगह सर्वाधिकार सुरक्षित है,उसे मान-सम्मान प्राप्त है। सौ में से निन्यानबे आदमी उसके लिए अपने हाथ में वफादारी का मुकुट लिए बैठे हैं। जैसे ही कोई कुत्ता मिलता है वे उसे मुकुट पहना कर संतोष की सांस लेते हैं। मजाल है कि कोई उनके सामने कुत्ते की निंदा कर दे। ऐसी जुर्रत यदि कोई करे तो कुत्ते के बदले वे सज्जन आरोपी का मुंह नोच लें। ऐसे ही लोगों ने कुत्ता जाति को वफादारी का पेटेंट दे दिया है।

आलीशान महलों के मुख्य-द्वार पर जब मैं 'कुत्ते से सावधान' सूक्ति का अवलोकन करता हूँ तो स्वागतम जैसे शब्द और स्वस्तिक जैसे प्रतीक चिह्न की हैसियत का पता चल जाता है। आखिर कुत्ते इतने प्रिय क्यों हो गए कि उसने स्वागत और स्वस्तिक को विस्थापित कर दिया।यह विषय का एक पहलू है। कुत्तों के कौतुक इतने रहस्यमय हैं कि वे मेरे लिए न सिर्फ स्थायी कौतूहल के बल्कि सतत अनुसंधान के विषय बन गये हैं।इतना स्नेह-प्यार दुनिया के सारे प्राणियों को मिले तो यह जग ही तपोवन हो जाए,यहाँ रामराज्य स्थापित हो जाये।बहरहाल, मेरे मोहल्ले में जब सुंदरियाँ कुत्ते के साथ सैर पर निकलती हैं तो मैं दिल थाम कर उनके 'पेट' को देखता हूँ। अब उनसे बात करने का दुस्साहस तो मैं कर नहीं सकता तो मौन भाव से उनके कुत्ते के बारे में चिंतन करता रहता हूँ। इस चिंतन के क्रम में उनके संबंध में ज्ञान के कुछ अनमोल खजाने मिल जाते हैं। क्या यह किसी खुशी से कम है?लोकहित में इन जानकारियों को मैं शेयर करता रहूँगा। पहली किस्त में संक्षेप में इतना जानिए कि हर कुत्ता में एक खास गुण होता है। इसीलिए वह जीवनपर्यंत खासमखास बना रहता है। अकारण नहीं लोग उन्हें महंगे दामों पर खरीद कर संतान की तरह पालते हैं। जिस तरह अनंत किसिम के कुत्ते होते हैं,उसी तरह उनके अनंत किसिम के गुण भी हैं। मैं तो उन्हें गुण का आगार समझता हूँ।

अब गली के कुत्ते को ही ले लीजिए। साहब लोग इन्हें 'स्ट्रीट डॉग' कहते हैं। मालूम नहीं अँग्रेजी में भारी भरकम नाम देने के बावजूद वे इनको वेटेज क्यों नहीं देते ? अब यह उनका दृष्टिकोण है। इसमें कोई क्या कर सकता है। हालांकि ये स्ट्रीट डॉग साहबों के प्रति बड़े उदार होते हैं। ये उन्हें कभी परेशान नहीं करते। यहाँ तक कि उनको देखकर कभी भौंकते भी नहीं। यह अनुभव की बात है और मेरा अपना अनुभव है। आपका अनुभव कुछ भिन्न भी हो सकता है। सभ्य,सुदर्शन कोई जेंटलमैन/वूमेन मोहल्ले से गुजरे तो स्ट्रीट डॉग मौन अभिवादन कर आँख मूँद लेते हैं,मानो उन्हीं का ध्यान कर रहे हों। परंतु जैसे ही कोई गरीब,फटे-पुराने कपड़े पहने कोई भिखारी सामने दिख जाए तो घमंडी मेघ की तरह गर्जन करने लगते हैं। गरीबों से यह कैसी नाराजगी! मैंने एक सज्जन से इस संबंध में जानना चाहा कि कुत्ते गरीबों के प्रति इतने क्यों आक्रामक हो जाते हैं? सज्जन का जवाब नोट करने लायक था - ऐसे लोग प्रायः कुत्ते को नुकसान पहुंचाते हैं,उन पर पत्थर फेंकते हैं। शायद इसीलिए उनको देखकर वे भड़क जाते हैं।इस संबंध में सबके अपने-अपने विचार हैं। मैं कैसे कहूँ कि गरीब/भिखारी कुत्ते के दुश्मन हैं।

स्ट्रीट डॉग' के संबंध में लोगों का चाहे जो भी नजरिया हो,आज मैं अपनी चर्चा 'स्ट्रीट डॉग' पर ही केन्द्रित करूंगा। जितनी औकात है,उसी हिसाब से बात करता हूँ। फिलहाल मेरी पहुँच यहीं तक है। जब सुसभ्य,संभ्रांत और कुलीन(इलीट) कुत्तों के बारे में जानकारी एकत्र करूंगा,जरूर साझा करूंगा। पुनः दोहरा रहा हूँ, कुत्ते

मेरे लिए सतत अनुसंधान और शाश्वत महत्व के विषय हैं। अतः आपको कभी निराश नहीं करूंगा। मुझे मालूम है कि मेरे पाठक मामूली इंसान हैं। अतः वे कुत्तों के गुण-धर्म विवेचन से नाराज-परेशान नहीं होंगे।बड़े लोगों के सामने कुत्ते की आलोचना करना एक जोखिम भरा काम है। वे कुत्ते की आलोचना सुनना बिलकुल पसंद नहीं करते। उल्टे वे ऐसे आलोचक के पीछे कुत्ते की तरह पड़ जाते हैं। लगता है जैसे यह काम उनके ही कार्य क्षेत्र का है।

स्ट्रीट डॉग कमाल के होते हैं। पूरा मोहल्ला ही उनका घर होता है। अपनी सीमाओं के प्रति इतना चौकस संसार का कोई प्राणी नहीं है। मजाल नहीं कि कोई दूसरा कुत्ता उनकी बाउंड्री में आ जाए। अपनी सीमाओं के प्रति इतने सतर्क कि जाति - धर्म सबसे ऊपर अपना मोहल्ला। आखिर सारे कुत्ते तो उन्हीं के जाति के हैं और लगभग धर्म भी उनका एक ही है। फिर भी वे अपने मोहल्ले में किसी की घुसपैठ बर्दाश्त नहीं कर सकते। देश भक्ति का पाठ कोई इनसे पढ़े। किसी को कोई रियायत नहीं। कोई कितना मजबूत,बड़ा,देशी या विदेशी नस्ल का ही क्यों न हो बस सामने दिखने भर की देर है।जब तक उसको मोहल्ला-पार नहीं करेंगे,तब तक दम नहीं लेंगे।अगर 'स्ट्रीट डॉग' अलसा कर सोया भी हुआ है ,तब भी एक बार आँख खोल कर गुर्राएगा जरूर। इतने पर भी अजनबी नहीं समझा तो हजार मीटर का दौड़ लगवा कर ही छोड़ेगा।अगर वह कमजोर या बीमार भी है तो भी उसके सिंगल सिग्नल पर मोहल्ले के सारे कुत्ते इकट्ठे हो जाएंगे। वे अपनी एकता और मोहल्ले की अखंडता का परिचय देने के लिए किसी भी अवसर से नहीं चूक सकते। स्ट्रीट डॉग की इस कर्तव्य- निष्ठा पर कौन नहीं कुर्बान हो जाए।इसीलिए कहा गया है कि अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है। यह बात केवल सैद्धांतिक नहीं है। मैं फील्ड- ट्राइल के आंखो-देखी अनुभव पर यह सब अंकित कर रहा हूँ। आए दिन मेरे नजरों के सामने अनेक मुठभेड़ होते रहते हैं। ऐसे ही लोमहर्षक समूह युद्ध में अपने मोहल्ले का 'मोती' जब लहूलुहान होकर गुजर रहा था तो प्यारेलाल जी की नजर उस पर पड़ गई। उसके शौर्य से वे इतने उत्साहित नजर आने लगे कि सीमा पार से होने वाली हालिया घुसपैठ की गतिविधियों पर नियंत्रण में कुत्तों की भूमिका पर बात करने लगे। सुरक्षा विशेषज्ञ की भूमिका में आकर सुझाव देना शुरू कर दिया- सीमा पर घुसपैठ को रोकने में प्रशिक्षित कुत्ते बहुत कारगर सिद्ध हो सकते हैं। कुत्तों की घ्राण-शक्ति और पहचान शक्ति पर इस नाचीज को भी कभी कोई संदेह नहीं रहा। डॉलर कॉलोनी(कुछ समय तक अस्थायी निवास रहा) के निवासी इस गरीब आदमी के पास कुत्तों के अनेक रहस्यमयी शक्तियों की पुख्ता जानकारी है। इस लिहाज से बहस के अंत में उनके समक्ष एक छोटा सा महत्वपूर्ण सुझाव रखा -"इन कुत्तों को नियंत्रण में भी रखना जरूरी होगा।" उन्होंने इसको लगभग अनसुना करते हुए मोती को 'शेरू' में अपग्रेड करने का बहुमूल्य प्रस्ताव रख दिया। इस समय उनके मन में मोती के वीरोचित कर्म के प्रति अगाध श्रद्धा की लहरें उफान पर थीं। मोहल्ले के बच्चों ने उनके इस प्रस्ताव का कर-तल ध्वनि से स्वागत करते हुए इसे सर्व सम्मति से पारित कर दिया। फिलहाल शेरू इलाज के लिए प्यारेलाल जी के सुरक्षित संरक्षण में है। प्यारेलाल जी ने अपने घर के मुख्य द्वार पर स्वर्णिम रंग में धातु की तख्ती लगा ली है- कुत्ते से सावधान।उनके घर की शोभा बढ़ाती इस तख्ती को आते-जाते लोग ध्यान से देख रहे हैं।

(नोट-कुत्ते से सावधान आख्यान का यह पहला एपिसोड है। अगले एपिसोड में आप पढ़ेंगे- कुत्ते बंध्याकरण के खिलाफ हैं। कुत्तों के संबंध में आप अपनी राय रखने के लिए स्वतंत्र हैं।)

सहायक निदेशक (रा भा)
केरेप्रौअसं, बेंगलूरु

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन एवं केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु में दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा और 29.09.2021 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे शब्दावली, टिप्पण आलेखन, तस्वीर क्या बोलती है?, हिन्दी निबंध, सुलेख, वर्ग पहेली और आशुभाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 29.09.2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के सदस्य सचिव श्री आर. आर. ओखंडियार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन तथा केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु के साथ संयुक्त रूप से हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । समारोह में केन्द्रीय रेशम बोर्ड को मिले वर्ष 2019-20 तथा 2020-2021 के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की झलकियां प्रस्तुत की गई । इस अवसर पर श्री आर. आर. ओखंडियार ने हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को समान महत्व देने पर जोर दिया । उन्होंने यह भी कहा कि अपनी जरूरत के लिए भी हम सबको हिन्दी सीखनी चाहिए । समारोह के दौरान श्री ओखंडियार ने 'मैं हिंदी हूँ' कविता प्रस्तुत कर हिन्दी साहित्य के सभी मूर्धन्य लेखकों के मुख्यांशों पर प्रकाश डाला। इसी अवसर पर राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन के वैज्ञानिक-डी श्री हर्लापूर तथा केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु के वैज्ञानिक-डी डॉ. जगन्नाथन भी उपस्थित थे । समारोह में माननीय वस्त्र मंत्री श्री पीयूष गोयल, माननीय वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना जरदोश एवं माननीय वस्त्र सचिव, श्री यू पी सिंह के संदेश पढ़े गए । समापन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, मैसूरु में दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया । हिन्दी पखवाड़ा के दौरान सही लेखन प्रतियोगिता, श्रुतलेखन, शब्दावली और स्मृति जांच परीक्षा प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों / अधिकारियों / कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया ।

दिनांक 14.09.2021 को आयोजित हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री टेकचंद, पूर्व उप निदेशक(रा.भा), क्षेकाका, बेंगलूरु उपस्थित थे । संस्थान के निदेशक डॉ बाबूलाल एवं मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम का शुभारंभ संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया । तत्पश्चात संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय के द्वारा स्वागत संबोधन एवं कार्यक्रम की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया गया ।

संस्थान के निदेशक ने अध्यक्षीय अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित सभी का आह्वान किया कि वे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करें । गृह मंत्री एवं सदस्य सचिव, केंरेबो, बेंगलूरु से प्राप्त संदेश का पाठ किया गया । कार्यक्रम में हिन्दी प्रतियोगिता के श्रेष्ठ प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार का वितरण किया गया ।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री टेकचंद, पूर्व उप निदेशक(रा.भा), क्षेकाका, बेंगलूरु ने कहा कि हिन्दी अत्यंत सहज एवं सरल भाषा है । अल्प - अभ्यास से ही इस भाषा का प्रयोग आसानी से सरकारी कामकाज में किया जा सकता है । इस अवसर पर संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया । इस कार्यक्रम में कुल 40 प्रतिभागियों को हिन्दी प्रतियोगिता के लिए पुरस्कृत करने के अलावा संस्थान के कुल 10 कर्मचारियों को मूल रूप से सरकारी काम काज हिन्दी में करने हेतु पुरस्कृत किया गया । सर्वोत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन करने वाले भंडार एवं शहतूत शरीर क्रिया विज्ञान अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड तथा द्वितीय स्थान पर रहने वाले स्थापना एवं रेशमकीट शरीर क्रिया विज्ञान अनुभाग को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया । इसके अतिरिक्त वैयक्तिक क्षमता में हिंदी कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले वैज्ञानिकों/अधिकारियों/

कर्मचारियों नामत: डॉ पुरुषोत्तम, डॉ कुसुमा, श्री रामकृष्णा, श्री हरीश, श्री गोविंद राजु एवं श्री किरण कुमार को भी शील्ड प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया । कार्यक्रम के दौरान गीत संगीत कार्यक्रम सुश्री सुप्रिया, एस.आर.एफ ने प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती शचि के. ने किया । सभी कार्यक्रम कोविड-19 के मानदंडों का पालन करते हुए सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए आयोजित किए गए ।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में दिनांक 14.09.2021 से 28 09.2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर सभी कार्मिकों द्वारा हिन्दी में ही काम करने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम के दौरान माननीय गृहमंत्री के वीडियो संदेश को प्रदर्शित किया गया। साथ ही हिन्दी दिवस के अवसर पर वस्त्र मंत्री, वस्त्र राज्यमंत्री, सचिव, वस्त्र मंत्रालय तथा सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के संदेशों का भी वाचन किया गया । हिन्दी पखवाड़ा के दौरान 04 प्रतियोगिताओं यथा- टिप्पण व आलेखन, शब्दावली, पत्र प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया गया।

दिनांक 28.09.2021 को हिन्दी पखवाड़े का मुख्य समारोह आयोजित किया गया । कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने दीप प्रज्ज्वलित किया। स्वागत भाषण एवं कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपने शासकीय कार्यों में हिन्दी को अपनाने में किसी भी प्रकार की झिझक नहीं होनी चाहिए। राजभाषा का कार्यक्रम मात्र सप्ताह, एवं माह तक सीमित न रखते हुए हमें पूरे वर्ष भर राजभाषा के महत्व को समझते हुए इसका प्रयोग करना चाहिए। वर्तमान में राजभाषा भूमंडलीकरण के दौर में सैनिक स्तर पर अपनी पैठ बैठा रही है। हमें राजभाषा को सरल एवं सुबोध रूप में प्रयोग करना चाहिए कि हिन्दीतर भाषी भी इससे लाभान्वित हो सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. के सत्यनारायण ने सभी का आह्वान किया कि हिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्यरत् रहते हुए सरकारी कार्य में हिन्दी का अधिक प्रयोग करें। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में अपना अधिकतम योगदान दे सकते हैं जिससे कि हिन्दीतर भाषी कार्मिक भी प्रेरित होकर हिन्दी में ही कामकाज कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करें। कार्यक्रम में निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं के श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा वर्ष 2020-21 के दौरान हिन्दी में मूल कामकाज करने वाले कुल 14 कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। वर्ष के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्य-निष्पादन करने वाले अनुभागों को तीन संवर्ग में अलग अलग चलशील्ड एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया जिनमें पीएमईसी, वाहन एवं रोग विज्ञान अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड तथा प्रशिक्षण, अनुरक्षण एवं शरीर क्रिया विज्ञान अनुभाग को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये । कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक/अधिकारी/ कर्मचारी एवं अन्य उपस्थित रहे।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, बहरमपुर (प.बं.) में प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी माह सितम्बर के दौरान अर्थात दिनांक 01.09.2021 से 04.09.2021 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया जिसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा शब्दावली, निबंध, सुलेख व श्रुतिलेख तथा हिंदी टिप्पण व तक विविध आलेखन का सफल आयोजन किया गया ताकि संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की भावना संचारित होने के साथ ही साथ राजभाषा प्रावधानों के सम्यक कार्यान्वयन व अनुपालन में और भी गति आ सके। हिन्दी दिवस/पखवाड़ा, 2021 के मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 14.09.2021 के अपराह्न में संस्थान के प्रेक्षा गृह में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. किशोर कुमार, सी एम द्वारा किया गया।

समारोह का शुभारंभ संस्थान के श्री आर. बी. चौधरी, सहायक निदेशक (राभा) के स्वागत अभिभाषण द्वारा किया गया। इस दौरान उपस्थित सभी पदाधिकारियों को केन्द्रीय रेशम बोर्ड की गौरवपूर्ण उपलब्धि अर्थात् वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित होने की सहर्ष

संसूचना और इस मुकाम तक पहुंचाने में सभी पदधारियों के सराहनीय प्रयास व योगदान के लिए बधाई दी गई। इसके अलावे, संस्थान के सहायक निदेशक (राभा) द्वारा वर्ष 2020-21 की वार्षिक राजभाषा प्रगति व उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया।

तदुपरांत इस अवसर पर श्री राजित रंजन ओखंडियार, माननीय सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड से प्राप्त अपील / संदेश का पाठन संस्थान के निदेशक, डॉ. किशोर कुमार, सी.एम द्वारा किया गया। साथ ही, इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केंद्रीय विद्यालय, बहरमपुर प्राध्यापक श्री मोअज्जम एकबाल सिद्दीकी महोदय द्वारा अपने अभिभाषण में राजभाषा हिन्दी के महत्व और इसके वैश्विक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए आजादी की लड़ाई में इसकी भूमिका पर सविस्तार प्रकाश डाला गया । उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रतीक है और हमें अपने सरकारी कार्यों में उचित स्थान और मर्यादा अवश्य ही प्रदान किया जाना चाहिए।

इस दौरान संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. किशोर कुमार, सी-एम द्वारा संस्थान के अनुभागों तथा इसके संबद्ध केन्द्रों को वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा नीति तथा इसके प्रावधानों के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान हेतु क्षेरेउअके, कालिमपोंग को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति पत्र, क्षेरेउके, कोरापुट को राजभाषा प्रशस्ति पत्र, अनुसंधान विस्तार केन्द्र, अगरतला को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति पत्र और संस्थान के पीएमसीई प्रभाग को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति पत्र, प्रशिक्षण प्रभाग को राजभाषा प्रशस्ति पत्र, एसबीजी प्रभाग को राजभाषा चलशील्ड एवं प्रशस्ति पत्र एवं एमबीजी अनुभाग को राजभाषा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित व पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात इस दौरान मुख्य अतिथि श्री मोअज्जम एकवाल सिद्दीकी तथा संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी पखवाड़ा, 2021 के अवसर पर आयोजित कुल चार प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान करने के साथ-साथ वर्ष 2019-20 के दौरान मूल रूप से राजभाषा हिन्दी में निष्पादित सरकारी कामकाज हेतु कुल 09 अधिकारियों/पदधारियों को प्रोत्साहन स्वरूप नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उन्हें राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित किया गया।

इस दौरान संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. किशोर कुमार, सीएम ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा पर चर्चा करते हुए कहा कि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता अक्षुण्ण रख सकती है। सर्वशेष में संस्थान के समस्त अधिकारियों/पदधारियों को इस समारोह को सफल बनाने में प्रदत्त सहयोगिता व प्रतिभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति की घोषणा की गई।

केन्द्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केन्द्र, केरेबो, होसूर

में दिनांक 14.09.2021 से 20.09.2021 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान विविध प्रतियोगिताओं अर्थात स्मृति परीक्षण, आशुभाषण एवं गायन का सफल आयोजन किया गया ताकि केरेजसंके, इएसएसपीसी, एसएसपीसी के वैज्ञानिकों / अधिकारियों / कर्मचारियों एवं प्रक्षेत्र कामगारों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की भावना संचारित होने के साथ ही साथ राजभाषा प्रावधानों के सम्यक कार्यान्वयन व अनुपालन में और भी गति आ सके। हिन्दी दिवस/ सप्ताह, 2021 के मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 14.09.2021 के पूर्वाहन में केन्द्र के बैठक कक्ष में आयोजित किया गया। समारोह डॉ. बी. टी. श्रीनिवासा की अध्यक्षता में किया गया। समारोह का शुभारंभ, केन्द्र की श्रीमती शीबा. वी. एस, क. अनुवादक (हिंदी) के स्वागत अभिभाषण द्वारा किया गया। तदुपरांत, इस अवसर पर सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु श्री. राजित रंजन ओखण्डियार, आईएफएस से प्राप्त संदेश का पाठन केन्द्र के श्री. आर. गोपिनाथन, आशुलिपिक (ग्रेड-I) द्वारा किया गया।

दिनांक 20.09.2021 को केन्द्र के डॉ. बी. टी. श्रीनिवासा, निदेशक की अध्यक्षता में समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। निदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारे राष्ट्र की अस्मिता है। इसमें न केवल पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता विद्यमान है बल्कि यह एक अत्यंत वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी सप्ताह समापन समारोह के इस पावन अवसर पर हमारा यह

नैतिक दायित्व बनता है कि हम इसका प्रसार-प्रचार केवल प्रशासनिक क्षेत्र तक सीमित न रखकर वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र में इस भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा इसे अहम दर्जा दिलाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाएं।

साथ ही उनके द्वारा सभी पदधारियों से राजभाषा प्रावधानों का अनुपालन करने की सलाह दी गई। निदेशक महोदय ने उनके अभिभाषण में सहज, सरल और दैनांदिन व्यावहारिक शब्दों का इस्तेमाल सरकारी कार्यों में करने की सलाह पदधारियों को देते हुए यह व्यक्त किया गया कि रेशम उद्योग से जुड़े अभिनव खोज आदि से संबंधित रिपोर्ट/उपलब्धियों का ने केवल हिंदी में बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं में अर्थात् क्षेत्र से जुड़ी भाषाओं में हितधारकों तथा कृषकों तक उपलब्ध कराया जाए ताकि रेशम उद्योग की उपलब्धियों व खोजों को सहजतापूर्वक आमजनता तक उपलब्ध कराने के साथ ही राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों व उनकी दिशा-निर्देशों की सम्यक अनुपालन सुनिश्चित हो सके। साथ ही उनके द्वारा इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि हम केवल निर्धारित लक्ष्य तक सीमित न रखकर शत-प्रतिशत पत्राचार हिंदी में करने का प्रयास करें। तत्पश्चात, केन्द्र के निदेशक महोदय द्वारा हिन्दी सप्ताह, 2021 के दौरान आयोजित कुल 03 (तीन) प्रतियोगितओं के विजेता प्रतिभागियों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान कर समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति की गई।

एरी अनुसंधान प्रसार केन्द्र, केरेबो, फतेहपुर में दिनांक 14.09.2021 को श्री सूरज पाल, वैज्ञानिक -डी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। आयोजन का शुभारम्भ करते हुए अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित अधिकारी, कर्मचारी एंव गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। कोविड- 19 के चलते हिंदी दिवस को ज्यादा जोर शोर से नहीं मनाया गया । अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो हमें एक दूसरे से जोड़ने का कार्य करती है तथा हमारे देश की अपनी एक भाषा होनी चाहिए । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा होता है। । इसलिए मेरी आप सभी से अपील है कि हम सभी अपने कार्यालय में घरों में, बाजारों में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करे । जिससे हिंदी भाषा को एक राष्ट्रभाषा के रूप में देखा जा सके । श्री दीन मुहम्मद, वत०स० ने आश्वासन दिया कि हम 100 प्रतिशत कार्य हिंदी में करेंगे तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित करेंगे । श्री राजनरायन, सहायक ने कई एक चुटकुले हिंदी में सुनाए जिससे श्रोताओं ने खूब आनंद लिया । अंत में श्री राम जीवन, क्षेत्र सहायक ने कहा कि केंद्र की सभी प्रतिवेदन हिंदी में ही जारी की गयी है। इसी के साथ श्री रामजीवन ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्य क्रम के समापन की घोषणा की ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, केरेबो, बिलासपुर (छ.ग.) में दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 01-09-2021 को पखवाड़े का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया तथा इस अवसर पर श्री फूल सिंह लोधी, कनिष्ठ अनुवादक (हिं) ने संगठन कार्यालय द्वारा वर्ष 2020-21 के द्वौरान किये गये कार्यों पर पावर प्वाइंट के माध्यम से संक्षिप्त में प्रकाश डालते हुए पखवाड़े के दौरान किये जाने वाले कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। पखवाड़े के दौरान कुल 02 प्रतियोगिताओं (शब्दावली लेखन एवं टिप्पण लेखन का आयोजन किया गया जिसमें संगठन कार्यालय के एवं रेशम तकनीकी सेवा केन्द्र, बिलासपुर तथा बुबीप्रवप्रके, बिलासपुर सहित कुल 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। दिनांक 14-09-2021 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । उक्त अवसर पर संगठन प्रभारी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा दिलायी तथा उन्होंने बताया कि 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया था तथा इसी उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। साथ ही उन्होंने संगठन कार्यालय को केन्द्रीय रेशम बोर्ड से राजभाषा द्वितीय पुरस्कार प्राप्त होने पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाईयां दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विक्रम सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बिलासपुर ने हिंदी दिवस की महत्ता बताते हुए राजभाषा संबंधी संवैधानिक

प्रावधानों की जानकारी दी तथा उन्होंने आग्रह किया कि पखवाड़े के दौरान ही नहीं बल्कि पूरे वर्ष भर हमें सरकारी कार्यों को हिन्दी में करना चाहिए तथा हिंदी में पत्र एवं टिप्पण आदि लिखने में झिझकना नहीं चाहिए, साथ ही उन्होंने संगठन कार्यालय में चल रहे राजभाषा संबंधी कार्यक्रमों की प्रशंसा की। कार्यक्रम के दौरान माननीय गृह मंत्री, वस्त्र मंत्री, वस्त्र राज्य मंत्री, सचिव वस्त्र एवं सदस्य सचिव केन्द्रीय रेशम बोर्ड के हिंदी दिवस के संदेशों को पढ़कर सुनाया गया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संगठन प्रभारी के करकमलों से नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री फूल सिंह लोधी, कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने किया तथा संगठन प्रभारी महोदय, मुख्य अतिथि एवं उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

रेशम तकनीकी सेवा केन्द्र, केंद्रीय रेसम प्रौद्योगीकी अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय रेशम बोर्ड, कटक, ओडिशा के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिन्दी दिवस / पखवाडा 2021 मनाया गया । दिनांक 01.09.2021 अपराहन 3.00 बजे हिन्दी पखवाड़ा का शुभारम्भ श्रीमती संजुबाला मोहांती, सदस्य राजभाषा कार्यान्वयन समिति रे.त.से.के कटक द्वारा किया गया । समस्त हिन्दी योजनायों को सभी कर्मचारियों को अवगत कराया गया एवं हिन्दी दिवस/पखवाडा 2021 के दौरान अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए अनुरोध किया गया । श्री एस. के. स्वैन, व.त.स की अध्यक्षता एवं कर्मचारियों की उपस्थिति मैं हिन्दी दिवस / पखवाडा 2021 का समापन समारोह का आयोजन किया गया। वार्षिक कार्यक्रम 2021-2022 के अनुसार राजभाषा प्रगति का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अध्यक्ष महोदय ने कर्मचारियों को अनुरोध किया। अध्यक्ष श्री एस के स्वैन, व.त. स. महोदय ने निदेशक से प्राप्त सन्देश का पाठ किया। आमंत्रित अतिथि श्री दीनबंधु सिंह, हिन्दी अधिकारी ने हिन्दी दिवस / पखवाडा पर खुद की लिखी हुई कविता सुनायी।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 01 सितम्बर 2021 से दिनांक 15 सितम्बर 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 01-09-2021 को दीप प्रज्जवलन के साथ पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए केंद्र के प्रभारी डॉ0 सुरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-डी ने अपने सम्बोधन में कहा कि राजभाषा हिन्दी का अपना अलग महत्व है, यह केवल कार्यालयों तक ही सीमित नहीं है । हिन्दी को कार्यालय में बढ़ाने के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने इस दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में सभी को आगे बढ़कर भाग लेने का अनुरोध किया जिससे इस पखवाड़े के आयोजन के उद्देश्य को सफल बनाया जा सके ।कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रीमती निवेदिता खण्डूरी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक एवं नामित हिन्दी कर्मचारी ने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा सभी से इसमें भाग लेने का निवेदन किया, साथ ही कहा कि हिन्दी दिवस/पखवाड़ा हिन्दी के प्रति अपने उत्तरदायितत्वों की याद दिलाता है। हमें हिन्दी के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करना चाहिये । दिनांक 14 सितम्बर 2021 को कार्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के संदेश को पढ़ा गया तथा उनके विचारों को कार्यालय प्रयोग में क्रियान्वयन हेतु अनुरोध किया गया ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बुबीप्रवप्रके, केरेबो, केन्दुझर (ओडिशा) में दिनांक 01.09.2021 को हिन्दी पखवाड़ा-2021 का शुभारम्भ किया गया जिसमें केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया जो केन्द्र की प्रभारी डॉ सुव्रत सतपथी, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता आयोजित किया गया। अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन किया। उपस्थित सभी अधिकारी एवं कर्मचारीयों को श्री र.च. पृष्टि, सहायक अधीक्षक (प्रशासन) ने स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय डॉ सुव्रत सतपथी, वैज्ञानिक डी ने उपस्थित सभी कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर उन्नत्ति हेतु सुझाव प्रदान किये । उसके वाद सभी कर्मचारियों ने राजभाषा हिन्दी से संबंधित अपना-अपना वक्तव्य प्रस्तुत किए । दिनांक 14 सितंबर, 2021 को हिन्दी दिवस और भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस तथा दिनांक 01 सितंबर, 2021 से 15 सितंबर,

2021 तक हिन्दी पखवाडा- 2021 का आयोजन किया गया । इस अवसर पर केन्द्र के सभी अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय का शत प्रतिशत काम हिन्दी में ही संपादन किये। दिनांक 14 सितंबर, 2021 को डॉ सुब्रत सतपथी, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के कर्मचारियों योगदान दिए ने । अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत करने के साथ-साथ हिन्दी दिवस पर अपना मूल्यवान वक्तव्य प्रदान किये । हिन्दी दिवस के अवसर पर प्राप्त सदस्य सचिव श्रीमान राजित रंजन ओखंडीयार, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के संदेश पाठ किया गया । अत में केन्द्र के श्री रजत महानायक, तक सहायक द्वारा सभी अधिकारी/कर्मचारियों को केन्द्र की तरफ से धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ ।

अनुसंधान विस्तार केन्द्र, केरेबो, परभणी में दिनांक 14 सितम्बर को हिंदी दिवस एवं 14 सितम्बर से 28 सितंबर 2021 तक हिंदी पखवाडा आयोजित किया गया। श्री.ए.एल. जाधव, वैज्ञानिक सी, परभणी की अध्यक्षता में दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम के महत्व पर श्री. ए. एल. जाधव, वैज्ञानिक- सी ने प्रकाश डाला एवं उनके द्वारा भारत के माननीय गृहमंत्रीजी, नई दिल्ली का संदेश पढ़कर सुनाया गया, जिसके बाद कार्यालय के वरिष्ठ तकनीकि सहायक, श्री.एस.पी. इंगले ने केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के माननीय सदस्य सचिव का संदेश पढ़ा। मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री. ए. जे. कारंडे, सेवा निवृत्त, वैज्ञानिक डी. केंद्रीय रेशम बोर्ड ने हिंदी दिवस एव पखवाडे के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई दी। विशेष अतिथि के रूप से आमंत्रित श्री. पी. एस. देशपांडे, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, जिला रेशम कार्यालय, नांदेड ने सभी को हिन्दी दिवस एवं पखवाड़े के अवसर पर कार्यालयीन कामकाज में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करने का अनुरोध किया| श्री. ए. एल. जाधव, वैज्ञानिक सी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी हमारे भारत की अस्मिता है, इसमे न केवल पूरे भारत को एक सूत्र में बांध के रखने की क्षमता है बल्कि यह एक अत्यंत वैज्ञानिक भाषा है। उक्त कार्यक्रम में कार्यालय के श्री.एस.पी. इंगले, वरिष्ठ तकनीकी सहायक एवं कु. एस. व्ही. साबले क्षेत्र सहायक को वर्ष 2020-21 के दौरान मूल रूप से सरकारी कामकाज हिंदी में निष्पादित करने पर केंद्रीय रेशम बोर्ड की हिंदी टिप्पण आलेखन उदार प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत नकद पुरस्कार राशि का वितरण किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

रेशम कीट बीज उत्पादन केंद्र, राष्ट्रीय रेशम कीट बीज संगठन, जोरहाट में "हिन्दी दिवस" पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। "हिन्दी दिवस" समारोह डॉ. एल. पाच, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में के.रे.बो के प्रभारी महोदया ने अपने उदघाटन भाषण पेश किया । उन्होंने अपने भाषण में, उपस्थित सभी कर्मचारियों को "हिन्दी दिवस" समारोह का हर कार्यक्रम में पूर्ण सहयोगिता करते हुवे समारोह का सफल रुप देने के लिए आह्वान किया । सदस्य सचिव महोदय, केन्द्रीय रेशम-बोर्ड, बेंगलूरु में प्राप्त संदेश समारोह में पढ़कर सुनाया गया। अंत में प्रभारी महोदया ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा सीखने तथा लिखने के लिए सभी कर्मचारियों को सहज सरल पद्धति अपनाने के लिए परामश दिया। उन्होंने कहा कि, भारत देश के अलावा विदेशों में भी हिन्दी भाषा के प्राधान्य दिया जा रहा हैं। इस भाषा के जरिये हम अपने भाव-विचार देश के हर कोई प्रांत के व्यक्तियों के साथ विनिमय कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इस कार्यालय के सभी कर्मचारियों द्वारा हिन्दी भाषा के प्रयोग में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। कार्यसूची के अनुसार 1 सितम्बर से 14 सितम्बर 2021 तक हर दिन कार्यालय के नामपट्ट पर अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद लिखकर सभी कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया जिसके दुवारा इस कार्यालय के सभी कर्मचारियों को इन शब्दों की जानकारी भी प्राप्त हुई। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कर्मचारियों के बीच एक हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और सभी कर्मचारी इसमें बढ़चढ़कर भाग लिया।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 14 सितम्बर 2021 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया । इस समारोह में श्री पि. कुमारेसन, वैज्ञानिक-डी और प्रभारी आर.एस. आर.एस मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे । उन्होंने भाषण में हिन्दी पखवाड़ा के विषय पर विस्तार रूप से

व्याखान दिया । इसके पश्चात प्रतियोगिता में विजेताओं ने अपना पुरस्कार अध्यक्ष महोदय तथा विशिष्ट अतिथियों से बड़ी उत्साह के साथ ग्रहण किया। अंत में, अध्यक्ष महोदय ने आमंत्रित अतिथि तथा सभी कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिन्दी पखवाड़ा के समापन की घोषणा कर दी।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, मुलुगु, तेलंगाना में दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस मनाया गया । डॉ. के. प्रवीण कुमार, वैज्ञानिक-डी ने हिन्दी दिवस समारोह की अध्यक्षता की । कार्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया, कार्यक्रम के आरंभ में वैज्ञानिक डी, डॉ. प्रवीण कुमार ने हिन्दी दिवस के बारे में विस्तार से समझाया कि भाषा का महत्व क्या है, भाषा के माध्यम से पूरे देश को एक ही छत्रछाया में लाया जाना कितना प्रसांगिक है । मुख्य अतिथि श्री एस राजा दोरया, वैज्ञानिक-डी ने अपने भाषण में बताया कि हिन्दी भाषा को बोलना लिखना उनके लिए बहुत अनिवार्य था, भाषा का महत्व जानकर राजभाषा की बहुमूलियता जानना है । धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ ।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2021 से 21.09.2021 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें दो हिंदी प्रतियोगिताएं यथा:- 1. प्रशासनिक शब्दावली 2. निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । दिल्ली कार्यालय में दिनांक 14.09.2021 को अपराहन 3.00 बजे बैठक कक्ष में श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरू की अध्यक्षता में केंद्रीय कार्यालय, बेंगलूरू से आए श्री आर. डी. शुक्ल, उप निदेशक (राजभाषा) सहित श्रीमती मीना कामत, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक) व कार्यालय प्रभारी, क्षेका, केरेबो, नई दिल्ली तथा श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) व नामित हिंदी अधिकारी सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों तथा कर्मचारियों की उपस्थिति में हिंदी दिवस/सप्ताह - 2021 का उदघाटन समारोह एवं दीप प्रज्जवलन कार्यक्रम संपन्न किया गया एवं कार्यक्रम का संचालन श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक) व कार्यालय प्रभारी, क्षेका, केरेबो, नई दिल्ली द्वारा किया गया ।

हिंदी दिवस/सप्ताह – 2021 के शुभ अवसर पर श्री दाशरथी बेहेरा, श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरू (अध्यक्ष) एवं केंद्रीय कार्यालय, बेंगलूरू से आए श्री आर. डी. शुक्ल, उप निदेशक (राजभाषा) सहित श्रीमती मीना कामत, सहायक निदेशक (राजभाषा) की उपस्थिति में स्वागत संबोधन किए । अध्यक्ष महोदय श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरू द्वारा अपने अध्यक्षीय संबोधन में केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरू की वर्ष 2020-21 हेतु राजभाषा कीर्ति (तृतीय पुरस्कार) की प्राप्ति पर संगठन के समग्र अधिकारियों एवं कर्मचारियों के टीम वर्क की सराहना की एवं बधाई प्रदान किए तथा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं इसे पूरी निरंतरता के साथ कायम रखने हेतु प्रोत्साहित किए । इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, मुख्यालय से प्राप्त संदेशों का पठन किया गया तथा राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिज्ञा शपथ ग्रहण किए गए । श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक) द्वारा हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं की ओर प्रकाश डाला गया एवं क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली कार्यालय द्वारा दैनंदिन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों हेतु विशेष उपलब्धियों पर सराहना व्यक्त की गई । श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) व नामित हिंदी अधिकारी ने कार्यालय में राजभाषा नीति/निर्देशों का अनुपालन, राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों एवं लक्ष्य प्राप्ति सुनिश्चित किए जाने का व्यौरा प्रस्तुत किया गया। अंत में श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ. एन. के. भाटिया, वैज्ञानिक - घ, एस.एस.पी.सी., प्रेमनगर, देहरादून एवं रा.भा.का.स. के अध्यक्ष महोदय श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक) सहित श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) व नामित हिंदी अधिकारी तथा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी सप्ताह – 2021 को सफल बनाने में सराहनीय योगदान देने हेतु आभार व्यक्त किए गए ।

हिन्दी कार्यशाला

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मुख्यालय, बेंगलूरु में कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने की झिझक दूर करने के लिए दिनांक 23.09.2021 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में श्री दामोदर, उप निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, बेंगलूरु ने "वाक्य रचना" और द्वितीय सत्र में श्री आर.डी. शुक्ल, उपनिदेशक (राभा), केरेबो, बेंगलूरु ने 'वाक्यों के भावात्मक पक्ष' विषय पर व्याख्यान दिया।

दिनांक 17.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 12 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, उपनिदेशक (सेवा निवृत्त), हिन्दी शिक्षण योजना ने 'अंग्रेजी-हिंदी वाक्य रचना' और द्वितीय सत्र में श्री आर.डी. शुक्ल, उप निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, मुख्यालय, बेंगलूरु ने 'कार्यालयीन कार्य में प्रयुक्त टिप्पणी पर अभ्यास' करवाया।

केन्द्रीय रेशम अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, मैसूरु में दिनांक 8.09.2021 को एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन तकनीकी संवर्ग के कमर्चारियों के लिए किया गया जिसमें कुल 11 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला में संघ की राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन पर विस्तार से जानकारी देने के अलावा कमर्चारियों की कार्य प्रकृति के अनुसार उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों को सरल रूप में हिन्दी में निष्पादित करने की जानकारी दी गई | उन्हें फाइलों में लिखी जाने वाली छोटी-छोटी टिप्पणियों का अभ्यास भी कराया गया | साथ ही कर्मचारियों को हिन्दी में वाक्य गठन/संरचना के संबंध में भी बताया गया | कार्यशाला के प्रथम सत्र में डा. पंकज द्विवेदी, सहायक प्राध्यापक, भारतीय भाषा संस्थान ने व्याख्यान दिया जबकि द्वितीय सत्र में संस्थान के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने प्रशिक्षण प्रदान किया|

केंरेअप्रसं, मैसूरु में 17.12.2021 को भी एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन नव नियुक्त वैज्ञानिकों के लिए किया गया था जिसमें कुल 15 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला में सरकारी कामकाज हिन्दी में करने हेतु हिन्दी में वाक्य संरचना, सरल हिन्दी में प्रारूपण के अलावा संघ की राजभाषा नीति एवं विभिन्न राजभाषा प्रावधानों की जानकारी दी गई | वैज्ञानिकों को प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली तथा उनके हिन्दी पर्याय के बारे में भी विस्तार से बताया गया | साथ में उन्हें फाइलों में लिखी जाने वाली छोटी-छोटी टिप्पणियों का अभ्यास भी कराया गया | कार्यशाला के पूर्वाहन सत्र में श्री टेकचंद, पूर्व उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, बेंगलूरु ने व्याख्यान दिया जबकि द्वितीय सत्र में संस्थान के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया|

केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु में दिनांक 25.08.2021 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के प्रारम्भ में श्री विजय कुमार, सहायक निदेशक (राभा) ने उपस्थित प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दी कार्यशाला वह मंच है जहां आप अपनी समस्याओं पर खुल कर बात कर सकते हैं और इनका समाधान प्राप्त कर सकते हैं। संस्थान में हर संवर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला के आयोजन का यही उद्देश्य है। उनका विश्वास है कि ऐसे नियमित आयोजनों से हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में निरंतर प्रगति होगी। उन्होंने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे कार्यशाला में प्राप्त प्रशिक्षण को अपने व्यावहारिक कार्यों में प्रयोग में लाएँ।

इस कार्यशाला के प्रारम्भिक सत्र में श्री ईश्वर चन्द्र मिश्रा, पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने सरकारी कामकाज में अनुवाद की भूमिका पर विस्तार से चर्चा करने के पश्चात हिन्दी में कामकाज करने में होनेवाली व्यावहारिक कठिनाइयों व उनके समाधान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित करने में अनुवाद का अपना अलग महत्व है। साहित्य, विज्ञान या प्रौद्योगिकी की जानकारी में अनुवाद बहुत सहायक हैं और

हिन्दी कार्यशालाओं में पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों पर नियमित सत्र रखा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राजभाषा के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी अपनी जगह आवश्यक है, पर व्यावहारिक कार्यों में अनुवाद हमारे लिए सहायक व मार्गदर्शक का कार्य करता है। द्वितीय सत्र में श्री ललन कुमार चौबे, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2021-22 के सभी प्रमुख प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की। इस परिप्रेक्ष्य में केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए निर्धारित वार्षिक कार्य योजना से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। कार्यशाला के समापन सत्र में श्री विजय कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अनिवार्य प्रकृति के दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी करने और रजिस्टरों में द्विभाषी प्रविष्टि करने का अनुरोध किया। उन्होंने अपने-अपने निर्धारित कार्यों में हिन्दी प्रयोग की प्रमात्रा बढ़ाने पर विशेष रूप से बल दिया। उन्होंने कहा कि बोर्ड मुख्यालय द्वारा जारी वार्षिक कार्य योजना में निर्धारित लक्ष्यों को हमें ध्यान में रखना है। सभी प्रतिभागियों ने रुचिपूर्वक व्याख्यान का लाभ उठाया।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, बरहमपुर (प.बं.) में दिनांक 29.09.2021 को कार्यलायीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अनुप्रयोग विषय पर एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य पदधारियों को राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी एवं प्रावधानों के सम्यक जानकारी प्रदान करना तथा हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में और भी गति की दृष्टि से राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा विकसित ऑनलाइन हिन्दी शिक्षण, श्रुतलेखन, अनुवाद जैसे कतिपय उपकरणों आदि से अवगत कराने के साथ ही उनमें हिन्दी में करने के लिए प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करना था। इस अवसर पर श्रीमती मौसुमी घोष, हिन्दी प्राध्यापिका, केंद्रीय विद्यालय, बहरमपुर व्याख्याता के तौर पर उपस्थित थी। संस्थान के विभिन्न संवर्ग के कुल 13 पदधारीगण इस कार्यशाला में प्रशिक्षित किए गए।

कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के सहायक निदेशक [राभा], श्री आर.बी. चौधरी के स्वागत अभिभाषण से हुआ। तत्पश्चात, संस्थान के निदेशक डॉ. सी.एम. किशोर कुमार ने अपने संबोधन अभिभाषण में उपस्थित मुख्य अतिथि श्रीमती मौसुमी घोष, हिन्दी प्राध्यापिका का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उपस्थित अधिकारी व पदधारियों को अपना-अपना सभी सरकारी कार्य राजभाषा हिन्दी में निष्पादित करने की सलाह देते हुए यह विचार प्रकट किया कि फाइलों आदि में प्रचलित शब्दों तथा सरल और सुबोध वाक्यों का ही अधिक से अधिक प्रयोग किया जाए ताकि यह सहज, सुबोध होने के साथ ही सभी के समझ में आ सके। उनके द्वारा यह भी अपील किया गया कि सभी पदधारी इस ज्ञानवर्धक और रोचक हिन्दी कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाते हुए अपने दैनंदिन के सरकारी कामकाज अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में निष्पादित करने का हर संभव प्रयास करें ताकि संस्थान में हिंदी के कार्यों में गति आने के साथ ही साथ राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति तथा तत्संबंधी प्रावधानों का सम्यक अनुपालन इस संस्थान में सुनिश्चित हो सके ।

तदुपरांत, इस दौरान उपस्थित माननीया मुख्य अतिथि, श्रीमती मौसुमी घोष, हिन्दी प्राध्यापिका, केंद्रीय विद्यालय, बहरमपुर ने राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को और भी अधिक सुचारु बनाने और राजभाषा नीतियों के सुगम कार्यान्वयन हेतु विकसित विविध टूल्स के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की । साथ ही, उनके द्वारा इन उपकरणों के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य किस तरह सहजता पूर्वक किया जा सकता है, इस पर सविस्तार चर्चा करते हुए इसके व्यावहारिक पहलुओं से सभी पदधारियों को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सरकारी कार्यों में नित-प्रयोजनीय शब्दों और विभिन्न वाक्यों के सहज, सरल हिन्दी रूपांतरण और इसके प्रयोग संबंधी व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया ताकि सभी पदधारी अपने-अपने दैनिक सरकारी कामकाज के निपटान में इसका सफलता पूर्वक उपयोग करने में समर्थ हो सकें। सर्वशेष में सहायक निदेशक [राभा] के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई ।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केरेबो, नगड़ी, रांची में दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई जिसमें कुल 52 कार्मिकों ने भाग लिया। हिन्दी कार्यशाला में संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री के.के. बडोला ने सूचना प्रौद्योगिकी एवं यूनिकोड पर व्याख्यान एवं प्रशिक्षण दिया। उन्होंने वर्तमान समय में यूनिकोड की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए इसके व्यापक उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के युग में यूनिकोड का प्रयोग अत्यंत कारगर है क्योंकि यदि हम पुराने फॉण्ट में कोई भी सामग्री सोशल मीडिया/मेल पर प्रेषित करते हैं तो वह पठनीय नहीं हो पाती है जबकि यूनिकोड द्वारा भेजी गयी सामग्री पूरी तरह से पठनीय होती है। उन्होंने कम्प्यूटर पर यूनिकोड सक्रिय करने के सम्बन्ध में प्रशिक्षण दिया तथा कृति फॉण्ट में उपलब्ध सामग्री को यूनिकोड में परिवर्तित करने का अभ्यास भी करवाया।

संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने सभी प्रतिभागियों का पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ हिन्दी में काम करने का आह्वान किया। उन्होंने सभी से अपेक्षा की कि कार्यशाला में दिए गए प्रशिक्षण का लाभ उठाते हुए वे अपना समस्त कार्यालयीन कार्य हिन्दी में ही करना सुनिश्चित करेंगे। इस केन्द्र में दिनांक 28.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, केरेबो, बिलासपुर में दिनांक 22.09.2021 को डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़, वैज्ञानिक डी एवं प्रभारी की अध्यक्षता में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में श्रीमती रीना सिंह, प्राचार्य, महार्षि विद्या मंदिर, बिलासपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यशाला का आयोजन दो सत्रों में किया गया । प्रथम सत्र में पत्राचार के विभिन्न स्वरूप-औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र पर तथा द्वितीय सत्र में "सरकारी पत्राचार में प्रशासनिक शब्दावली का सही प्रयोग विषयों पर व्याख्यान दिए गए तथा अभ्यास कराया गया।

संगठन प्रभारी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी लक्ष्यों की पूर्ति हेतु एवं सरकारी कामकाज हिंदी में करने संबंधी कठिनाइयों को दूर करने में इस तरह की हिंदी कार्यशालाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कार्यशाला की मुख्य अतिथि श्रीमती रीना सिंह ने पत्राचार के विभिन्न स्वरूप, औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र, सरकारी पत्र लेखन विषयों पर अपना व्याख्यान दिया तथा उन्होंने बताया कि सरकारी पत्राचार की भाषा सरल एवं बोधगम्य होनी चाहिए। कार्यशाला के दूसरे सत्र में श्री पी. एस. लोधी ने सरकारी पत्राचार में प्रशासनिक शब्दावली का सही प्रयोग करने पर व्याख्यान देते हुए अभ्यास कराया तथा उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए प्रशासनिक शब्दावली के मोबाइल एप्स की जानकारी दी ताकि उसका प्रयोग करके आसानी से राजभाषा हिन्दी में सरकारी काम-काज किया जा सके। कार्यशाला में बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र एवं रेशम तकनीकी सेवा केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में मंच संचालन एवं आभार श्री फूल सिंह लोधी, कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने किया। दिनांक 13.12.2021 को भी कार्यशाला आयोजित की गई ।

क्षेत्रीय कार्यालय, केरेबो, नई दिल्ली में दिनांक 17.09.2021 को "भारतीय आर्य एवं द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) की अध्यक्षता में कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सोमपाल सिंह, सहायक निदेशक (भाषा), हिंदी शिक्षण योजना (मध्योत्तर), आर. के. पुरम, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया । कार्यशाला का शुभारंभ श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) के द्वारा उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्वागत संबोधन के साथ किया गया। तदुपरांत श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी) व नामित हिंदी

अधिकारी ने बताया कि नियमित कार्यशाला आयोजन द्वारा महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा परिचर्चा, विचार-विमर्श से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गति मिलती है एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को विषय पर नवीनतम एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त होती है।

डॉ. सोमपाल सिंह, सहायक निदेशक (भाषा) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित कर बताया कि भारतीय आर्य एवं द्रविड भाषाओं का इतिहास बहुत कुछ पूर्व-अवधारणा अथवा संकल्पना के अंतर्गत आता है।

उन्होंने बताया कि "भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है।" इस प्रकार हम चाहे किसी भी भाषा का प्रयोग करें, यदि अपनी मातृभाषा का ज्ञान नहीं रखते है तो किसी भी भाषा को सीखना कठिन होगा। चूँकि भाषा कभी नहीं बदलती मात्र इसकी लिपि बदलती है। उन्होंने बताया कि मातृभाषा का सीधा संपर्क भावनाओं से होता है एवं भावनाओं का सीधा संपर्क चिंतन/सोच से है। अतः विविध भाषाओं में व्यक्त संप्रेषण को सबसे पहले हम अपनी मातृभाषा में ही इसका भावनात्मक स्तर पर चिंतन कर लिपिबद्ध मात्र करते हुए भाषा का गठन करते है। इस प्रकार देखा जाए तो मातृभाषा आने से भारतीय परिवार की कोई भी भाषा वह चाहे आर्य हो अथवा द्रविड़, आपसे अछूता नहीं हो सकती है। अंत में श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) ने कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. सोमपाल सिंह, सहायक निदेशक (भाषा), हिंदी शिक्षण योजना (मध्योत्तर) एवं श्री शिव गोविन्द, सहायक निदेशक (निरी.) तथा उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न की गई। इस केन्द्र में दिनांक 30.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई।

मूगा एरी रेशमकीट बीज संगठन, गुवाहाटी सभाकक्ष में दिनांक 07.09.2021 को **मूगा एरी रेशमकीट बीज संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय एवं क्षेत्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी** द्वारा संयुक्त रूप से कोविड प्रोटोकॉल का ध्यान में रखते हुए एक दिवसीय पूर्णकालीन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राजभाषा विभाग तथा केन्द्रीय रेशम बोर्ड के द्वारा नियत मानदंड के आधार पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी का आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण प्रदान कर कार्यालयीन कार्य में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने पर प्रेरित करना तथा हिंदी भाषा का ज्ञान रखने वाले सरकारी कार्मिकों की हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करना है।

कार्यशाला का उद्घाटन, दीप प्रज्ज्वलन के द्वारा किया गया। तद्पश्चात डॉ. (श्रीमती) हृदया एच, वैज्ञानिक-बी, श्रीमती थो. लैमा देवी, कम्प्युटर प्रोग्रामर, श्रीमती हेमाथे सैकिया, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) एवं श्री गोपाल सुत्रधर, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा मंगलगीत प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्री बदरी यादव, उप निदेशक (पूर्वोत्तर) प्रभारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा भी है। इस आयोजन का उद्देश्य केवल आपको अपनी इस भाषा को सही व शुद्ध लिखने के लिए प्रेरित करना तथा सामान्य गलतियों की जानकारी देना है।

अभिवादन में श्री प्रभात बरपुजारी, वैज्ञानिक डी एवं प्रमुख ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यशाला में उपस्थित होने के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण स्थान है। आवश्यक यह है कि हमलोग भी राजभाषा विभाग के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम एवं केन्द्रीय कार्यालय के द्वारा समय समय पर दिए जानेवाले निर्देशों का अनुपालन निश्चित रूप से करें। उन्होंने सभी से कार्यालयीन कार्य में शत-प्रतिशत हिन्दी में टिप्पणी लिखने के लिए आह्वान किया तथा कार्यशाला में पूर्ण लाभ उठाने को कहा।

डॉ. (श्रीमती) लोपामुद्रा गुहा, वैज्ञानिक-बी एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने भाषा की सामान्य परिभाषा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी अपनी भाषा है और इसे शुद्ध मन से अपनाना हमारा नैतिक ही नहीं राष्ट्रीय दायित्व है। उन्होंने कहा कि हिन्दी आज विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली

भाषा है जिसके लिए हमें गौरव होना चाहिए। अतः, हमें तन-मन से अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करना चाहिए।

कार्यशाला के पहले सत्र में श्री बदरी यादव जी ने माइक्रोसॉफ्ट इंडिक इनपुट टूल को वेबसाइट के माध्यम से डाउनलोड करके हिन्दी के साथ-साथ अन्यान्य भाषाओं के टंकण के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है इस विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया। इसके पश्चात उन्होंने राजभाषा नियम, अधिनियम एवं सरकार की नीति के संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला और टैंडर, विज्ञापन जारी करने हेतु मुख्य बिन्दुओं पर रेखांकित किया। उन्होंने राजभाषा हिन्दी एवं सामान्य हिन्दी में अंतर भी स्पष्ट किया। दूसरे सत्र में हिन्दी मसौदा के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि फाइलों में लिखी जानेवाली हिन्दी टिप्पणी सरल हो ताकि इसे आसानी से समझा जा सके। इसके अतिरिक्त उन्होंने मानक हिन्दी वर्णमाला की जानकारी देते हुए उसके सही उच्चारण तथा हिन्दी वर्णमाला, लिंग एवं वचन आदि पर चर्चा किया।

अंत में डॉ. लोपामुद्रा गुहा ने आशा व्यक्त की कि उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी इस कार्यशाला से अवश्य लाभान्वित हुए होंगे तथा भविष्य में भाषा लेखन में होने वाली सामान्य त्रुटियों से बचेंगे एवं सभी को धन्यवाद दिया एवं कार्यशाला के आयोजन में सहयोग करने वाले अधिकारियों व सहकर्मियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया।

रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, कटक (ओडिशा) में दिनांक 14.09.2021 को वैज्ञानिक डी के कक्ष में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कार्यालय में उपस्थित सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री दीनबंधु सिंह, हिंदी अधिकारी एम.एस.एम.ई., भारत सरकार, कटक ने आमंत्रित अतिथि के रूप में योगदान किया। आमंत्रित अतिथि ने हिंदी वाक्य लिखते वक्त वाक्य में कर्ता, लिंग एवं क्रिया के सही स्थान पर प्रयोग के बारे में चर्चा किया। चर्चा के दौरान कर्मचारियों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर दिया। कार्यशाला के अंत में श्री एस.के. स्वैन, तकनीकी सहायक ने आमंत्रित अतिथि श्री दीनबंधु सिंह, हिंदी अधिकारी के प्रति आभार प्रकट करते हुए सभी कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। इसके बाद कार्यशाला समाप्त की गई। इस केन्द्र में दिनांक 30.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल (नैनीताल) द्वारा दिनांक 25.09.2021 को एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कोविड-19 के नियमों का पालन करते हुए किया गया। केन्द्र प्रभारी श्री ए.एस. वर्मा, वैज्ञानिक-डी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं संचालन श्री सत्येन्द्र प्रसाद टम्टा, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने किया। कार्यशाला में श्री आर.पी. वर्मा, उप-प्रधानाचार्य एवं प्रवक्ता हिन्दी, लीलावती पन्त राजकीय इण्टर कॉलेज, भीमताल को आमंत्रित किया गया। उन्होंने केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारियों को हिन्दी पत्र लेखन पद्धति, व्याकरण, वर्तनी एवं हिन्दी शब्दावली पर प्रकाश डाला और अभ्यास भी कराया, साथ ही हिन्दी में पत्र लिखते समय होने वाली मात्राओं में होने वाली छोटी-छोटी गलतियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता में दिनांक 01.09.2021 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में कुल । अधिकारी एवं 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। संयुक्त सचिव (तक) ने अपने स्वागत भाषण में सभी कर्मचारियों का स्वागत करते हुए सूचित किया कि वर्तमान में कोविड-19 महामारी के कारण कार्यशाला में व्याख्याता के रुप में अन्य कार्यालय के हिन्दी अधिकारी को आमंत्रित नहीं किया जा रहा। फिर भी राजभाषा के निर्देशानुसार कार्यशाला का आयोजन अनिवार्य हैं। अत: व्याख्याता के रूप में संयुक्त सचिव (तक) ही कार्यशाला में कक्षा लिए। हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन कार्यालय प्रमुख श्री गोपालकृष्ण सामन्त द्वारा किया गया, जिन्होंने अपने सम्बोधन में राजभाषा के नियम एवं धारायों से सभी को अवगत कराया। कार्यालय में हिन्दी में काम करते समय आने वाली कठिनाइयों को किस प्रकार दूर किया जाए, इस पर प्रकाश डाला एवं सुझाव दिया कि कार्य को आसान करने के लिए शब्दकोष की सहायता ली जाए। वाक्य रचना सरल हो। कॉम्प्लेक्स वाक्यों के प्रयोग से बचा जाए। प्रतिदिन दस बीस शब्द हिन्दी के लिखे जाए। तदुपरान्त श्री राममोहन प्रामाणिक, सहायक अधीक्षक (तक) ने प्रतिभागियों सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।

रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, मीरां साहिब, केरेबो, जम्मू में दिनांक 28.09.2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन वैज्ञानिक-डी श्री नंद सिंह गहलोत की अध्यक्षता में किया गया| श्री पवन कुमार शर्मा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया । उन्होंने राजभाषा कार्यन्वयन संबधित उपलब्धियां गिनायी व हिन्दी कार्यशाला के प्रयोजन तथा कार्यशाला के महत्व के बारे में जानकारी दी ।

अतिथि संकाय श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक ने हिंदी कार्यशाला में राजभाषा विभाग द्वारा कार्यालय में हिन्दी भाषा के बढ़ावा हेतु दिशा निर्देश व संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिये वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति व कार्यशाला में प्रशासनिक / तकनीकी पत्रों का रूपांतरण अंग्रेजी से हिंदी में कार्य करने के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। अंत में श्री पवन कुमार शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस केन्द्र में दिनांक 24.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई ।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, केरेबो, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 28.09.2021 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कोरोना वाइरस (कोविड-19) के प्रोटोकाल का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ. रजत मोहन, सेवानिवृत वैज्ञानिक, केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्य अतिथि वक्ता थे। कार्यशाला की अध्यक्षता कार्यालय प्रभारी डॉ. सुरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-डी ने की।

कार्यशाला का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित कर किया गया। मुख्य अतिथिः वक्ता ने अपने सम्बोधन में इस बात पर प्रकाश डाला कि हिन्दी ही क्यों देश की संपर्क भाषा के रूप में सबसे योग्य भाषा है। उन्होंने कहा कि देश के 90% लोग यदि हिन्दी समझते है तो अधिकतर लोग इसे लिख या बोल लेते है। जो लिख या बोल नहीं पाते, वे कम से कम समझते हैं। उन्होंने बताया कि देश की समस्त भाषायें संस्कृत गर्भित है; फलतः, वे आपस में बहनें हैं। हिन्दी संस्कृत से जनित है और पूरे विश्व में मात्र हिन्दी और संस्कृत ही वो भाषाएँ है जो संस्कृति और सभ्यता से जुड़ी हुई है क्योंकि हिन्दी देश के अधिकतर लोगों और क्षेत्रों में बोली और समझी जाती है, यह राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली एक मात्र भाषा है। साथ ही बताया कि हिन्दी को आगे बढ़ाने में अहिंदी भाषी साहित्यकारों का अभूतपूर्व योगदान रहा है । केंद्र के प्रभारी डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशालाओं के माध्यम से हम जो कुछ भी सीखते-समझते है उसका प्रयोग कार्यालयीन कार्यों में करना चाहिये ताकि समय-समय पर आ रही समस्याओं का निराकरण किया जा सके। उन्होंने बताया कि केंद्र के सभी कर्मचारी/अधिकारी कार्यालय कार्य में हिन्दी में सुचारु रूप से कर रहे है जो सराहनीय है । धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला सम्पन्न हुई । दिनांक 22.12.2021 को भी हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई ।

रेशमकीट बीज उत्पादन केन्द्र, केरेबो, जोरहाट द्वारा संयुक्त रूप से 17.12.2021 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला की अध्यक्षता, डा. एल पाचाउ, वैज्ञानिक-डी एवं प्रभारी अधिकारी रे..बी.उ.के., जोरहाट ने की। श्री गोजेन टाई, हिंदी अनुवादक, जोरहट ने कार्यशाला को अंजाम दिया। सबसे पहले, उन्होंने सभी कर्मचारियों को मोबाइल में हिंदी अनुवादक डाउनलोड करने का तरीका सिखाया। उन्होंने वॉयस ट्रांसलेटर का उपयोग कैसे किया जाए, वह भी व्यावहारिक रुप से सभी को दिखाया। दोपहर के सत्र में उन्होंने व्याकरण के विषय में विस्तार रूप से सिखाया और अंगेजी से हिन्दी अनुवाद का नियम भी बताया । उसके बाद, डॉ. एल. पाचाउ, वैज्ञानिक-डी एवं प्रभारी अधिकारी, रेबीउके, जोरहाट ने सभी अधिकारियों से आधिकारिक कार्यों में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान हिन्दी में देने का अनुरोध किया । अंत में श्रीमती पी. दत्त, वरिष्ठ क्षेत्र सहायक ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला संपन्न हुआ ।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, केन्दुझर (ओडिशा) में दिनांक 22.12.2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । केन्द्र के डॉ. सुब्रत सतपथी, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में बुबीप्रवप्रके, केन्दुझर तथा प्रक्षेत्र इकाई, पाल्लहडा के 09 कर्मचारियाँ ने भाग लिया। प्रारम्भ में अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी कर्मचारियों का स्वागत किया । तदुपरांत हिन्दी कार्यशाला

आयोजन करने के विशेष महत्व के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने कार्यशाला के जरिये राजभाषा हिन्दी को कैसे अच्छी तरह से समझा जाएँ तथा हमारी गलती को सुधार किया जाए, इसके ऊपर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया । तदुपरांत उन्होंने हिन्दी भाषा को कैसे सहज और सरल उपाय में व्यवहृत किया जा सके, बाद में हिन्दी भाषा में प्रयोग, वचन एवं लिंग के बारे में बताया । अंत में केन्द्र के श्री रमेश चन्द्र पृष्टि, सहा. अधीक्षक (प्रशा) ने सभी को केन्द्र की तरफ से धन्यवाद अर्पण करने के साथ-साथ कार्यशाला की समाप्ति की घोषणा की ।

कच्चा माल बैंक, केरेबो, चाईबासा में दिनांक 04.12.2021 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की जिसमें 11 सदस्यों ने भाग लिया ।

केन्द्रीय रेशम जनन द्रव्य संसाधन केन्द्र, केरेबो, होसूर में 31.12.2021 को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं उसके प्रावधानों की दृष्टि से तथा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने व राजभाषा संबंधी अधिनियम नियमों एवं आदेश के अनुपालन हेतु समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों / कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से स्वयं अभ्यास एवं पत्र लेखन के विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में कुल 05 वैज्ञानिक एवं 03 कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लिया। इस कार्यशाला में केन्द्र की डॉ. ऋत्विका सूर चौधरी, वैज्ञानिक-सी (हिन्दी प्रभारी) ने व्याख्यान दिया। कार्यशाला में केन्द्र के डॉ. बी.टी. श्रीनिवास, निदेशक और केरेजसेके, होसूर के वैज्ञानिक एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में सरल हिन्दी भाषा का उपयोग, टिप्पण-लेखन एवं स्वयं अभ्यास के प्रति जानकारी देते हुए सभी प्रतिभागियों से उक्त का अभ्यास करवाया गया। उद्घाटन सत्र का संचालन करते डॉ. ऋत्विका सूर चौधरी ने डॉ. बी.टी. श्रीनिवास एवं समस्त प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया।

केन्द्र के निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में उपस्थित समस्त अधिकारियों / कर्मचारियों को सलाह दी कि इस सत्र का भरपूर लाभ उठाएं और अपने दैनिक सरकारी कामकाजों में सरल व सहज हिंदी का प्रयोग करने का हर संभव प्रयास करें। हिन्दी हमारी अपनी भाषा है जिसे राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है और हमारी कोशिश रहनी चाहिए हम सभी अपने दैनिक कामकाज में इसका अधिकतम उपयोग करें। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रचार प्रसार में इस प्रकार की कार्यशाला अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। इस कार्यशाला में हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का निवारण ही हमारा मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने अपने संबोधन में यह भी कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा उसकी उपयोगिता व अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर बल दिया ।

केन्द्र की डॉ. ऋत्विका सूर चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है, अपना अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया। हिन्दी को सिर्फ सरकारी आदेश का पालन करते हुए व्यवहार में न लायें, अपितु एक सरल, सुगम एवं विश्व में दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा का सम्मान देते हुए अधिक से अधिक कार्यालय कार्य में गर्व से प्रयोग में लायें। यह भाषा हमे विभिन्नता में एकता के लिये प्रेरित करती है; अतः, हम सभी को इसके प्रति आभारी होना चाहिए।

डॉ. ऋत्विका सूर चौधरी ने केंद्र के निदेशक को धन्यवाद देते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को बहुत रोचक एवं सरल तरीके से राजभाषा का परिचय दिया जिसमें सरल हिन्दी भाषा का उपयोग, टिप्पण-लेखन एवं अभ्यास आदि शामिल थे। प्रतिभागियों ने कार्यशाला पर बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और बताया कि इस तरह की कार्यशालाएँ हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन में उनके लिए अधिक सहायक है ।

अन्त में, कार्यशाला के समापन समारोह के दौरान, केन्द्र के हिन्दी प्रभारी ने केन्द्र की ओर से निदेशक महोदय व समस्त प्रतिभागियों को सक्रियता से भाग लेने व हिंदी कार्यशाला को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया।

"आजादी का अमृत महोत्सव - साहित्य, संस्कृति, संसद एवं मीडिया"

महेश साव

"आजादी" शब्द की परिकल्पना सन् 1947 के पहले तक एक भावनात्मक अभिव्यक्ति कही जा सकती है । किंतु सन् 1947 के बाद के इस दौर में 75 साल बाद भारत देश सभी क्षेत्र में अपनी आत्मनिर्भरता का परचम लहराने को उतावला है । अब चाहे वह साहित्य के क्षेत्र में हो या संस्कृति, संसद एवं मीडिया के क्षेत्र में ही क्यों ना हो ? इसकी पुष्टि बौद्धिक वर्ग के लोग जो आजादी के महत्व को समझने की पुरजोर कोशिश अथवा इसे सशक्त बनाने की ओर अग्रसर रहें है, वे ही स्पष्ट रूप से इसे व्याख्यित अथवा प्रतिफलित करने में समर्थ हो सकेंगे । मेरा मानना है कि दुनिया भर की नवलेखन, नवसृजन अथवा नव संस्कृति को इस दिशा में समाहित करने मात्र महज से यह सिर्फ एक समालोचना का परिदृश्य तैयार होगा अथवा विषय बन कर सामने आएगी, जिसका स्पष्ट और सफल उदाहरण हम बाबा बैधनाथ मिश्र (नागार्जुन) की कविता पंचवर्षीय योजना को परिलक्षित करते हुए जेल के उस पुरातन सलाखों के बीच लिखी जा चुकी थी, जिसे आज हम नवीन सलाखों के बीच आजाद मनोवृति का ख्याल रखने वाले कुत्सित प्रवृति की मानसिकता में यथा-विद्यमान देख पाते है:

पंचवर्षीय बनी यह योजना
एक दो नहीं तीन,
कागज के फुलों ने ले ली
सबकी खुशबू छीन,
फटे बांध से बालू बोले
हम भी है स्वाधीन ॥

संसद एवं मीडिया का उल्लेख इन्हीं पारिस्थितिक प्रसंगों में किया गया है क्योंकि किसी भी आजाद मनोवृति वाले देश में संसद एवं मीडिया इन्हीं परिदृश्यों को लक्षित करने के आधार स्तम्भ को लेकर संचालित की गई महज एक नवनिर्मित भवन (सेंट्रल विसटा प्रोजेक्ट के अंतर्गत नए संसद का निर्माण) हो सकती है, जिसमें हम आप तरह के आजाद अथवा स्वाधीन ख्यालात के लोग "आजादी के अमृत महोत्सव (साल 75) को फलीभूत कर रहे है अन्यथा सुदामा पांडे "धुमिल" जी ने तो अपनी साहित्य लेखनी में स्पष्ट ही उल्लेख किया है कि:-

क्या आजादी केवल तीन रंगो का नाम है,
जिसे एक पहिया ढ़ोता है या
इससे भी बेहतर कुछ है ।

"आजादी" शब्द अथवा स्वाधीनता की अभिव्यक्ति को परिभाषित करने का अर्थ सही माएने में सन् 1947 की यादों को तरोताजा करती है जहाँ कि गुलामी की जंजीरों में स्वतंत्र मनोवृति, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, स्वतंत्र लेखनी एवं स्वतंत्र संस्कृति कैद रही थी । तभी इस समावेशी तत्वों को समाहित करते हुए भारत सरकार द्वारा (साल 75) में "आजादी का अमृत महोत्सव" जैसे कार्यक्रम को पृष्ठभूमि में लाने का सफल एवं नियोजित प्रयास करने का अवसर प्राप्त हुआ । चूंकि इसका मूल उद्देश्य कुत्सित मनोवृति, संकुचित संस्कृति एवं शोषित अभिव्यक्ति को देशवासियों के मध्यस्थ फलीभूत अथवा पनप रही थी, उसे आजाद एवं स्वतंत्र विचारधारा में परिणत अथवा इजात करने की आवश्यकता की मांगी की गई। प्रासंगिकताके परिणाम को मद्देनजर रखते हुए संसद के वर्चस्व में पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत लिखित कागज के कैन्वास को उछालने का प्रयास किया गया तथा इसी से नवनिर्मित/सृजित पन्नों को मीडिया के सिपहसालारों द्वारा इसे उजागर करने मात्र से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी है । ध्यातव्य है कि उपरोक्त सभी का कारण देश साल 2020 में आपदा ग्रस्त (कोरोना महामारी) से जीवन को उनमुक्त अभिव्यक्ति को आजादी का अमृत सोपान कराने की आवश्यकता फलीभूत होकर सामने आई एवं नवीन संस्कृतियों को तरजीह देने का प्रयास किया गया ।

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में 26 जनवरी, 1950 को दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान को लागू किया गया । भारत को इसलिए दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है, क्योंकि यहाँ 29 भाषाएं और करीब 1652 बोलियाँ बोली जाती है । इतनी बड़ी जातीय व्यवस्था किसी दूसरे देश में देखने को नहीं मिलती । किसी भी दूसरे देश में

इतनी जनसंख्या नहीं है । संभवतः यही कारण है कि आज के इस 75 साल में हम भारत के लोग संप्रभुता संपन्न तरीके से आजादी के अमृत महोत्सव का आनंद उठा रहे है । भारत देश एक संपूर्ण प्रभुता संपन्न धर्मनिर्पेक्ष समाजवादी लोकतांत्रिक गणराज्य है, शायद इसलिए भारत के देशवासियों को कहीं भी कुछ भी बोलने की आजाद मनोवृत्ति (मानवाधिकार के अवमूल्यों को ध्यान में रखते हुए) प्रदान की गई है । इसका मतलब है कि व्यक्तिक गरिमा को ठेस ना पहुँच सके । परंतु कोरोना महामारी की स्थिति में अस्पृश्यता और छुआ-छूत की मानसिकता प्रत्येक व्यक्ति विशेष में पनप रही है और इसका मूलभूत परिणाम भारत देश के संपूर्ण जनता में अभिलक्षित होते दिख रहा है, जिससे व्यक्ति विशेष के बीच प्रेम, सदभावना एवं सौहार्द आदि अक्षुण्ण होता हुआ दिख रहा है ।

"प्रेम को प्रेम के नजरीए से देखना आवश्यक है । जबकि घृणा कुत्सित मनोवृत्ति का परिचायक है ।"

धर्म कोई जंगल नहीं होता – बौद्धिक वर्ग के लोग यदि धर्म को जंगल समझने लगे तो जंगल को शमशान समझ वहीं तप तपस्या कर लेंगे । धर्म एक अवस्था है जैसे प्रत्येक वस्तु की अपनी एक अवस्था होती है ठीक वैसे ही धर्म की भी अपनी अवस्था होती है । वह यदि पुरोहित के हाथ लगता है तो अलग अवस्था में यदि राजनीतिज्ञ के हाथ लगता है तो अलग अवस्था में स्त्रियों और दलितों के हाथ में भी यह अपनी विविध अवस्था में रहती है । जिसे बौद्धिक वर्ग के लोग उतपीड़न की अवस्था से ही जानते है । जिस तरह भाषा परिवर्तन की दिशाएं होती है ठीक उसी तरह धर्म की अवस्था परिवर्तन के भी माएने होते है और यही हम भारत के विविध संस्कृतियों में परिलक्षित पाते है, नहीं भारत जैसे धर्मनिर्पेक्ष देश में धर्म को व्याख्यायित करने का कारण अथवा प्रश्न ही नहीं उठाया जाता ? जिसे कुछ बौद्धिक वर्ग मजहब भी कहते है तथा धर्म का सीधा समन्वय संस्कृतिक बाहुल्यता से है एवं प्रत्येक कर्म का अपना धर्म होता है ।

आजाद मनोवृति के तर्ज पर नयी संस्कृति-कला एवं नृत्य संस्कृति को उत्तरोत्तर स्थान देने का प्रबल प्रयास किया गया है । जिसमें विविध संस्कृतियों को आजाद मनोवृत्तियों के समावेश से कला संस्कृति नाम अभिहित किया जाना समीचीन प्रतित होता है ।

कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी)
क्षेत्रीय कार्यालय, केरेबो, नई दिल्ली

*****

चुटकुले

* टीचर- इतने दिन कहां थे, स्कूल क्यों नहीं आए?
  गोलू- बर्ड फ्लू हो गया था मैम।
  टीचर- पर ये तो पक्षियों को होता है इंसानों को नहीं।
  गोलू- इंसान समझा ही कहां आपने...रोज तो मुर्गा बना देती हो..!!
* ये वो दौर है जनाब
  जहां इंसान गिर जाये तो
  हँसी निकल जाती है
  और मोबाईल गिर जाये तो
  जान निकल जाती है
* दो लड़कियां बस में सीट के लिए लड़ रही थीं
  कंडक्टर- अरे क्यों लड़ रही हो,
  जो उम्र में सबसे बड़ी है वो बैठ जाए
  फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों खड़ी ही रहीं
* चार चींटियां रास्ते में बैठकर बातें कर रही थीं,तभी वहां से एक हाथी गुजरने लगा।उसे देख कर एक चींटी बोली- ओ हाथी मुझसे कुश्ती लड़ेगा?इस पर बाकी चींटियां बोलीं- रहने दे बहन, बेचारा अकेला है..

पुस्तक समीक्षा

तेरी रूह से गुजरते हुए : सूफियाना इश्क की कविताएँ

-दिविक रमेश

'तेरी रूह से गुजरते हुए' संग्रह में रेखांकन के साथ 22 कविताएँ हैं जो कृष्णमय मीरा वाले आपा मेटने वाले प्रेम में खुद भी सराबोर हैं और अपने पाठकों को भी वैसे ही अखंड और उदात्त प्रेम का मार्गी बनाने को उत्सुक है। हिंदी में प्रेम कविताओं का अच्छा-खासा लिखना होता रहा है। कुछ न कुछ प्रेम तो हर कवि ने रचा है। शमशेर बहादुर सिंह, कनुप्रिया वाले धर्मवीर भारती, अशोक वाजपेयी और इधर के कवियों में विशेष रूप से रंजीता सिंह और राकेश रेणु सहज ही याद आते हैं। रंजीता सिंह के तो कविता-संग्रह का ही नाम है –'प्रेम में पड़े रहना'। 'रहना' क्रियापद पर ध्यान दीजिए। प्रेम का आदि और अंत यह 'रहना' ही है। सरोज राम मिश्रा के यहाँ मुझे सुफियाना इश्क की भी अनुगूँजे दिखी हैं।शब्दों और शिल्पगत अभिव्यक्ति के स्तर पर भी। संग्रह का शीर्षक भी इस बात की पुष्टि करता है। जिस्म रहे, रहे लेकिन रूह हर कदम बाजीमार ले जाए। जिस्म बस अभिव्यक्ति का माध्यम बन कर रह जाए। एक कालातीत सफर में हमसफर बनें निरंतर प्रेमी मात्र। बिना किसी तीसरे की रत्ती भर गुंजाइश के।यह वह प्रेम है जो विकल्पहीन होता है और अपनी शुरुआत भी होता है और हर चुनौती का समाधान भी। पंक्तियाँ देखिए - "इश्क की परिधि में...कहा तेरी रूह ने आगे बढ़कर थामते हुए मेरे बदन का हाथ कई साँझ उदास रही..ती बिन. कई रातें बीतीं दंश भरी..तेरे बिन चलें प्रिये..! अब चलें संग ..! चल दी मेरी रूह तेरी रूह का पकड़ हाथ..! जिस पर चले सदियों से हम ..चलते रहेंगे..समय से परे..मैं और तुम! मेरे साथी! मेरे हमसफर!" (**मेरे साथी मेरे हमसफर**) यह वह प्रेम है जो वाचाल नहीं है, अपना प्रचार नहीं करता, बल्कि मौन होकर पूरी तरह अभिव्यक्त होता रहता है- "खामोश रूहें तेरी मेरी बाहों में मौन पड़ीं..।" (**उतरता सूरज**) अथवा और उसकी सुर्खी बाहों के घेरे से/ रंगीन हुई मेरी अंधेरी गुफा और उसकी साँसों का घूँट/ जब मेरी साँसों ने पिया..एक अलौकिक चेतना का जन्म हुआ (**सूरज बना दरवेश**)इन कविताओं में आए प्रेम की अभिव्यक्तिगत क्षमता इस विशेष में भी है कि आध्यात्मिकता बिना भरपूर मांसलता के आनंद को तिरोहित किए हुए हुई है। एक कविता है '**नींद को जगह कहाँ**' जिसकी पंक्तियाँ हैं- तेरी बाँहों की परिधि.. मेरी मदहोशी तेरे होंठों का स्पर्श / मेरी खामोशी/मेरी मर्मरी देह तेरे इश्क के आँच में/ धीमे-धीमे/ पिघल रही..मैं/ तुझमें ही घुल रही..नींद को जगह कहाँ?

भिखारीदास की पंक्तियाँ याद हो आई हैं: "आगे के कवि रीझिहें तो कविताई, न तौ राधिका कन्हाई सुमरिन को बहानो हैं।" सरोज राम मिश्रा की कविताओं की सही पकड़ के लिए उनके गद्यात्मक विचार और वक्तव्य भी जान लेना चाहिए जो संग्रह में ही मौजूद हैं और संक्षेप में निम्न प्रकार से हैं- कविता एक गहरा सागर है प्रेम का, आग का, जुनून का, सपनों का, वेदना का, खुद से खुद के मुलाकात का।कलम मेरी कुदाल है और प्रेम मेरी धमनियों में फिरती स्याही परिवेश बदल रहा है, लोगों के मिजाज बदल रहे हैं, रिश्ते के रंग-रूप की तासीर बदली है। कविता ने सबकुछ आत्मसात किया है। हर रचना, रचनाकार के विचारों, उसकी चेतना संघर्ष का संसार होता है। मेरे शब्द कृष्ण का रंग ले मेरे रेशे-रेसे में समा गए। कैसा प्रेम है मेरा? तुम्हारा पल भर का वियोग सह नहीं पाती मैं! मैं ही तुम हूँ, तुम ही मैं हूँ। मैं तुम्हारी राधा नहीं, मीरा नहीं पर मैं भी तुम्हारे प्रेम सागर में डूबती हुई एक बूँद हूँ। देखा जा सकता है इस सोच या दृष्टि में प्रेमी कृष्ण के साथ दार्शनिक कृष्ण भी उपस्थित हैं।अर्थात कृष्ण अपने सम्पूर्ण रूप में है। श्रृंगार में ऐसा कि जिसका वियोग एक पल को भी न सहा जाए और दार्शनिक ऐसा कि समझ आए कि सब कुछ है ही कृष्णमय-"मैं ही तुम हूँ, तुम ही मैं हूँ।" कविता 'मैं तुम्हारी कनुप्रिया' का एक अंश देखिए- "बनी राधा अब-कभी कृष्ण की माया कभी कृष्ण की शक्ति / कभी कृष्ण की भक्ति/ कभी कनु को कंठ लगाकर/आंकठ में डूबती हुई कनुप्रिया!मीरा का अशर्त प्रेम याद आता है – जो तुम तोड़ो पिया, मैं नहीं तोड़ूँ । एक ऐसा प्रेम जहाँ प्रेम नहीं तो शेष कुछ भी नहीं (**शेष क्या रहा?**) । सरोज राम मिश्रा के यहाँ हर हाल प्रेम ही रेखांकित होता चलता है। यशोधरा भी उन्हें बुद्ध बनी

नजर आती है – "बन गई आज मैं-शक्तिलोक माया यशोधरा / मैंने थिरकते हुए छोड़ा महल / बन गई अपने प्रेम में/ मैं बुद्ध! कविताओं के कुछ बेहतरीन अंश देखिए-उथले आसमाँ से'/ न जाने कौन सी फरियाद सब्ज थी किसी कोने दिल में मेरे जो तुम अचानक आ गए / मेरे सपनों की बन हकीकत सामने मेरे। (**बेताशीर इश्क**) भीनी-भीनी अब हवा चली / तेरी महक/ जरे-जरे में बसी..ले एक कतरा खुशबू का / अपने बदन पर में ज्यों-ज्यों मली (**उतरता सूरज**) अंत की जाते-जाते यह भी बताना चाहूँगा कि कवि के पास, अभिव्यक्ति कौशल के स्तर पर, उपमानों और बिम्बधर्मी शब्दावली आदि के रूप में सशक्त संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए श्वान साँसे, रूही पुकार आदि। शमशेर की कलात्मकता को याद करते और यह भी याद करते हुए कि स्वयं सरोज राम मिश्रा में चित्रकला का सृजन और प्रेम मौजूद है। बिम्ब के आनंद के लिए निम्न अंश देखिए–एक गाढ़ी सोई शाम/ आकाश के जामे में काला/आसमानी स्लेटी रंग/ अलग-अलग फैला पड़ा था मैंने तुरपाई कर शामियाने को सिला.. टाँके कुछ सफेद झिलमिलाते फूल.. (**मुझे मेरी तलाश है**) दूर रेत के टीले पर/ हर रोज / बैठ मैं कातती /अपनी उंगलियों पर / उतरते सूरज की स्याह रौशनी से / खुशबू जड़े ख्वाब .. (**सूरज बना दरवेश**) पटपटाते छोटे-बड़े ओले / आ पहुँचे धरा के आँचल में / मैं ठगी-सी खड़ी हूँ अंजुरी फैलाए आकाश के सीने से बिखरती सफेद बारिश में! (**सफेद बारिश**) समर्पित भाव की कविताओं की रचयिता कवि सरोज राम मिश्रा को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

समीक्षित पुस्तक: तेरी रूह से गुजरते हुए: कवयित्री: सरोज राम मिश्रा

एल-1202, ग्रेंड अजनारा हेरिटेज, सेक्टर-74, नोएडा-201301

आपके पत्र

आपके संस्थान की गृह-पत्रिका की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित पठनीय सामग्री अत्यंत रोचक, तात्कालिक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की आत्मनिर्भरता, भारतीय समाज में महिलाओं पर अत्याचार : एक समीक्षात्मक अवलोकन, राजभाषा विमर्श, बदलते गाँव, आंसुओं की आवाज, सोचो वह दिन कैसा होगा, हमें भी कुछ कहना है, जीवन का सत्य आदि लेख एवं कविताएं अत्यंत रुचिकर है। जहां एक ओर पत्रिका में रेशम अनुसंधान एवं विकास संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध है वहीं दूसरी ओर राजभाषा कार्यान्वयन एवं अन्य गतिविधियों पर प्रकाशित सारगर्भित लेखों से संस्थान की विशिष्ट कार्य प्रतिबद्धता भी प्रदर्शित होती है। पत्रिका में समाहित संदेश, चित्रदीर्घा में तस्वीरें, लेख, कविताएँ एवं इनका स्तरीय प्रकाशन अत्यंत शोभनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका का समग्र प्रस्तुतीकरण, पृष्ठों एवं मुद्रण की गुणवत्ता और साज-सज्जा भी उत्कृष्ट है। आशा है उक्त पत्रिका हमारे संस्थापन में भी वैज्ञानिक/तकनीकी ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ राजभाषा प्रचार-प्रसार में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी। भविष्य में भी रेशम भारती" के ऐसे उत्कृष्ट संस्करणों की आशा के साथ इसके सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल के सभी सदस्यों को कासडिक (पूर्ववर्ती डेयर) परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

- वेंकटेश कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक-ई, हिंदी कक्ष, युद्धक विमान प्रणालियाँ विकास एवं एकीकरण केंद्र, सी.वी. रमन नगर, बेंगलूरु-56009·

रेशम भारती 'जून 2020 में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्द्धक रोचक और पठनीय हैं। राजभाषा हिंदी पर केन्द्रित संपादकीय प्रेरक है। रेशम विषयक सभी आलेख स्तरीय एवम् जानकारी देने वाले हैं। कहानियाँ रोचक हैं एवं कविताएं मार्मिक हैं। पत्रिका और पाठन सामाग्री की अपेक्षा है। पत्रिका के नियमित प्रकाशन हेतु प्रयास जरूरी है। मेरी शुभकामना है कि पत्रिका के प्रकाशन में निरंतर निखार आता रहे।

- विष्णु वर्मा, ग्राम – ककोली, पोस्ट- ककोली-224195, जिला- अयोध्या,उत्तर प्रदेश

पत्रिका में आपने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। कार्यालय में हो रही राजभाषा संबंधी गतिविधियों पर भी पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है। संपादन समिति के प्रयासों के लिए बधाईयां आशा है कि आपकी यह पत्रिका इसी प्रकार प्रगति करती रहे। भविष्य में भी इसी प्रकार अपने प्रबुद्ध प्रकाशनों से हमें अनुग्रहित करते रहें।

- एस. के. जे. अब्दुल अज़ीज़, वरि. प्रशासन अधिकारी, द्रव नोदन प्रणाली केंद्र, बेंगलूरु - 560008.